सब अभिमानी। ब्रह्म में अपने विराजें विंध्याचल और ब्रह्मानी ॥ बसें नासिका में नवदुर्गे नगर कोट लाटां वाली। नयनादेवी नयनमें वसें हँसें देदे ताली॥१॥ मुखमें बसें मंगलादेवी सब कारज करदें मंगल। होठ में हेमावती रहें क्षण में काटिदेवें कलिमल ॥ जिह्वा में जान्हवी और यमुना सरस्वती सबसे निर्मल। गले में गौरी और गायत्री का जप नाम टल ॥ कंठमें बसें कालिकादेवी कंकाली और महाकाली। यना देवी नयन में बसें हँसें देदे ताली ॥ २ ॥ कान में मला और कात्यायिनी क्रिया रूप अद्भुत माया। दोनों जा में बसें भवानी बड़ा सुख दिखलाया ॥ उर में बसें उमा ानी उग्रतेज उनका छाया। कहांलों वर्णों लखी नहीं ती है अपनी काया ॥ बुद्धि में बसे विधाता माता बड़ी द्धि देने वाली। नयना देवी नयन में बसें हँसें दे दे ताली ॥ रोम रोममें रमी रम्भा और नाभि कमलमें निरवानी। देवीसिंह इसे कोई पहिचाने चातुर ज्ञानी ॥ श्वास २ में बोले ध्यान धरें पूरे ध्यानी। बनारसी यह कहें भगवती क्ती मनमानी ॥ मेवा और मिष्टान्न हार फूलों की नित ी डाली। नयनादेवी नयन में बसें हंसें देदे ताली ॥४॥ र्म से परे वेद में लिखा है सुन सन्यासी का धर्म। ई जाने पण्डित के सन्यासी का कौन है कर्म ॥ तो बनै नहीं और त्याग करें तो क्या त्यागें। ें आवै जागें तो सोवत जागें ॥ युद्ध करें

नहीं मिले किसी को जिनका धर्म । क्या कोई जाने पण्डित के सन्यासी का कौन है कर्म ॥ १ ॥ मौन रहैं पर बोलें सबसे बरत रहैं और सब खावें । आसन दृढ है वाट चलें जित चाहैं वह उतही जावें ॥ पढे नहीं एको अक्षर और वेद शास्त्र निशि दिन गावें । आंख मूंद देखें सबको पर आप दृष्टि में नहिं आवें ॥ वह क्या देखेंगे उनको जिनकी दृष्टि में लगा है चर्म । क्या कोई जाने पण्डित के सन्यासी का क्या है कर्म ॥ २ ॥ योग विषे वह भोग करें और भोग विषे साधें वह योग । शोक विषे वह हर्ष करें और रोग विषे रहैं सदा निरोग ॥ वियोग में संयोग करें संयोग विषे रहैं बिना वियोग । लोक विषे परलोक सुधारें इसको समझें ज्ञानी लोग ॥ जिनकी माया से सृष्टी में व्याप रहा है सबको भर्म । क्या कोई जाने पण्डित के सन्यासी का कौन है कर्म ॥३॥ देहविषे वह रहैं विदेही मायामें रहैं निर्माया । देवीसिंह ये कहैं कि उन का पार किसी ने नाहिं पाया ॥ चारवेद षट शास्त्र अठारों पुराण ने योंही गाया । सब धर्मसे बडा धर्म सन्यास मेरे मनमें भाया ॥ वनारसी तीनों गुण से हैं रहित न समझे धर्म अधर्म । क्या कोई जाने पण्डित के सन्यासी का कौन है कर्म ॥ ४ ॥

मन मुरशद से मिलके अब तू चित्त को अपने चेला कर । दुई दूरकर हमेशा निर्भय पद में खेला कर ॥ देखतो अपने आपको तू है कौन कहां से आया है । किसने पैदा किया और किसने तुझे बनाया है ॥ जो तू कहै हूं बाप से पैदा माय ने मुझको जाया है । यह तो गलत है अरे तू आपी में आप समाया है ॥ दुविधा को कर अलग और सब दिल का दूर

झमेला कर। दुई दूरकर हमेशा निर्भय पद में खेला कर ॥ १ ॥ जबतक है अज्ञान तभी तक कुटुम्ब कबीला भाई है। ज्ञान हुआ तो आतमा आप में आप समाई है ॥ कोई बना ब्राह्मण क्षत्री कोई वैश्य शूद्र कोई नाई है। हमने देखा तो सब के बीच में कुंवर कन्हाई है ॥ समदर्शी हो विचर पडे जो दुख सुख तन पर झेलाकर। दुई दूरकर हमेशा निर्भय पद में खेला कर ॥ २ ॥ तू उसको पहिचान तेरे इस शरीरमें बसताहै जो। किस गफलत में पडा औ कौन नींद भर रहा है सो ॥ खोलके अपनी आंख देख वह एक है उसको समुझ न दो। कौन तेरा और तू किसका है इसे तुम समझो तो ॥ आतम में परमातम को अब देखके दर्शन मेला कर। दुई दूरकर हमेशा निर्भय पद में खेलाकर ॥ ३ ॥ एक ब्रह्म और द्वितियो नास्ति यही वेद की बानी है। इसको समझे वही नर जो पूरा विज्ञानी है ॥ जैसे जल की तरंग फिर जल ही के बीच समानी है। कहैं देवीसिंह बात यह बनारसी ने जानी है ॥ छोड तुर्रे कलंगी का गाना निर्गुण के डंड पेलाकर। दुई दूरकर हमेशा निर्भय पद में खेलाकर ॥ ४ ॥

❀ होली संत मार्गी निर्गुण—बहेर लंगडी ❀

संत खेलते होली जिसमें इज्जत हुरमत लाज रहे। गुणीजनों के अगाडी अनहद बाजे बाज रहे ॥ ज्ञान गुलाल के बादल छाये प्रेम रंग नित वर्षावें। ब्रह्मवादसों लडें और भर्म धूलको उड्डावें ॥ धीरजका ढफ बाजे संग में नाम नारायणका गावें। क्रोध कुमकुमा मारके काम शत्रु को हट्टावें ॥ दयाकी दौलत देते सबको साथ में सभी समाज रहे। गुणी जनों के अगाडी

अनहद बाजे बाज रहे ॥ १ ॥ अमर अबीर को साधु लगाये मुक्त रूप पहिने माला । भस्मके भूषण झलकते तनपर मन में उजियाला ॥ मंत्र मिठाई संत पावते बहुत खूब सबसे आला । अमृत रसको पियें और खोल देंइ घट का ताला । नेह नाच को देखें हरिजन सत्य साजको साज रहे । गुणी जनों के अगाडी अनहद बाजे बाज रहे ॥२॥ लौकी लकडी लूटले आये आतम की अगनीकरते । हरहर होली जगावें वही नहिं जनमें नहिंमरते। विज्ञान की गाली देते हैं संत किसीसे नहिं डरते । कष्टके कपडे पहिन के काया को निर्मल करते । शील सितार सुनावें साधू नाम नकारे बाज रहे । गुणी जनों के अगाडी अनहद बाजे बाज रहे ॥३॥ रामनामका शोर चलावें परस्वारथकी पिचकारी । जिसके मारें उसी के मुख पर लगती है प्यारी ॥ मिलें गले गोविन्द से चलके जाप जपें गिरिवर धारी । भाव भोग को करें हैं वही यती वही ब्रह्मचारी ॥ शुद्ध सिंहासन पर चढ बैठे तीनलोक में राज रहे । गुणी जनों के अगाडी अनहद बाजे बाज रहे ॥४॥ तीरथकी फेरी फिरते हैं सुमत समग्री लेजाते । पूजें होली गुणी जन ब्रह्मज्ञान में मदमाते ॥ देवीसिंह यों कहैं कि ऐसी होली जो कोई गाते । भवसागरके पार हो परमधाम पदवी पाते ॥ बनारसी ने हरिको पाया किसीके नहिं मुहताज रहे । गुणी जनों के अगाडी अनहद बाजे बाज रहे ॥ ५ ॥

❋ रहस मंडल निर्गुण—बेहर लंगडी ❋

इस तनमें आत्माकृष्ण है और गोपी ग्वालों का दल । सुनो कानदे बनाहै तन में मेरे रहसमंडल ॥ विश्वकर्मा ने आज्ञापाके शीश महल तैयार किया । अनहद बाजों

का उसमें संपूरण विस्तार किया ॥ चारों खम्मे लगाये उस में ऐसा सुन्दर कार किया । खुशी हुये हम तो अपने रहस का वहीं विचार किया ॥ सबको साथले आया मैं दिखलाया उन्हें भवन उज्जल । सुनो कानदे बना है तनमें मेरे रहस मंडल ॥ १ ॥ मन ऊधवजी मित्र हमारे सदासे हैं आज्ञा कारी । बुद्धि राधिका सो मेरे प्राणोंको है अति प्यारी । नेत्र करण मुख दन्त कण्ठ सब सखा हमारे हितकारी । लगन है ल-लिता बहुत सुन्दर शोभाहै सबसे न्यारी ॥ बलहै सो बल-भद्र हमारे भ्राता जिनका अटूटहैबल । सुनो कानदे बनाहै तनमें मेरे रहसमंडल ॥ २ ॥ हजार इकीस छःसै श्वासा सो सबसखियां संग आईं । वोतो समझीं हमींथे कृष्ण हमारे हैं साईं । गलसेमेरे लपट झपट क्याक्याही तान सुन्दर गाईं । बजाई बंशी जो मैंने अनहद तो सब बिलमाईं ॥ प्रेम में मगन भईं ब्रजबनिता कामने कीया बहुत बेकल । सुनो कानदे बनाहै तनमें मेरे रहसमंडल ॥ ६ ॥ नौ नारीथीं पतिव्रता सोभी सब आईं पासमेरे । रोम रोमको सखासमझो या स-मझो दासमेरे ॥ मेरी लीला देखदेख नहीं होते मित्र उदास मेरे । वर्णन करते हैं गुणको जगतमें वेदव्यास मेरे ॥ मैंतो हूं आत्माकृष्ण यह शरीर मेरा है मंडल । सुनो कानदे बना है तनमें मेरे रहस मंडल ॥ ४ ॥ आये वहां गोपिका बनके ज्ञानरू-पधर गोपेश्वर । हमने उनको लखा ये गोपी नहीं है शिवशं-कर ॥ पूजन करके पास बिठाया रहस दिखाया अतिसुन्दर । कहांलग बरणनकरूं इस काया में है चराअचर । बनारसी सच्चिदानन्द चैतन्य रूप निर्गुण निर्मल । सुनो कान दे बना है तन में मेरे रहस मंडल ॥ ५ ॥

पूरे जौहरी संत परखते मनमें मणि और लाल रतन। हित का हीरा खरीदें जिसका नहीं कुछ मोल वजन॥ ब्रह्म बजार लगाया घटमें कृपा कमर बांधी कसके। सांचे जौहरी साधु संत गुरु सबजा साधैं हँस हँसके॥ ज्ञानकी गठरी लगी पेट में जरा नहीं नीचे खसके। करते सौदा सदा वो दया दुकानों पर बस के॥ लगनकी लडियां लटकें जिसमें मुक्त रूप मोती लटकन। हित का हीरा खरीदें जिसका कुछ नहीं मोल वजन॥ १॥ चतुराई की चुन्नी ले आपसमें सबको दिखलाते। मेलका मूंगा खरीदें हरिभक्तों से मिलजाते॥ दिन पर दिन हो मोल सवाया कभी नहीं घाटा खाते। सांचे जौहरी के आगे सभी जवाहिर शर्माते॥ तप करने का लिया तामडा पास में रक्खा करके यतन। हित का हीरा खरीदें जिसका नहीं कुछ मोल वजन॥ २॥ यश करने का जामा पहना घर से निकल बाहर आये। बडी दूरपर जायकर अकीक हिकमत का लाये॥ पुण्य पाप से न्यारे होकर लाखों पारस बनाये। फते नामके फ़िरोजे हरभक्तों के मन भाये॥ मनका मनका मेरे मनमें श्याम श्याम का कर सुमिरन। हित का हीरा खरीदें जिसका नहीं कुछ मोल वजन॥ ३॥ हमने अब इस दिलको जौहर किया है ये है सच्चा दाना। वही जौहरी कि जिसने अपने दिल को पहिचाना॥ इसके बीच में सबकी खानि है मुल्क मुल्क का खज्जाना। कहैं देवीसिंह वोही मालिक जिसका कुल जम्माना॥ बनारसी ने दिल परखा कई लाख वजे के लगाये धन। हित का हीरा खरीदें जिसका नहीं कुछ मोल वजन॥ ४॥

योगी होय जो सकल में बैठे देखे दशवें द्वार को वो। कारज करे जगत के सब और लखे अलख करतार को वो॥ नाचै गावै गाल बजावै ध्यान आत्मा में धरके। सब में रहे और सबसे न्यारा पूरण होय योग करके॥ निर्भय होके विचरे निश दिन कबहूं नहीं चले डरके। अपने आप में आप को देखा धन्य भाग हैं वा नर के॥ जब वह काया त्यागे तब फेर पहुंचे परली पारको वो। कारज करें जगत के सब और लखे अलख कर्तार को वो॥ १॥ प्रसन्न चित औ बुद्धी निर्मल कर्म अकर्म न कुछ जाने। द्वैत भाव से अलग रहे अद्वैत ज्ञान को बखाने॥ समदर्शी औ शुद्ध समाधी अपने को आपी माने। जीव ब्रह्म में एक भावकर अपने मन में पहिचाने॥ भूमी भार उतारन कारन धरें आप अवतार को वो। कारज करें जगत के सब और लखे अलख कर्तार को वो॥२॥ त्रैगुण को जीते औ चौथे पद पर अपनी करे मती। सम्पूर्ण सृष्टि को भोग जो करे वोही हो बालयती॥ चराचरमें अपने आपको देखे सबसे उसकी होय गती। आपी पिता और आपी पुत्र है आपी स्त्री आप पती॥ चाहै करे वह प्रलय और चाहै रचे सकल संसार को वो। कारज करे जगत के सब और लखे अलख कर्तार को वो॥ ३॥ पुण्य पाप से अलग रहे दुख सुखका नहीं विचार करै। ब्रह्मज्ञान की चर्चा अपने मुखसे बारम्बार करै॥ आत्मदर्शी होय तो अपने सब कुलका उद्धार करै। बनारसी ये कहैं वह जो चाहे सो आप करतार करै॥ चाहे करै वह नर पैदा और चाहे बनाये नारिको वो। कारज करै जगत के सब और लखे अलख कर्तार को वो॥४॥

कालबलीसे लडके कुश्ती जीते जगतमें साधूसन्त। उनके दांवका किसीने आज तलक नाहिं पाया अन्त। बांध लंगोटा बने जितेन्द्रिय कभी न देखें परनारी। गम के भोजन करें जब चढे बदन पर तैयारी। कामक्रोध मद लोभ मोह इन पांचों की कुश्ती भारी। कालके ऊपर जायके बांधी अपनी असवारी। मन को किया मुरीद पेच बतलाये उनके तईं अनन्त। उनके दावका किसी ने आज तलक नहिंपाया अन्त ॥१॥ रामनामकीकसरतसे जब हुआ बदनमें जोर बडा॥ उदय अस्ततक हुआ उनकी कुश्ती का जोर बडा। पहलवानहै वही जगत में जो कोई है गमख्वार बडा। उसके सानी कोई नहीं हुआ कहीं शहजोर बडा। लोग लडें दुनियां में कुश्ती कालको जीतें सन्त तुरन्त। उनके दावका किसी ने आज तलक नहिं पाया अन्त ॥२॥ जो कोई उनसे दस्त मिलावे उसके हाथमें यश होजाय। कभी पछडे जगत में मोत भी उसके बस होजाय॥ काल फांससे बचे वह जिसकी रसनामें हरिरस होजाय। कपट की कैंची तजै तो पहलवान चौरसहोजाय। वह नहिंगिरे किसीके गिराये जो सद्गुरुकी पढे पढन्त। उसके दांवका किसीने आज तलक नहिंपाया अन्त ॥३॥ हतकोडा गल लपेट कुश्ती और पेंच सब झूठे खेल। इन्हें छोडके तू भज हरनाम और दंड निर्गुण के पेल॥ शीलसत्यका बांध सींगडा जो गुजरे वह दिल पर खेल। कहैंदेबीसिंह अरेनरमूढतू करसद्गुरु से मेल॥ बनारसी सन्तोंका सेवक कहै बातजो होवै तन्त। उनके दांवका किसीने आजतलक नाहिं पाया अन्त॥ ४॥

हिरदय में हरिहर हीरामन परखें जौहरी संत रतन । प्रीति का पारस पासमें अलख लाल का करें भजन ।। बोधके वस्तर पहने तन पर नये नये सजके भूषन । यश का जामा पहर के कुंज कुंज में फिरें मगन ।। पुण्यपोट की फेंट लगाई वासा रखते तेरी पवन । तेज तत्व का तामडा झलकें जैसे दिव्य अगन ।। मुक्तकी माला अमोल दाने परमहंस पहिरें सज्जन । प्रीति का पारस पास में अलख लाल का करें भजन ।। १ ।। जपता हूं मैं नाम उसी का सत्य शब्द का गहि सुमिरन । सादा दिल था खरीदा सद्गुरु सबजा शुद्ध वरन ।। तुरिया पदकी यतु मुरली श्यामा श्यामके गहे चरन । लगन लाडिली मिलि गये मोर मुकुट वाले की शरन ।। लौ का लाल लसुनियां पाया कहा ये हमने सत्य वचन । प्रीति का पारस पास में अलख लाल का करें भजन ।। २ ।। हरी नाम का अक़ीक़ इसका बयान करना बहुत कठिन । बुरे काम से बाज आ गमन रूप मूंगे को पहिन ।। ऐसा रस मत छोडो साधो राधावर हैं शिरे रतन । मती विसारो नाम शुभ लक्षण का पहिरो लटकन ।। छुम्बिश नहीं खाते हैं संत चित चुन्नी को करके धारन । प्रीति का पारस पास में अलख लाल का करें भजन ।। ३ ।। परमारथ का पहिन के पन्ना जीति लिए अब तीनों पन । कोई कहै कुछ भी अपना मेरा तो है वही वतन ।। कहूं मार अपने मनको अब पहिर जमुर्रद जस जीवन । देवीसिंह ये कहैं कहूं ख्याल हुमानी नया चलन । मैंने तो अब लखा है मन में मुक्त रूप मोती भगवन । प्रीति का पारस पास में अलख लाल का करें भजन ।। ४ ।।

त्रैलोकी है जिह्वा पर अब और किसी से काम नहीं। कोटि जन्म तक कभी जो भूले शिवका नाम नहीं॥ इसी जिह्वापर गंगा यमुना सरस्वती की है धारा। इसी जिह्वा पर रचाया तीन लोक का पसारा॥ ब्रह्मा विष्णु महेश ने अब जिह्वा पर आसन मारा। चांद और सूरज रहें इस जिह्वा पर नव लख तारा॥ नारायण गोबिन्द शब्द जिसने जिह्वा से उच्चारा। उसी के तांई हुआ मालूम हाल घट का सारा॥ चारधाम हैं इस जिह्वापर जिह्वा सा कोई धाम नहीं। कोटि जन्म तक कभी जो भूले शिवका नाम नहीं॥ १॥ हीरे मोती लाल औ पारस जिह्वा पर अकसीर बसे। दई देवते इसी जिह्वा पर पांचों पीर बसे॥ नौ नाथ चौरासी सिद्ध जिह्वा पर इसमें वामन वीर बसे। ऋषी मुनी सब इस जिह्वा में साधु फकीर बसे॥ भरत शत्रुहन हनूमानजी जिह्वामें रघुवीर बसे। समुद्र सातो इसी जिह्वा पर अमृत नीर बसे॥ रामचन्द्र हैं इस जिह्वा पर और कहीं आराम नहीं। कोटि जन्म तक कभी जो भूले शिव का नाम नहीं॥ २॥ चार वेद षट शास्त्र अठारह पुराण जिह्वा के भीतर। सात द्वीप हैं औ चौदह भुवन रत्न चौदह सुन्दर॥ जब जिह्वासे कहा तो आई श्री गंगाहरदास के घर। अजामीलने कहा नारायण मुख से गया वो तर॥ और कहीं कछु नहीं है प्यारे जो कुछहै सो जिह्वा पर। इस जिह्वापर गायत्री पार्वती शंकर हरहर। आठयामहैं इस जिह्वापर जिह्वासा कोई याम नहीं। कोटि जन्मतक कभी जो भूले हरका नाम नहीं॥३॥ श्रीकृष्णने इस जिह्वापर तीनलोक को दिखलाया। देखके अर्जुन रूप को अपने मनमें घबराया॥

हाथ बांधिके अस्तुति करता सब कुछ है तेरी माया । अभेद है तू तेरा तो भेद किसीने नहिं पाया ॥ जो कोई पूछे भेद किसीका उसे भेद कुछनहिं आया । कहें देवीसिंह ज्ञानविज्ञान मेरे मनमें भाया ॥ बनारसी कहे राम राम रट भूलें सुबह और शाम नहीं । कोटिजन्म तक कभी जो भूले शिवकानाम नहीं ॥ ४ ॥

श्रीकृष्ण गोपाल गोकलानंदन गुरु गिरवरधारी । गोधी गोचर ज्ञानविज्ञान आत्मा अवतारी ॥ पूरणब्रह्म अखण्ड सच्चिदानन्द सदा आनन्द करें । कालको जीते और जंजाल पाप सब बन्द करें ॥ दुष्टों को हनहनके मारे राक्षसकी मतिमंद करें भावभक्तको देय और सन्तों को निर्द्वन्द करें ॥ वेदशास्त्र गीता को गावें और नये नये छन्द करें । मुखधर मुरली बजावें स्तुति उनकी नन्दकरें ॥ मातु यशोदा करें आरती ध्यान धरें नित त्रिपुरारी । गोधीगोचर ज्ञानविज्ञान आत्मा अवतारी ।१। मोरमुकुट मकराकृत कुण्डल कंठ कौस्तुभमणी लसै । उरमें मुक्तमाल और कटिपीताम्बर पीत कसे । श्यामगात छबि स्वरूप सुन्दर सन्तों के हिरदय में बसे । चरण में झलके वो सुन्दर पद्मपद्मिनी देखहंसे । सब दुख दूर होंय उनके जो हरिकी भक्ती माहिं धसे । गोविन्द गोविन्द कहै जो उन्हें न काला काल डसे ॥ परम हंस सब करें अस्तुती ब्रह्म ब्रह्म कहें ब्रह्मचारी । गोधी गोचर ज्ञानविज्ञान आत्मा अवतारी ॥ २ ॥ नारायण वोही सत्य नारायण अनेक रूप अनन्त नयन । मोहनी मूरति मोहै मनको हंसबोले मधुर बयन । शेष नाग की शय्या पर करें क्षीरसिंधु में हरी शयन । ब्रज में प्रकटे चराई नंदबाबा की कामधयन । वृन्दावन में रहस रचाया

उजयाली खिलरही रयन । सब सखियन को साथ ले उनके संगमें करें चयन ॥ जितनी ग्वालिन खड़ीं रहसमें उतने ही बनगये बनवारी । गोधी गोचर ज्ञानविज्ञान आत्मा अवतारी ॥ ॥ ३ ॥ मीन कूर्म बाराहकहीं नरसिंहरूप हरने धारा । बामन बन के छला बलि इन्द्र को राज्य दिया सारा ॥ परशु राम हो क्षत्रिय जीते सहस्र बाहु को संहारा । राम रूप धरि छेद रावण को एक पल में मारा ॥ कृष्ण रूप सोलहों कला बल पण्डोंका किया निस्तारा । बनाई गीता इसी से दुर्योधन का दलहारा । बोधरूपधर बने हैं बौद्ध निष्कलंक की तैयारी । गोधी गोचर ज्ञानविज्ञान आत्मा अवतारी ॥ ४ ॥ अपार माया अलखलखी नहीं जाय कृष्ण अवतारी की । कवी क्या बर्णन करे जो महिमावनी मुरारी की । सहस्रमुख से रटै शेष नहीं पावै थाह बिहारी की । बालरूप धरि कामना बसुदेवकी सारीकी । रखी देवकी की लज्जा कंसा को मार वहुभारी की । कहैं देवीसिंह प्रभू अब हमने शरण तुम्हारी की ॥ बनारसी जै जै करता ब्रह्माने अस्तुति उचारी । गोधी गोचर ज्ञान विज्ञान आत्मा अवतारी ॥ ५ ॥

विश्वरूप खिलरहा बाग में जिसमें आदमी की गुल-जारी । रंग रंगके फूल हैं तरह तरह की फुलवारी ॥ पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण ये चारों दीवार बनी ॥ हर एक तरफ से नदियों की छूटी है जो नहर घनी । सात सिन्धु सोई तालाब सातों सबका मालिक वही धनी ॥ चाहै बनावै चाहै एक पलमें करदे फनाफनी । विश्व बागका मालिक है वही श्री कृष्ण गिरवरधारी ॥ रंग रंग के फूल हैं तरह

तरहकी फुलवारी ॥ १ ॥ नव खण्डों के महल बनाये दशोंदिशा के दशद्वारे । त्यार किये हैं बाग में चौदह भुवन न्यारे न्यारे ॥ आसमानकी छत्त लगाई जिसमें जड दिये हैं तारे । गरज गरज घनकरै छिडकाव छोडते फव्वारे ॥ चांद और सूरज चारों तरफ की करते हैं चौकीदारी । रंग रंग के फूल हैं तरह तरह की फुलवारी ॥ २ ॥ चमत्कार का चमनलगाया पर ब्रह्मने आपहि आप । हरजर्रे में झलकता हरशय में वही रहा है व्याप ॥ इसी बागके भीतर बैठे ऋषी मुनी सब करते जाप । कोई गावते भजन और कोई रहे पंचग्नी ताप । साधूसन्त करें सैर बागमें परमहंस और ब्रह्मचारी ॥ रंग रंगके फूल हैं तरह तरह की फुलवारी ॥ ३ ॥ तोते मैंना लालहंस सब सैर बाग की करते हैं । जो नर हरहर रटें वह नाहिं जन्में नाहिं मरते हैं ॥ देवीसिंह ये कहै ध्यान जो उस मालिक का धरते हैं । भवसागर के पार वह सहजहि जाय उतरते हैं बाग जहां के बीच में उसके कुदरत की फैली क्यारी । रंगरंगके फूल हैं तरह तरह की फुलवारी ॥ ४ ॥

यह कायाहै कल्पबृक्ष तीनों गुण की तीनों डाली । हर एकफल हैं इसी में हरीनामकी हरियाली ॥ प्रेमप्रीत के पत्र लगे और परस्वारथके फूलेफूल । उन फूलोंमें कोई नहीं कांटा है और कोई न शूल ॥ शील सत्यकी शाखा है आनन्दरूप कहैं जिसका मूल । मोर हंस सब और तोते मैंना उसमें रहे हैं झूल ॥ कल्पबृक्ष काया को सींचें निराकार निर्गुण माली । हर एक फलहैं इसी में हरीनाम की हरियाली ॥१॥ समदृष्टीकी सुगन्ध सुन्दर परम तत्व की चलै

पवन । छमाकी छाया में बैठे सन्त हरी का करैं भजन ॥ छविरूपीहै छालबृक्ष में बैठे बोले हीरा मन । ब्रह्मवीर्य्य से हुआ उत्पन्न किया यह सत्यमथन ॥ सबशाखा हैं भरी फूल से कोई डाल नहीं है खाली। हर एक फलहैं इसीमें हरीनामकी हरियाली ॥ २ ॥ सरजीवन जलभरा बृक्षमें हरीहरीकर हुआ हरा । नखसे शिखलों बृक्ष यह भावभक्ति से रहे भरा ॥ कल्पबृक्ष काया में बैठ के जिसने उसका भजन करा । अजर अमर वह हुआ और भवसागर में सहज तरा ॥ रंग रंगके बने जाल और तरह तरह की है जाली । हरएक फल हैं इसीमें हरी नामकी हरियाली ॥३ ॥ मुक्तरूप फल लगे बृक्षमें भजन करै सोई पावै । जन्म मरण से होवे वह रहित नहीं आवें जावै ॥ राम राम रस भरा फलों में जो कि राम सों लव लावे । कहैं देवीसिंह होय वह अमर नहीं मरने पावै । कल्पबृक्ष काया का है वह निराकार निर्गुण माली । हर एक फल हैं इसीमें हरी नाम की हरियाली ॥ ४ ॥

अमरनाथ ने अमर कथा जब कही सुनै थी पारबती । उत्तराखण्ड में लगा आसन बैठे कैलाशपती ॥ अविनाशी कैलाशी काशी उत्तराखण्ड में बसाई । बैठ गुफा में गौरि को अमरकथा जब सुनाई ॥ अमृतबाणी सुनी उमा के नेत्रमें निद्रा भरि आई । वही कथा फिर एक तोते के बच्चे ने सुनि पाई ॥ दिया हुंकारा शिवजी को शिव कहैं अर्थ कर समुझाई । सुआ सुनता था औ वहीं सोती थीं गौरा माई ॥ परब्रह्म का खेल हुआ पर उस तोते की बढी रती । उत्तराखण्ड में लगा आसन बैठे कैलाशपती ॥ १ ॥ हुई कथा सम्पूरण शिव ने पार्वती को

बोलाया। उठी गौरजा कह शिव मैंने कुछ नहिं सुन पाया॥ फिर शिवजी ने कहा हुंकारा किसने मुझको सुनाया। और तीसरा यहांपर कौन विधी करके आया॥ चढा क्रोध शिव शंकरको करसे त्रिशूलको उठाया। उसी वक्त फिर वह तोतेका बच्चा उठके धाया॥ दौडे शिव उसके पीछे वह निकलगया कर सुमत मती। उत्तराखण्डमें लगा आसन बैठे कैलाशपती॥२॥ तीनलोक में उडा वह तोता कहीं मिला नहीं ठीकाना। उडते उडते बहुतसा अपने मनमें घबड़ाना॥ पतिव्रता थी खडी करै स्नान उसी को पहिचाना। दौड के तोता जाय फिर उसके मुख में सामाना॥ वहां किसी का जोर चले नहीं क्यों कर हो उसका पाना। फिर शिवजी ने दिया बरदान कहा ये है स्याना॥ वही हुए शुकदेव व्यास के पुत्र बडे भये यती सती। उत्तराखण्ड में लगा आसन बैठे कैलाशपती॥ ३॥ अमर-कथा का बडा महातम है जो कोई सुनने जावे। श्रवण किये से होय वह अमर नहीं मरने पावे॥ चार वेद षटशास्त्र अठरह पुराण सब इसमें आवें। अमरकथा को आप शुकदेव सदा सुख से गावें॥ वह पण्डित हैं बडे कि जो कोई अमर कथाको सूनावे। और दूसरे बोल नहीं कछु मेरे मनमें भावे॥ जिस दिन शिवने कही कथा था कौन बार तिथि कौन हती। उत्तराखण्ड में लगा आसन बैठे कैलाशपती॥ ४॥

योगी साधें योग योगमें कायाको है खेद बडा। हमने जाना योग से वियोग का है भेद बडा॥ योग किया रावणने योगी बन सीता माता हरलाया। रामचन्द्र ने किया वियोग बडा एक यश पाया॥ योग किया हिरण्यकशिपुने प्रहलादभक्तको

डरपाया। वियोग करके बने नरसिंह दुष्टको गिरोया॥ योगकिया भस्मासुर ने शिव शंकर को अति सताया। वियोग करके विष्णु ने उसे भस्मकर जलाया॥ योगी पढते योग शास्त्र वियोगी का है वेद बडा। हमने जाना योग से वियोग का है भेद बडा॥ १॥ योगी बनके चला जलन्धर हरसे युद्ध कीना भारा। वियोग करके हरी ने छली जलन्धर की दारा॥ इस का योग घटगया पकडके शिव ने दुष्टको संहारा। इसीसे कहते योग से वियोग का रस्ता न्यारा॥ योग किया कंसा ने भाग श्रीकृष्ण को बीचारा। वियोग करके कृष्ण ने केश पकड उस को मारा॥ योगी करते योग विधी से वियोगी का है निषेध बडा। हमने जाना योग से वियोग का है भेद बडा॥ २॥ योग करन की श्रीकृष्ण ने सखियों को भेजी पाती। कहती सखियां ऊधो यह बात नहीं मन में भाती॥ योगी धारें भस्म हमने वियोग में जाली छाती। योगी मदको पीवें हम वियोग में हैं मदमाती॥ योगी बांधें सेहली हमने वियोग की बांधी गाती। जाय के ऊधो कृष्ण से कहो यह सखियां समझातीं। बियोगी बेधे हीया योगी तो काम में करते बडा। हमने जाना योग से बियोग का है भेद बडा॥ ३॥ योगी कहते ज्ञानबियोग फिरें इश्क में दीवाने। वियोग जिसको नहीं वह योग के रस्ता क्या जाने। योगी तो जंगल में बैठे चढावते अपना प्राने। बियोग करके वियोगी घटमें आतम पहिचाने॥ योगी के शिर जटा-वियोगी शिर से पर हैं मस्ताने। कहैं देवीसिंह योगी से बियोगी हैंगे सय्याने। बनारसीने वियोग साधा योगमें देखा खेद बडा। हमने जाना योग से वियोग का है भेद बडा॥ ४॥

गंगालहर बहर खडी ।

ब्रह्मारचते सृष्टि पालना विष्णु करैं शिव संहारे । धन्य धन्य श्रीगंगाजी जो अधमपापियों को तारें । गणेशजी विद्या का वरदें बुद्धिबुद्धिका दान करें । सूर्य तेज देवे शरीर में जग में सब सन्मान करें । शीतलताई देवें चन्द्रमा सतगुण का परधानकरैं । हनूमानजी चाहे तो एक पलभर में बलवान करें ॥ भैरोंजी भयहरैं डरें नहिं दुर्जन को पल में मारैं । धन्य धन्य श्रीगंगाजी जो अधम पापियों को तारैं ॥ १ ॥ इन्द्रका सुमिरन करेतो पावे सुन्दरसी अवला नारी । दुर्वासा जी पवन अहारी कामी को करें ब्रह्मचारी ॥ कुबेरके हैं भक्त जो वह तो बडे बडे माया धारी । धर्मराजजी धर्मवतावैं जो हैं उनके हितकारी ॥ शेषजी अपने सहस्र मुख से नये नाम नित उच्चारैं धन्य धन्य श्रीगंगाजी जो अधम पापियोंको तारैं ॥ २ ॥ तनुका रोग दूर करदेते बडे बैद्य अश्विनी कुमार । बेदव्यास पुराणके मुनि हैं वेद का निशि दिन करें विचार ॥ बालपने से त्याग बचावें सनक सनन्दन सनत कुमार । करो शनैश्चर का पूजन तो सकल बिपदको देवैंटार । जितने देवते हैंगे सो तो गुरूबृहस्पति को धारैं । धन्य धन्य श्री गंगाजी जो अधम पापियों को तारैं ॥ ३ ॥ तैंतीस कोट देवते सब अपना अपना देते हैं फल । अति प्रसन्न होते हैं उनपै जब चढता है गंगाजल ॥ देवीसिंह यह कहैं न भूलूं मैं श्री गंगाको यकपल । सबसे ऊंचे शिवजी उनके शीश के ऊपरगंग अचल । बनारसी के अधम पापको धोवे गंगा की धारैं । धन्यधन्य श्रीगंगाजी जो अधम पापियों को तारैं ॥ ४ ॥

सिवा कृष्ण महाराज के मेरा बाबा भैया कोई नहीं । वही प्रभु है मेरा और अपना भैया कोई नहीं ॥ यह संसार अपार है इसका पार करैया कोई नहीं । सिवा कृष्ण के जन्म और मरण छुडैया कोई नहीं ॥ लाखों मूरती हैं पर ऐसा कुँवर कन्हैया कोई नहीं । विश्वरूप का जगत् में और दिखैया कोई नहीं ॥ १ ॥

शेर—महाभारत में उठाया वो रथ का पैया है । विना हथियार लडा ऐसा वह लडैया है ॥ बना अर्जुन का सारथि वह रथ हंकैया है । मेरा मन रातो दिन उसी की ले बलैया है ॥ बडे बडे पापियों का ऐसा पाप छुडैया कोई नहीं । वही प्रभु है मेरा और जगत् में भैया कोई नहीं ॥ २ ॥ दरिद्र को देवे धन ऐसा तो दिवैया कोई नहीं । कहे सुदामा ऐसा भंडार भरैया कोई नहीं ॥ नखपर गिरवर धारा ऐसा गिर का उठैया कोई नहीं । बूडत ब्रजको राखा ऐसा तो रखैया कोई नहीं ॥२॥

शेर—रमा सबमें वोही ऐसा वह रमैया है । विना कानों से सुने ऐसा वह सुनैया है । फक्त वह अपने ही एक नाम का रखैया है ॥ यह जगत् रातो दिन उसकी दे दुहैया है । इंद्र के मानको मारा ऐसा गर्व गिरैया कोई नहीं ॥ वही प्रभु मेरा और जगत् में भैया कोई नहीं ॥ ३ ॥ सब ग्वालों से पूँछो ऐसा गाय चरैया कोई नहीं । माखन मिसरी का उनके सिवा खिवैया कोई नहीं ॥ गोपी भी कहे मोहन ऐसा दही चुरैया कोई नहीं । मानक मटकी को तोड ऐसा तुडैया कोई नहीं ॥३॥

शेर—लोग कहते हैं यशोदा भी उसकी मैया है । वह तो अलख है न उसका कोई लखैया है ॥ वेद वेदांत का

वही तो खुद बनैया है ॥ और उसके अर्थ का आपी वह लगैया है । मुझे है रटना उसके नाम को ऐसा रटैया कोई नहीं ॥ वही प्रभु है मेरा और जगत में भैया कोई नहीं ॥४॥ लूट लिया गोपियों कायौवन ऐसा लुटैया कोई नहीं । मांग्यो दधि को दान ऐसा तो मँगैया कोई नहीं ॥ देवीसिंह कहैं बनारसी सा ख्याल रचैया कोई नहीं ॥ अजब कहन है प्रेमकी ऐसा तो कहैया कोई नहीं ॥ ४ ॥

शेर—मेरा दिल साफ किया ऐसा वह धुलैया है । दूई को भूल गया ऐसा वह भुलैया है ॥ बसी है दिल में मेरे मन का वह बसैया है । मेरा मन उसके भजन का बना गवैया है। अपनी आत्मा देखूं निश दिन ऐसा दिखैया कोई नहीं ॥ वही प्रभु है मेरा और जगत् में भैया कोई नहीं ॥ ५ ॥

लावनी पापनाशिनी—बहेर लंगडी ।

रामकृष्ण का सुमिरन करने से पातक सब जाते हैं । धन्य वह नर हैं कि जो कोई राम कृष्ण गुण गाते हैं ॥ मैंने पाप किये बहुतेरे जिसका कुछ नाहिं आदि औ अन्त । विषयवासना में डूबा है झूंठ मूंठ कहलाया सन्त ॥ काम क्रोध मद लोभ मोह यह पांचों मेरे बने महन्त । इन्हीं के बश में रहा सद्गुरु की कुछ नहीं पढी पढन्त ॥ युवा अवस्था में नाहिं समझे वृद्ध भये पछताते हैं । धन्य वह नर हैं कि जो कोई राम कृष्ण गुण गाते हैं ॥ १ ॥ मात पिता का कहा न माना पढा ने पिंगुल वेद पुरान । बना कवीश्वर औ मैंने दग्ध छन्द किये बहुत बखान ॥ मैंने कहा मैं परमेश्वर हूं ऐसा मुझे व्यापा अभिमान । सत्य न बोला उम्रभर बका बहुतसा झूंठ तुफान ॥

धन पाया तो धर्म किया नहिं भीख मांग अब खाते हैं। धन्य वह नर हैं कि जो कोई राम कृष्ण गुण गाते हैं ॥ २ ॥ ब्रह्म-हत्या या बालहत्या या करे जो कोई गो हत्या। राम भजन से दूर होजाय नहीं फिर हो हत्या ॥ मैंने जीव बहुत से मारे लगी जो वह मुझको हत्या। कृष्ण कहे से भस्म होगई करी जो जो हत्या ॥ अपना बीता हाल सुनो हम सबको सत्य सुनाते हैं। धन्य वो नर हैं कि जो कोई राम कृष्ण गुण गाते हैं ॥ ३ ॥ सब अपराध क्षमाकर मेरे राम कृष्णजी बारम्बार। तुम हो दयानिधि दया करके करदो मेरा उद्धार ॥ अधम पापियों को तारा अब मुझको भी तुम दीजे तार। आगे मरजी आपकी जो चाहे करिये करतार ॥ अब मुझसे कछु बन नहीं पडता आपका भजन बनाते हैं। धन्य वह नर हैं कि जो कोई राम कृष्ण गुण गाते हैं ॥ ४ ॥ जो जो पाप किये मैंने प्रभु तुम जानो या जानें हम। और कोई क्या जानता किसके आगे करूं रकम ॥ किये पाप देबीसिंह ने तर गये वो अपना करा करम। श्रीगंगा के तीर तनु त्यागा जाने कुल आलम ॥ बनारसी कहे हमभी तो उनके मुरीद कहलाते हैं। धन्य वह नर हैं कि जो कोई राम कृष्ण गुण गाते हैं ॥ ५ ॥

लावनी विभूती योग—बहेर लङ्गडी।

राम कृष्ण महाराज मेरे अब अन्तर्यामी तुम्हीं तो हो। विश्व के कर्त्ता और इस जगत के स्वामी तुम्हीं तो हो ॥ कंसा छेदन कौरव मारन पांडव तारन तुम्हीं तो हो। नरसिंह बन दुष्ट का उदर बिदारन तुम्हीं तो हो ॥ बूडत व्रज को राख

लियो गोवर्द्धन धारन तुम्हीं तो हो । गज को उबारन ग्राहके मारन कारन तुम्हीं तो हो ॥

शैर—तुम्हीं सर्वज्ञ हो और सब से तो न्यारे हो तुम्हीं । जो कोई भगत है उसके भी तो प्यारे हो तुम्हीं ॥ मेरे अपराध क्षमा करके मुझे तारो तुम । मैं हूं सेवक और स्वामी तो हमारे हो तुम्हीं ॥ तुम्हीं तो वृन्दावन के बसैया गोकुल ग्रामी तुम्हीं तो हो । विश्व के कर्त्ता और इस जगत के स्वामी तुम्हीं तो हो ॥१॥ दैत्यों में प्रहलाद और सिद्धों में कपिल मुनि तुम्हींतो हो । चार वेद में श्यामकी सुनी अजब ध्वनी तुम्हीं तो हो ॥ अक्षर में हो मकार और सुन्नों में महासुन तुम्हीं तो हो । और पांडव में धनुषधारी वह अर्जुन तुम्हीं तो हो ॥

शैर—दशों इन्द्री में जो देखा तो यह मन आपही हैं । पवित्र करने में देखा तो पवन आपही हैं ॥ अधमके तारने को आप बने परमेश्वर । मैंने जाना कि वह तारन तरन आपही हैं ॥ अनन्त हैंगे नाम आपके ऐसे नामी तुम्हीं तो हो । विश्व के कर्त्ता और इस जगत के स्वामी तुम्हीं तो हो ॥ २ ॥ वीरों में जो महावीर रुद्रों में शंकर तुम्हीं तो हो । और कवियों में वो शुक्राचार्य कवीश्वर तुम्हीं तो हो ॥ ज्योती में हो सूर्य अवतारों में शशि सुन्दर तुम्हीं तो हो । तांत्रिक मत में श्री-बलदाऊजी हलधर तुम्हीं तो हो ॥

शैर—ज्ञानवानों में तो वह ब्रह्मज्ञान आपही हैं । ध्यान करने में वो योगी का ध्यान आपही हैं ॥ नरों के बीच में राजा हो तुम्हीं चक्रवर्ती । पुण्य करने में तो ज्ञान दान आपही हैं ॥ सबकी कामना पूरण करते ऐसे कामी तुम्हीं तो हो ।

विश्व के कर्त्ता और इस जगत के स्वामी तुम्हीं तो हो ॥३॥ देवऋषि में नारद और गुरुवों में बृहस्पति तुम्हीं तो हो। वाक्‌वाणी में कीर्त्ती और सरस्वती तुम्हीं तो हो। वृक्षों में पीपल हो पत्रों में वह बेलपती तुम्हीं तो हो। अधम का करते आप उद्धार वह गति तुम्हीं तो हो ॥

शेर—सकार में तुम्हें देखा तो विश्वरूप हो तुम। जहां सुन्दर है कोई उसका भी स्वरूप हो तुम ॥ कहांलों आपकी महिमा को देवीसिंह कहे। सगुण में रूप हो निर्गुण में तो अरूप हो तुम ॥ बनारसी कहैं बासुदेव बसुधा अभिरामी तुम्हीं तो हो। विश्व के कर्त्ता और इस जगत के स्वामी तुम्हीं तो हो ॥ ४ ॥

लावनी श्रीअंजनीजी की स्तुति—बहेर लङ्गडी।

आदि कुवांरी मात अंजनी जो चाहै सो तू भर दे। जय श्री दुर्गे अटल भण्डार मेरा अब तू भर दे ॥ जो मेरे शत्रु हैं उनका एक पलभर में क्षय करदे। तीनलोक में तू माता साधु सन्त की जय करदे ॥ तू है कालिका काल काल का काल से भी निर्भय करदे। जो तू ब्रह्म है तो अपने बीच में मुझ को लय करदे ॥ और न कुछ तुझसे मांगू तू जो चाहै मुझको वर दे। जय श्रीदुर्गे अटल भण्डार मेरा अब तू भर दे ॥ अद्भुत तेरा ध्यान है अब उसको मेरे मनमें कर दे। सकल वीर का जोर माता मेरे तनु में कर दे ॥ सब दुष्टों को संहारूं ऐसा तू मुझे रण में कर दे। कभी न भूलूं मुझे हुशियार तू इरफन में कर दे ॥ निर्भय होकर बिचरूं निशि दिन कभी नहीं मुझको डर दे। जय श्रीदुर्गे अटल भण्डार मेरा अब तू भर दे ॥ जो

कुछ इस जिह्वा से निकले सिद्धि मेरी बाणी कर दे । शरणागत हूं तेरी अब दया तू महारानी कर दे ॥ जल को तू अग्नि करदे और अग्नि को पानी कर दे । तू जो चाहे तो एक दम भर में फनाफनी कर दे ॥ काट काट दुष्टों के शिर को अपने खप्पर में धर दे । जय श्रीदुर्गे अटल भण्डार मेरा अब तू भर दे ॥ सब कुछ तेरे हाथमें है जो भावै सो मुझको तू दे । चित्त में तेरे मात जो आवै सो मुझको तू दे ॥ जो वस्तु नहीं मेरे हाथ से जावै सो मुझको तू दे । ये जिह्वा जो तेरा गुण गावै सो मुझको तू दे ॥ कभी न खाली हाथ रहूं माता मुझ को इतना जरदे । जय श्रीदुर्गे अटल भण्डार मेरा अब तू भरदे ॥ जो तू अपनी कृपा करे माता मुझको ऐसा यश दे । ब्रह्मज्ञान का मेरी इस रसना के ऊपर रस दे ॥ देवीसिंह के सब बशमें होवें उनको ऐसा यश दे । गाय औ कुत्ते जो कोई हनें उन्हें तू अपयश दे ॥ बनारसी को श्री माता दरबार तू वह अमृतसर दे । जय श्रीदुर्गे अटल भण्डार मेरा अब तू भर दे ॥

लावनी बहर जीकी—शापमोचन ।

दुर्वासाजी का तो शाप होगया वह उन्हें अशीश । तरगये यादव बिस्वे बीसजी ॥ तीर्थके ऊपर आये यादव करनेको स्नान । वहां मच गया युद्ध घमसानजी ॥ आपस में सब लड़े कटे देखते रहे भगवान । आया फिर सबके लिए विमानजी ॥ अपना भी तनु त्यागा हरिने किया न कुछ अरमान । धरौ तुम श्री कृष्ण का ध्यानजी ॥ सारे कुल को तार दिया कोई करै क्या उनकी रीस । तर गये यादव बिस्वे बीसजी ॥ ॥ १ ॥ यादव तो सब स्वर्ग गये गये परमधाम हरि आप ॥

वोही सर्वज्ञ रहे हैं व्यापजी ॥ भार उतारा पृथ्वी का सब दूर किया संताप ॥ न उनका पुण्य न उनको पापजी ॥ आशीश करके माना प्रभु ने दुर्वासा का शाप ॥ जपौ सब नारायण का जापजी ॥ बेद शास्त्र यह कहै वही थे नारायण जगदीश ॥ तर गये यादव विश्वे बीसजी ॥ २ ॥ युद्ध में मरना बडा धर्म है यह क्षत्री का काम ॥ इसीसे मचा वहां संग्रामजी ॥ मृत्युलोक को तजा मिला वह स्वर्ग का उत्तम धाम ॥ यहां से वहां है बडा आरामजी ॥ मौतसे जो सब मरते तो फिर होजाते बदनाम । युद्ध में मरे तो पाया नामजी ॥ इस कारण श्रीकृष्णने अपने कुलका कटाया शीश ॥ तर गये यादव विश्वे बीसजी ॥ ३ ॥ अब तो भार बडा पृथ्वी पर चारों तरफ है काल ॥ सूख गये नदी नाले तालजी ॥ कोयलों की खान बहुतसी गुप्त हो गये लाल ॥ नोटने लूट किया धन मालजी ॥ देवीसिंह कहे बनारसीसे जपो नाम गोपाल ॥ देखिये कब प्रकटैं नंदलालजी ॥ दुरवासा और श्रीकृष्ण यह दोनों एक थे ईश ॥ तर गये यादव विश्वे बीस जी ॥ ४ ॥

वन काया में मन मृग चारों तरफ चौकड़ी भरता है ॥ विना पैरसे दौड़ता विन मुख चारा चरता है ॥ विना नेत्र से देखे सबको विना दांत दाना खावैं ॥ सब कहीं जावै और यह कहीं नहीं आवै जावै । विन जिह्वा से बात करै और विना कंठ गाना गावै ॥ विना सींगसे लडैं और बडे बडे दल हटावै । बहुत सिंह डरते इससे ये किसीसे भी नहीं डरता है ॥ विना पैर से दौडता विन मुख चारा चरता है ॥ १ ॥ विन खुर खोदे सकल जगत को ऐसा यह मदमाता है । विन

इंद्री से भोग करत है यही यती कहलाता है । नहीं इसके कोई तात मात नहीं कुटुम्ब कबीला नाता है । आपी पैदा होय वो आपी में आप समाता है ॥ सब रंगों से न्यारा है और हरएक रूपको धरता है । विना पैरसे दौडता विन मुख चारा चरता है ॥ २ ॥ विना जीवका मांस खाय ये किसीको भी नहिं मारे है । जिसको मारे एक पलभर में उसे सुधारे है ॥ बिना कान से सुनता सबकी जो कोई उसे पुकारे है । ऐसे ज्ञान की कोई भी साधू संत विचारे है ॥ तीनों लोक में फिरता यह मृग भवसागर में तिरता है । विना पैर से दौडता विन मुख चारा चरता है ॥ ३ ॥ विना नासिका लेवै वासना हरएक चीज की खुशबोई । आपी आप है अकेला और न इसके संग कोई । देवीसिंह यह कि जिसने बुद्धि निर्मलकर धोई ॥ अपनी आत्मा इस मृगको जाने सोई । बनारसीने देखा यह मृग नाहिं जन्मे नाहिं मरता है ॥ बिना पैर से दौडता विन मुख चारा चरता है ॥ ४ ॥

लावनी सुदामा चरित्र बहरे छोटी ।

श्रीकृष्ण ने देखा आये मित्र सुदामा । कर जोड खडे हो गये वसुधा अभिरामा ॥ नंगे पैरों तनु दुबंल वस्त्र मलीना । कुछ शोच न कियो लगाय कंठसे लीना ॥ असुवन जलसे प्रभु सींचते चरण प्रवीना ॥ विनती करके हरि बोले बचन अधीना ॥ इतने दिन तुम कहां रहे कहो क्या कीना ॥ दुखको सुख समझे धन्य तुम्हारा जीना । तुमने पवित्र यह कियो मेरो सब ग्रामा ॥ कर जोड खड़े होगये वसुधा अभिरामा ॥ १ ॥

उबटन करके गंगा जलसे नहलाया । फिर रत्नसिंहासन पर उनको बिठलाया ॥ षट्रस भोजन अतिप्रेम से उन्हें जिमाया । फिर कहा मुझे भावज ने क्या भिजवाया ॥ लिये खोल वह तंदुल रुचि रुचि भोग लगाया। दो फंके मार दिखाई अपनी माया । तीसरी बार रुक्मिणी कर को थामा । कर जोडखड़े होगये बसुधा अभिरामा ॥ २ ॥

फिर लडकैयांकी सारी कही कहानी ॥ वह करें बात और सुनै रुक्मिणीरानी । कहे रुक्मिणी यह हैं सखा तुम्हारे ज्ञानी यह त्यागी भी हैं निर अभिमानी ॥ इनके प्रताप से मिली तुम्हें रजधानी । सारी बसुधा मैंने इनहीं की जानी ॥ कहैं कृष्ण रुक्मिणी धन्य है उनको जामा । कर जोड खडे होगये बसुधा अभिरामा ॥ ३ ॥

कहैं कृष्ण सखा तुम थके वाटके हारे । अब शयन करो यह बिछे हैं पलंग तुम्हारे ॥ फूलोंकी सेज फूलोंके तकिये न्यारे । भये मगन सुदामा उसपर आप पधारे । श्री कृष्णने उनके चरण दबाये सारे ॥ और अंग २ सब मला वह ऐसे प्यारे ॥ दिन-भर उनकी सेवा की छोड और सब कामा ॥ कर जोड खडे होगये बसुधा अभिरामा ॥ ४ ॥

जब सांझ भई तब मेवा और मिठाई । वह रत्न जडित थाली में आप लगाई ॥ ले सुदामाके आगे यदुराई ॥ जो रुचि होय तो खाव हमारे भाई । मैं कहां तलक आपकी करूं बडाई। जिसने तुम्हें जाया धन्य तुम्हारी माई ॥ मैं आठ पहर भूलों नहीं तुम्हरो नामा । कर जोड खडे होगये बसुधा अभिरामा ॥

फिर बुलाय के गंधर्व सुनाया गाना । वो हिंडोल मेघ

मलार और राग शहाना ॥ कहैं कृष्ण कोई से तुम भी बीन बजाना ॥ यह मित्र हमारे इनको खूब रिझाना । बजी सारंगी सहनाई और रबाना ॥ कोई मूरख नहीं था सबी लोग थे दाना । कहैं कृष्ण सुदामा से तुम हो निःकामा । कर जोर खड़े होगये वसुधा अभिरामा ॥ ६ ॥

फिर सोये सुदामा सुख से रैन गुजारी । भया भोर तौ लाये हरि कंचन की झारी ॥ मुख धोये सुदामाने यह विचारी । जो कृष्ण कुछ दे तो लज्जा भारी ॥ वह अन्तर्यामी आप श्रीगिरिधारी । पहिले ही उनके घर भेज दी माया सारी ॥ चलती बिरियां तौ दियो न एकौ दामा । कर जोर खड़े होगये वसुधा अभिरामा ॥ ७ ॥

फिर चले सुदामा घरको नंगे पैयां । यह भया शकुन मिलगई राह में गैयां । पानी भी बरसे और बादल की छैयाँ ॥ करें याद कृष्णकी और अपनी लड़कैयां । जो मुझे कृष्ण कुछ देते मेरे सैयां । तो बडी शर्म मुझे होती मेरे गुसैयां । मुझे सब कुछ दियो कियो मुझे प्रणामा । कर जोर खडे होगये वसुधा अभिरामा ॥ ८ ॥

फिर जाय सुदामा पहुँचे अपने घरको । नहीं मिली कुटी देखा कंचन मंदिर को ॥ नारी ने उनको देखा अपने बरको । कहा डरो नहीं तुम आजावो भीतर को । वह आप उतर आई और पकड़ लिया करको । कहा सुनो पति तुम देख आये गिरधर को ॥ फिर कही द्वारिका की सब बात सुदामा । कर जोर खडे होगये वसुधा अभिरामा ॥ ९ ॥

जो इस चरित्र को सुने और कोई गावे । वह भक्ति मुक्ति

संपूर्ण पदारथ पावे ॥ जो प्रेम सहित भक्ति के छंद बनावे । वह अन्तकाल में अमरलोक पुर पावे ॥ कहैं देवीसिंह श्रीकृष्ण से जो लव लावे । सुन बनारसी वह आप में आप समावे ॥ संपूर्ण सुदामा के हरिने किये कामा । कर जोर खडे होगये बसुधा अभिरामा ॥ १० ॥

होली कृष्णवियोगकी विरहिननायिका बहरछोटी

गये कृष्ण द्वारिका अब मत होली गावो। सुन सखी चलो होलीमें आग लगावो ॥ अंसुवनसे भरकर नयनकी पिचकारी । अब इसी रंगसों भिजा लो चूनर सारी ॥ रोरोके पुकारो कहां गये गिरिधारी ॥ सब देखें अँखियाँ लाल गुलाल तिहारी । छातीको पीटकर बाजन वही बजावो ॥ सुन सखी चलो होली में आग लगावो ॥१॥ जिस विधिसे सुलगें होली में अंगारे । उस विधिसे छाती जले विरह के मारे ॥ ऊधो माधोको लेकर कहां पधारे । और नंद भी आये पलट कबो अपने द्वारे ॥ फेंको अबीर अब शिरपर धूल उड़ावो । सुन सखी चलो होली में आग लगावो ॥ २ ॥ बिन कृष्ण सखी को अपनी गाली खावे । मोहन बिन सबको कंठसे कौन लगावे ॥ हैं फूटे अपने भाग्य न फाग सुहावे । वो बेहया बेशरम जो होली गावै ॥ ऐसी होली जलगईको और जलावो । सुन सखी चलो होलीमें आग लगावो ॥ ३ ॥ जो विधनाने कुछ लिखा सो होनी होली । गये कृष्ण द्वारका मार विरहकी गोली ॥ मोहन बिन अब हम किससे करें ठठोली । किस विधि मन को समझावें भोली भोली ॥ कहे बनारसी अब ब्रजसे फाग उड़ावो ॥ सुन सखी चलो होली में आग लगावो ॥ ४ ॥

लावनी रामकृत रामायण—बहेर लंगडी ।

इन्द्रजीतको कौन जीतता जो पै लषण नहिं होते वीर । महाबीर से कहैं यह बात श्रीपति श्रीरघुबीर ॥ रावण के घरमें तो कोई नहीं इन्द्रजीतसा था बलवान । त्रिलोकी में कोई को मिला नहीं ऐसा बरदान ॥ बारह बरस नहीं शयन करे नहीं करे जगत में खानो और पान । रहे जितेंद्रिय कहैं यह रामचन्द्र सुन लो हनुमान ॥

शैर—लखन नहीं साथ में होते तो वह मारा नहीं जाता । तो लंका से मैं सीताको अवधमें किस विधि लाता ॥ बडी प्रारब्ध से मुझको मिले ऐसे मेरे भ्राता । यह जिसकी कोखमें जन्मे वह इनकी धन्य है माता ॥ इन्द्रजीतको छेदन करदिया श्रीलक्ष्मण के ऐसेतीर । महाबीर से कहैं यह बात श्रीपति श्रीरघुबीर ॥ १ ॥ इन्द्रने रावणको बांधा तो इन्द्रजीत लेगया छुडाय । बडा बली था वह जिसके तेजसे त्रिलोकी थर्राय ॥ शक्तिबाण था पासमें उनके काल देख जिसको भयखाय । धन्य यह लक्ष्मणके ऐसी चोट किसी से सही न जाय ॥

शैर—यह मेरे प्राण बीती जो इनको मूर्छा आई । कहा मैंने मिलैंगे किस विधि मुझको मेरे भाई ॥ मरेगा किस विधि रावण का सुत निश्चय वह दुखदाई । मैं इनके शोकमें भूला जो कुछभी मेरी प्रभुताई ॥ हाथ पांव सब शिथिल होगये थमें नहीं नयनों से नीर ॥ महाबीर से कहैं यह बात श्रीपति श्रीरघुबीर ॥ २ ॥ कुम्भकर्ण रावण का मारना तुच्छ था सो मैंने मारा । मेघनाद के मारने में न चला मेरा चारा ॥ ऐसा कोई नहीं बली था वह जिस जिसको मैंने संहारा । इन्द्रजीत से इन्द्रभी लडा तौ एक पल में हारा ॥

शैर—भरोसा था फक्त रावण को अपने सुत के तीरोंका। मरा जिस वक्त वह बल सब घट गया सबके शरीरों का ॥ हुआ तप क्षीण एक क्षणमें वह सब रावण के बीरोंका। मुकुट भी गिरपडा रावण के शिर से था जो हीरोंका ॥ पडा शोक रावण की लंकमें कोई धरै नहीं मनमें धीर। महाबीर से कहैं यह बात श्रीपति श्रीरघुबीर ॥ ३ ॥ रामचन्द्र यह कथा कहैं और हनूमान सुनते चितलाय। रोम रोम में वह उनके नाम रामका रहा समाय॥ श्रीलक्ष्मण के प्रताप से रावण को जीते श्रीरघुराय। कहैं देवीसिंह अब उसके अर्थ कोई क्या सके लगाय ॥

शैर—यह शोभा लक्ष्मणजी की बखानी रामने आपी। और जो कुछ सामर्थ्य थी उनमें वह जानी रामने आपी। करी स्तुति कही सुन्दर वह वाणी रामने आपी ॥ वह जो थी बात लक्ष्मण की वह मानी रामने आपी। बनारसी कहैं इन्द्रजीत को हना लषन ऐसे रणधीर। महाबीर से कहैं यह बात श्रीपति श्रीरघुबीर ॥ ४ ॥

होलीनिर्गण-बहेर लँगडी।

साधु संत खेलें होली निशि दिन अपनी आत्मा के संग। भीज रहा है वह चोला उनका उस निर्गुणके रंग ॥ प्रेम की पिचकारी जिसको मारें उसका रंग लाल करें। एक दम भर में वह तो कंगाल को मालामाल करें ॥ ज्ञान गुलाल से भरदें झोरी सब जगका प्रतिपाल करें। जन्म मरण का दूर इस दुनियां से जंजाल करें।

शैर—उन्हें कुछ काम न दुनियां की इस लडाई से। बुराई से भी न मतलब न कुछ भलाई से ॥ इन्हें कोई लाख गालियां

दें तो ओ कुछ न कहें । सदा वह हँसते रहें जगत् की हंसाई से ॥ उनके साथ में खेलें होली श्रीगंगाजी की ओ तरंग ॥ भीज रहा है वह चोला उनका उस निर्गुण के रंग ॥ १ ॥ सन्त तो हैं वे लोग किसीसे कभी नहीं रखते वह लाग । धन्य वह नर हैं जो कोई खेलें वह सतगुरु से फाग ॥ कभी नहीं सोवें निशि दिन वह ज्ञान रात्री में रहे जाग । जिनके मनमें प्रेम और प्रीतिका है पूरण वैराग ॥

शैर—सदा वह रामकृष्णजी का भजन गाते हैं । दुरंगी छोड दी एक रङ्ग में रँगराते हैं ॥ उन्हें कुछ इन्द्र की पदवी से सरोकार नहीं । वह अपनी मस्ती में हैं मस्त और मदमाते हैं ॥ कामक्रोध का मार कुमकुमा करें वो अपने मन में जंग । भीज रहा है वह चोला उनका उस निर्गुण के रंग ॥ २ ॥ ब्रह्मा विष्णु महेश शेष सनकादिक सब लेलेके अबीर । खेलें होली वह निर्गुण संग साधु संतन की भीर । ज्ञानमें हैं मदमाते और रंगराते उनके शुद्ध शरीर । कबीर देखें वह होली कबीर भी फिर कहैं कबीर ॥

शैर—पहनके भक्ती के भूषण का वह श्रृंगार करें । गले निर्गुण के लगें ब्रह्म का विचार करें ॥ ज्ञानकी आग में वह कर्म की होली दें जला । न पुण्य पापसे मतलब वह यह पुकार करें ॥ जब जब जन्म धरें पृथ्वी पर तबतब उनको यही उमंग । भीज रहा है वह चोला उनका उस निर्गुण के रङ्ग ॥ ३ ॥ दया धर्मका खेल धुरैहरी होली का उद्धार करें । ऐसे साधू जो हैं वह कभी न मारामार करें ॥ प्रह्लाद ने खेली होली यह देवीसिंह पुकार करें । पूरे साधू जो हैं वह परमेश्वर को याद करें ।

शैर-जो कोई योग से करता है भोग होली में। उसे होता न कभी कष्ट रोग होली में॥ जो कोई मेरी यह होली के अर्थ जानेगा। उसे होगा न कभी यारो सोग होली में॥ बनारसीने ऐसी होली कही कि होलका होगयी दंग। भीज रहा है वह चोला उनका उस निर्गुण के रंग॥ ४॥

ख्याल गौरी रक्षा श्रीकृष्ण करैं—बहर छोटी।

गोपा हो तो सब गौवों को पालो। दुष्टों को मारो तनिक न देखो भालो॥ यह तृण चुगलेवें अमृत दूध को देवें। यह सबको देवें कोई से कुछ नहिं लेवें। है धन्य वह उनके भाग्य जो इनको सेवें॥ उनकी नैया भवसागर में हरि खेवें। सारे कसाइयों के अब घरको घालो॥ दुष्टों को मारो तनिक न देखो भालो॥ १॥

गये कितने ही युग बीत इन्हें दुख भारी। यह बिना गुनाह तकसीर है जाती मारी॥ निश्चय कर देखो यह सब की महतारी। यह अर्ज मेरी अब सुन लीजे गिरिधारी॥ सारी पृथ्वी परसे यह पाप उठालो। दुष्टों को मारो तनिक न देखो भालो॥ २॥

हो कोई जात जो मास गायका खावे। तो उसे वह मालिक दोजख में पहुँचावे॥ नहीं कहीं पर ऐसा लिखा जो मुझे दिखावे॥ वह बेईमान बदजात जो इन्हें सतावे। जो इनको मारे उसे कत्ल कर डालो। दुष्टों को मारो तनिक न देखो भालो॥ ३॥

हैं बडे वह उनके सींग न तनिक चलावें। जो जरा भी घुरको बहुत सा यह डरजावें। माता मरजाय फिर यही तो

दूध पिलावें । यह देवीसिंह और बनारसी सच गावें । गोवों के द्रोही को श्रीकालिका खाले । दुष्टों को मारो तनिक न देखो भालो ॥ ४ ॥

बहेर लंगडी ।

उधर राधिका सखियों के संग इधर ग्वाल ले कृष्णमुरार। खेलें होली परस्पर श्रीराधा और नंदकुमार। उधर तो केसर का रंग बरसे और वह सुन्दर पडे फुहार । इधर से चलते कुमकुम दोऊ तरफों मारामार ॥ उधर से राधा दौड़त आवें संगलिये सब ब्रजकी नार । इधर से झपटे कृष्ण संग ग्वाल बालक करें बहार ॥

शैर—उधर से राधिका कृष्णजी को प्यार करें । इधरसे कृष्ण भी राधा के संग विहार करें ॥ वह होली होरही दोनों तरफसे रंग भरी । गगन में देवते देखें तो ये विचार करें ॥ इनकी महिमा लखी न जावै यह दोऊ हैं अपरम्पार । खेलें होली परस्पर श्रीराधा और नन्द कुमार ॥ १ ॥ उधर राधिका अद्भुत तन पर किये वह मणियों के शृंगार । इधर कृष्ण के शीशपर मोर मुकुटकी लटक अपार ॥ उधर भीज रही कुसुम सारी गले में वह मोतियन के हार । इधर पीतपट वह तर और वनमाला शोभित गुलजार ॥

शैर—उधर से राधिका श्रीकृष्ण से पुकार करें । इधर से कृष्ण भी ग्वालोंके संग गोहार करें ॥ वह होली होरही मधुवन में जिसका अन्त नहीं । और ऐसी होली की महिमा भी वेद उचार करें ॥ थकित होगई शेषकी जिह्वा हज़ार मुख से व दो हजार । खेलें होली परस्पर श्रीराधा और नन्द कुमार ॥ २ ॥

उधर से राधा गुलाल फेंके भर भर मुट्ठी बिना शुमार । इधर से मोहन वह मारें तक तक पिचकारिन की धार ॥ उधर से राधा दें सीठनी और सखियन की खडी कतार । इधरसे गावें वह गाली गोविन्द और सब उनके यार ॥

शैर--उधर से श्रीराधिका श्रीराग का उच्चार करें । इधर से कृष्णभी बंशीकी वह झनकार करें॥ उधर तो बज रहे ढफ ढोल इस धडाके से । इधर से ग्वाल भी शंखों की घुघुकार करें ॥ उधर से तो गावें हिंडोल मिलके इधर से गावें मेघ मलार । खेलें होली परस्पर श्रीराधा और नन्द कुमार ॥ ३ ॥ उधर नाचतीं सखी तथैथै दैदै ताली बारम्बार । इधर थिरकते ग्वाल सब लिए हाथ में बीन सितार ॥ उधर राधिका देख कृष्णको अपना तन मन धन दे वार । इधर कृष्ण भी वह मोहित श्री राधा को रहे निहार ॥

शैर--उधर क्या राधिका श्रीकृष्ण से करार करें । इधर का भेद बतावौ तौ बेडा पार करें ॥ उधर से राधिकाजी को जो भजें भक्ति मिलें । इधरसे कृष्ण भी भक्तों का वह उद्धार करें ॥ देवीसिंह कहैं बनारसी हरि अब पृथ्वी का उतारो भार । खेलें होली परस्पर श्री राधा और नन्द कुमार ॥ ४ ॥

होली--बहेर बहुत छोटी अद्भुत ।

खेलते होली ब्रज में नन्दलाल । मचो वह खूब धमाल ॥ चले वह हँस हँसके लटपट चाल । हाथ में लिए गुलाल ॥ बजावें बंशीसी दैदै ताल । गावें ध्रुपद ख्याल ॥

शैर--कृष्ण तो हाथ में लेकर बहुत अबीर चले । गुलाल भर

के वह झोली सुनो बलबीर चले ॥ उधर से राधिका सखियों को साथ ले धाईं । इधर से साथ में इनके बहुत अहीर चले ॥ गालियां गावें हँस हँस गोपाल । मचो वह खूब धमाल ॥ बहुतसा राधा रंग दीनों डाल । बने कृष्णजी लाल ॥ मल मुख रोरी और चूमें गाल । सखियां भईं निहाल ॥

शेर--कोई को होश भी मुतलक न रहा होली में । गली में कुंजन की औ रंग बहा होली में ॥ कोई लपटें कोई झपटें व कोई शोर करें । कोई बेहोश हुई कुछ न कहा होली में ॥ हाल कोई का होगया बेहाल । मचो वह खूब धमाल ॥ कोई के मुखडे पर बिखरे बाल । पडा हो जैसे जाल ॥ कोईके माथे पर केशर भाल । कोई के बिन्दी लाल ॥

शेर--कोई गाते और बजाते वह लिए ढोल चले । हर के साथ में अपना वह लिए गोल चले ॥ किसी के हाथमें केशर की भरी पिचकारी । कोई तो रंग भी टेसूका बहुत घोल चले ॥ सुनो तुम ब्रज का सारा अहवाल । मचो वह खूब धमाल ॥ कोई दौलतवर कोई कंगाल । सबका रूप बिशाल ॥ कहैं यह अद्भुत ख्याल । बजा चंग करताल ॥

शेर--यह ढंग सब से निराला बनारसी का सुनो । ख्याल भी सबसे है आला बनारसी का सुनो ॥ किसी की शायरी में लुत्फ कहां होता है । सखुन यह सब पै है बाला बनारसी का सुनो ॥ मगन भये सुन के यह तीनों ताल । मचो वह खूब धमाल ॥

योगाभ्यास ।

सुख मनमें तो तबं होवे जब प्राणायाम परायण हो । ऊर्द्ध

मूलको लखे अलख होय नर से फिर नारायण हो ॥ षटचक्कर के ऊपर उत्तम सप्तम चक्र सुदर्शन है। निराकार अव्यय अविनाशी ज्योति रूपका दर्शन है ॥ द्वैत नहीं उसमें किंचित अद्वैत यह दरशन परशन है। और काम है सहज कठिन यह वोही तो आकरषण है ॥ अनहदबाजे बजें वहां पर दीपक राग का गायन हो। ऊर्द्ध मूल को लखे अलख होय नर से फिर नारायण हो ॥ १ ॥ नाभि कमल में ब्रह्मा और हिरदे में विष्णु भोग करें। मस्तक में शिव करें तपस्या तपें और पूरण योग करें ॥ जो प्राणी तीनों गुण से हों रहित और सदा वियोग करें। परमहंस के दरशन तो इस जगत में वोही लोग करें ॥ चाहें स्त्री पुरुष होंय या योग यती गोसायन हो। ऊर्द्ध मूल को लखे अलख होय नर से फिर नारायण हो ॥ २ ॥ जहां अग्नि नहीं पवन न पानी औ नहिं नदी नाला है। चलें न चन्दा सूर्य वहांपर आपी आप उजाला है ॥ सत्य चित्त आनन्द रूप वह गोरा नहीं न काला है। हर रंग में हर झलक रहा पर सबसे रहे निराला है ॥ जब प्राणी यह जन्म लेय तो पैदा उलटे पांयन हो। ऊर्द्धमूल को लखे अलख होय नर से फिर नारायण हो ॥ ३ ॥ खुलें आंख जब भीतर की तब दिव्य दृष्टि होजाय उसे। महाकाल वह आप बने औ काल नहीं फिर खाय उसे ॥ देवीसिंह यह कहैं देख तो ब्रह्म को ध्यान लगाय उसे। बनारसी तू वही तो है सद्गुरु ने दिया लखाय उसे ॥ लखचारासी से छुटजावें भूत प्रेत नहिं डायन हो। ऊर्द्धमूल को लखे अलख होय नर से फिर नारायण हो ॥ ४ ॥

त्याग देह अभिमान का—बहेर खडी ।

नहीं मिलें हरि धन त्यागे नहीं मिलें रामजी जाल तजै। नारायण तो मिलें उसको जो देह अभिमान तजै ॥ सुत दारा या कुटुंब त्यागे या अपना घरबार तजै। नहीं मिलें प्रभु कदापि जगत का सब व्यवहार तजै ॥ कन्द मूल फल खायरहे और अन्न का भी आहार तजै। वस्त्र को त्याग नग्न हो रहे और पराई नारि तजै ॥ तौ भी हरि नाहिं मिलें यह त्यागे चाहे अपने प्राण तजै। नारायण तो मिलें उसको जो देह अभिमान तजै ॥ १ ॥ तजै पलंग फूल का और चाहे हीरा मोती लाल तजै। जात को अपनी तजै कुलकी सारी चाल तजै ॥ वन में निशि दिन विचरै और इस दुनियां का जंजाल तजै। देह को अपनी जलावे शरीर की भी खाल तजै ॥ ब्रह्मज्ञान नहीं हो तोभी चाहे वो अपनी शान तजै। नारायण तो मिलें उसको जो देह अभिमान तजै ॥ २ ॥ रहे मौन बोले नहीं मुख से अपनी सारी बात तजै। बालपने से योग ले तात तजै या पात तजै ॥ शिखा सूत त्यागन करदे और उत्तम अपनी मात तजै। कभी जीव को न मारे घात तजै अपघात तजै ॥ इतना तजै तो क्या होवै जो देह का नहीं गुमान तजै। नारायण तो मिलें उसको जो देह अभिमान तजै ॥ ३ ॥ रहे रात दिन खडा न सोवै पृथ्वी की भी शैन तजै। कष्ट उठावे रहे बेचैन औ सारी चैन तजै ॥ मीठा होकर बोलै सबसे कडुबे अपने वचन तजै। इतना त्यागे देह अभिमान नहीं दिन रैन तजै। बनारसी कहैं उसे मिलें नहीं हरि चाहे सकल जहान तजै। नारायण तो मिलें उसको जो देह अभिमान तजै ॥ ४ ॥

ख्याल श्रीदुर्गाजी चारौं पदार्थ देनेवाली । बहेर लंगडी ।

सरस्वती विद्या देवे और अन्नपूरणा अन देवे । ज्ञान दे गौरी और धोला गढवाली धन देवे ॥ यमुना यम से छुटादे और गंगा परमगती देवे । नाम नर्मदा दे और सीता सुमत मती देवे ॥ ब्रह्मानी दे ब्रह्मविद्या रुद्रानी बड़ी रती देवे । कमला देवे कामना प्रेम वोह पारवती देवे । मंगल दे मंगला देवी ललिता मुझे लगन देवे ॥ ज्ञान दे गौरी और धौलागढ़ वाली धन देवे । विन्ध्यवासिनी विन्द दे और योग योगमाया देवे ॥ कृपा कमक्षा दे काली निर्मल काया देवे । ज्वाला दे जिह्वा पर यश माता पूरण माया देवे ॥ दया दे दुर्गा भवानी मेरे मन माया देवे । विद्या दे वेदांतसार भैरवी तो मोहिं भजन देवे ॥ ज्ञान दे गौरी और धवलागढवाली धन देवे । त्रिकुटा त्रैगुण छुटा देवे और तुलसी परम तत्व देवे ॥ अष्टभुजी दे आठ सिद्धि और सती सत्त देवे । वागेश्वरी दे वाक बाणी भगवती तो मोहि भक्ति देवे ॥ तांत्र दे तारा और जयंती जीत जगत देवे । कोट कांगड़ा कोटिन वरदे रमाभिराम चरण देवे ॥ ज्ञान देवे गौरी और धवलागढवाली धन देवे ॥ नयना देवी नयननमें सुख दे नारायण नीत देवे । कहैं देवीसिंह मुझे तो पुण्यागिरी प्रीति देवे ॥ बनारसी को जयजयवंती तीनों लोक जीत देवे । गायत्री दे सकल गुण गोदावरी गीत देवे ॥ हिरदे में श्रीहिंग लाज हित से अपना दर्शन देवे । ज्ञान दे गौर और धवलागढवाली धन देवे ॥

ख्याल भगवती को-बहेर लंगड़ी ।

नाम तुम्हारा गौरी है पर कोह रूप धरा काली । रक्त

बरण हो शारदा बनी रहै जगमें लाली ॥ तीनों गुण से रहित है तू पर त्रयगुण तेरे हैं आधीन । इस कारण ते भगवती धरे रूप ये तुमने तीन ॥ सद्गुण से पालन करै और रज से रचा करे परवीन । तम गुणसे तो करै संहार तू है सबमें लवलीन ॥ भक्ति मुक्ति की दाता है तू ऋद्धि सिद्धि देनेवाली । रक्त बरण हो शारदा बनी रहै जगमें लाली ॥ ब्रह्मा विष्णु महेश शेष सनकादिक सब तुझको ध्यावें । अपार माया है तेरी पार न सुर नर मुनि पावें ॥ धन्य धन्य वह पुरुष है जो हिरदे से तेरा गुण गावें ॥ लगे चरणों तेरे दरबार में इन्द्रादिक आवें । सप्तद्वीप नवखंड और चौदहों भुवन में तेरी उजियाली । रक्त बरण हो शारदा बनी रहै जगमें लाली ॥ ब्रह्मा तेरी गोद में खेलैं विष्णु को दूध पिलावे तू । शिवशंकर कोतांडव नृत्य का नाच नचावे तू ॥ बड़े बड़े असुरों को मार कर मुंड की माल बनावे तू । कोटिन तेरी भुजा और असंख्य शस्त्र चलावे तू ॥ रक्त बीजका रक्त पिया एक बुंद न पृथ्वी पर डाली ॥ रक्त बरण हो शारदा बनी रहै जग में लाली । जिसको तूने चक्र से मारा चक्रवर्ती वह कहलाया । पार न जिसका कोई पावे वह तेरी माया । त्रिशूल से छेदा जिसको त्रिभुवनका राज्य उसने पाया ॥ कहैं देवीसिंह तूने बैरियों को भी सुख दिखलाया । बनारसी कहै दयावन्त श्रीदुर्गे तू भोली भाली । रक्तबरण हो शारदा बनी रहै जग में लाली ॥

ख्याल निर्गुण कालीजी का—बहेर लंगड़ी ।

यह काया कलका कलकत्ता इसी में है कृष्णा काली । तीनों गुण के तीन हैं नेत्र बड़ी शोभावाली । मन मन्दिर में

आप विराजे खुशी खड्ग खप्पर धारे । सप्तसिंह पर आनकर बैठी पद्मासन मारे ॥ मन्त्र मधुर मधुपान करे त्रिलोक में हो रहे जयकारे । झपट झपट के काम और क्रोध दैत्य सब संहारे ॥ समता का शृंगार सजे तनु पर मन में रहे खुशियाली । तीनों गुण के तीन हैं नेत्र बड़ी शोभावाली ॥ चमत्कार की चार भुजा और रचना मुण्डों की माला । तेज और तपका खडा त्रिशूल जगत से निरयाला ॥ चित्त का चक्र वह घूमें चारों तरफ मेरी जय जय ज्वाला । दुर्बुद्धी को मारकर टुकडे टुकडे कर डाला ॥ दृढता का डमरू बाजे और सप्त ताल बजती ताली । तीनों गुण के तीन हैं नेत्र बडी शोभावाली ॥ बोधके वस्त्र को पहिने तनुपर प्रीत पुष्प के हार गले । बुद्धि वेद को पढे और दया धर्म की चाल चले ॥ लोभ मोह दो चण्डमुण्ड हैं इन दोनों के दल दले । ऐसी काली बसे काया में अगम की लाट बले ॥ जगमग जगमग जगे ज्योति यश कीरति की है उजियाली । तीनों गुण के तीन हैं नेत्र बडी शोभावाली ॥ करै भलाई के भोजन और ज्ञान गंगजल नित्त पिये । जोगकी योगन भाव के भूत और भैरव संग लिए ॥ विद्या के बीडे चावै और तिलसमात के तिलक दिये । कहैं देवीसिंह हैं उन के बडे भाग्य जिन दरश किये ॥ बनारसी यह कहै मेरे वह घट में करती रखवाली । तीनों गुण के तीन हैं नेत्र बडी शोभावाली ॥

रामचन्द्र के स्वरूप का वर्णन—बहेर लंगडी ।

निर्गुण ब्रह्म श्रीरामचन्द्र भये सगुण ब्रह्म और श्याम वरण । आनन परते मैं हरि के वारूं रवि की कोटि किरण ॥ घूंघर

वाली अलकन पर मैं श्याम घटा वारूं और घन । शेषनाग की भी जिह्वा वारूं और काली का फण ॥ मस्तक पर शशि वारूं केशर सुश्क और मलयागिर चन्दन । भृकुटी पर से धनुष वारूं और करूं फिर मैं धन धन ॥

शैर–राम के नाम पै वारूं मैं सैकड़ों रावण । फिर वारूं इन्द्रजीत और वह बली कुंभकरण ॥ और उनके ध्यानपै वारूं मैं योगियों की यतन । बड़े हैं सब में वही जिनकी है प्रभु से लगन ॥ पलकों पर मैं बाण वारूं और चितवन पर वारूं खंजन । आनन परते मैं हरि के वारूं रवि की कोटि किरन ॥ नेत्र पर उनके कमल को वारूं और जंगल के काले हरिण । अमृत वारूं हलाहल वारूं और मदिरा की फवन ॥ खांडा बिछुवा खंजर वारूं और बांक का वारूं बांकपन । अपने नेत्र भी मैं वारूं स्वामी का करके दर्शन ॥

शैर–राम के रूप पर वारूं मैं सोलहों लक्षण । और उनके तेज पै वारूं मैं विश्वभर की अगन ॥ बात पर उनकी बनाकर मैं वारूं कोटि भजन । दया पै रामकी वारूं कुवेर का सब धन ॥ वारूं नासिका के ऊपर मैं बुला बुलाकर हीरामन । आनन परते मैं हरि के वारूं रवि की कोटि किरन ॥ करण पै वारूं सूरज के कुण्डल ओठ पै वारूं लाली यमन । चमक दांत की पै दामिन वारूं और चौदहों रतन ॥ दो कपोल पै रवि शशि वारूं जिसका तेज छाया त्रिभुवन । जिह्वा पर से वेद वारूं मैं राम का कर सुमरन ॥

शैर--राम के बाण पै वारूं मैं तीनों लोकका रण । धनुष पै उनके मैं वारूं जो धनुष निकले गगन ॥ और उनके क्रोध पै वारूं मैं काले रुद्रका मन । राज पै राम के वारूं वह जो है

इन्द्रासन ॥ कण्ठ पै वारूं छहों राग औ तीस रागिनी की सब परन । आननपर ते मैं हरि के वारूं रवि की कोटि किरन ॥ हाथ पै वारूं दान पुण्य जो राजा बलि से अधिक कठिन । हिरदे पर से मैं उनके वारूं जोवन का जोवन ॥ नाभि कमल पै भंवर को वारूं कटि पै केहरि की लचकन । जंघा पर से मैं उनके वारूं कजरी थंब के वन ॥

शैर-रामकी चाल पै वारूं हरएक का चालो चलन । चरण पर अप्सरा वारूं मैं उनके छूके चरण ॥ वह उनके काव्य पै वारूं कवीश्वरों की कथन । मैं उनके विश्वरूप पर यह वारूं चौदहों भुवन ॥ देवीसिंह कहैं बनारसी तेरी रहै राम से लगी लगन । आननपर ते मैं हरि के वारूं रवि की कोटि किरन ॥

निर्गुण रामायण—बहेर लंगडी ।

घट में शिव के रकार है और मुख में हर के मकार है । राम नाम का सदा श्री महादेव को अधार है ॥ रकार से दे ऋद्धि सदा शिव मकार से देते मुक्ति । ऐसे भोले हैं जिन के पास में दोनों जुगती ॥ रकार रक्षा करे सदा और मकार से ममता शक्ति । शिवशंकर के पास नाना मकार की है उक्ति ॥ अष्ट पहर दिन रैन सदा दोनों अक्षरका विचार है । रामनाम का सदा श्रीमहादेव को अधार है ॥ रकार से हर हरें रोग और मकार से देतें माया । विश्वनाथ के हिरदे में राम नाम है समाया ॥ रकार रम रहा रोम रोममें मकार मेरे मनभाया । दो अक्षर का आदि और अन्त किसीने नाहिं पाया ॥ रकार रचना करै औ महिमा मकार की भी अपार है । राम नामका

सदा श्रीमहादेव को अधार है ॥ मकार में है रकार का रस रकार का है मकार मन । विश्वनाथजी इसी से राम नाम का करें भजन ॥ रकार ने राक्षस संहारे मकार ने मारे दुर्जन । राम नाम के रटे से नीलकण्ठ रहैं सदा मगन ॥ विचार करके देखा मैंने चार वेदका ये सार है । रामनामका सदा श्रीमहादेव को अधार है ॥ रकार के हैं रंग सभी और मकार का मत ज्ञानी है । राम की लीला सिवा शिव के नहीं किसीने जानी है ॥ राम के नाम का अन्त नहीं है थकी शेषकी बानी है । बनारसी ने कीर्त्ती राम की सदा बखानी है ॥ पल पल छिन छिन निशि दिन मुझको दो अक्षर की पुकार है । राम नाम का सदा श्रीमहादेव को अधार है ॥

श्रीकृष्ण के अंगुली की स्तुति-बहेर लंगडी ।

श्रीकृष्ण के हाथ में क्या नाजुक है भोलीभाली अँगुली ॥ रंगरंगके जवाहर से है रंगवाली अँगुली । कभी अँगूठी पहरे लालकी दिखलाती लाल अँगुली ॥ कभी पिरोजों से हो जंगाली अंगुली । जबके जमरुदके छल्लों में हरि ने वो डाली अंगुली ॥ हरी होगई दिखाने लगी व हरियाली अंगुली । जितने रंग हैं इस पृथ्वी पर किसीसे नहीं खाली अंगुली ॥ रंग रंग के जवाहर से ओ रंगवाली है अंगुली । एक तो बाले कृष्ण एक उनसे उनकी बाली अंगुली ॥ दूजी दूध से यशोदा ने उनकी पाली अंगुली । तीजी त्रयगुण रहित औ चौथीचौथे पदवाली अंगुली ॥ चार पदारथ चारों में एकसे एक आली अंगुली । अर्थ धर्म और काम मोक्ष सबके देनेवाली अंगुली ॥

रंग रंगके जवाहर से वह रंगवाली अंगुली । कभी पहने हीरों के छल्ले हरिने चमकाली अंगुली ॥ किरण सूर्यकी देखकर होगई मतवाली अंगुली । चित्र विचित्र के लक्षण जिसमें ऐसी कर ढाली अंगुली ॥ धन्य वह विधना के जिसने सांचे में ढाली अंगुली । चंद्र कला नखमें जिनके शोभित है वह आली अंगुली ॥ रंगरङ्गके जवाहर से वह रंगवाली अंगुली । एक समय राधाने कृष्ण की अंगुली में डाली ॥ गंगा यमुना मिल गई वह गोरी काली अंगुली । श्याम कहैं श्यामसे तुम्हारी चंद्रसे उजियाली अंगुली ॥ श्यामा बोले आपकी अद्भुत बन-माली अंगुली । देवीसिंह कहै बनारसी ने वह देखी भाली अंगुली ॥ रंगरंग के जवाहर से वह रंगवाली अंगुली ॥

गंगालहरी-बहेर खडी ।

ब्रह्मा रचते सृष्टि पालना विष्णु करैं शिव संहारें । धन्य श्रीगंगाजी जो अधम पापियों को तारें ॥ गणेशजी विद्या का वर दें बुद्धि बुद्धिका दान करें । सूर्य तेज दें शरीर में इस जगत् में सब सन्मान करें ॥ शीतलतायी देय चन्द्रमा सतगुण को परधान करें । हनूमानजी चाहें तो एक पलभर में बलवान करें ॥ भैरवजी भय हरें डर नहीं दुर्जन को पल में मारें । धन्य धन्य श्रीगंगाजी जो अधम पापियों को तारें ॥ इन्द्र का स्मरण करे तो पावे सुन्दरसी अबला नारी । दुर्वासाजी पवन अहारी कामी को करें ब्रह्मचारी ॥ कुबेरके जो भक्त हैं वह तो बडे बडे माया धारी । धर्मराज जो धर्म बतावें जो हैं इनके हितकारी ॥ शेषजी अपने सहस्र मुखसे नये नाम नित उच्चारें । धन्य धन्य श्रीगंगाजी जो अधम पापियों को तारें ॥ तनुका

रोग दूर कर देते बडे वैद्य अश्विनीकुमार ॥ वेदव्यास पुराण के मुनि हैं वेदका निशि दिन करें विचार । बालपने से त्याग बतावैं सनकसनन्दन सनत्कुमार ॥ करो शनिश्चर का पूजन तो सकल विपत् को देवें टार । जितने देवते हेंगे सो सब गुरु वृहस्पति को धारें । धन्य धन्य श्रीगंगाजी जो अधम पापियों को तारें ॥ तेंतिस कोटि देवते सब अपना देते हैं फल । अति प्रसन्न होते हैं इन पर चढता है जब गंगाजल ॥ देवीसिंह ये कहैं न भूलौं मैं श्रीगंगा को यक पल । सबसे ऊंचे शिवजी उनके शीश के ऊपर गंग अचल ॥ बनारसी के अधम पापको धोवें गंगा की धारें । धन्य धन्य श्रीगंगाजी जो अधम पापियों को तारें ॥

गंगालहरी-बहेर खडी ।

पापी एक मरा गंगा पर हुई वो उसकी तैयारी ॥ महिमा सुनो कान दे जैसी निकली वाकी असवारी ॥ आयो कंचन विमान सुन्दर और वामें रत्न जड़े । ब्रह्मा विष्णु महेश शेष सनकादिक सब लेने को खड़े ॥ उधर से आये यमके दूत वो लेले हाथ में शस्त्र बड़े । देखतही दल श्रीगंगा का भागे यमके पांव पड़े ॥ वह जो पापी था सो तो तनु त्याग के बन गया त्रिपुरारी । महिमा सुनो कानदे जैसी निकली वाकी असवारी ॥ अद्भुत भूषण कुबेरजी झटपट सो आपी ले आये । पीत वस्त्र नख सिखलों उत्तम उनके तनु में पहिराये ॥ चोवा चंदन अतर अरगजा सभी देवते ले धाये । पत्र पुष्प से पूजन कर-कर मगन भये मंगल गाये ॥ तीन लोक चौदहो भुवन की पाई उसने सरदारी । महिमा सुनो कान दे जैसी निकली

वाकी असवारी ॥ मोरमुकुट मकराकृत कुण्डल गले में बैजयंती माला । शीश छत्र सोवरन का झूमें जयजय शब्द की ध्वनि आला ॥ कंठ कौस्तुभ मणीहार गज मुक्ता का उरमें डाला । बाजूबंद नवरत्न और करमें कंगन का उजियाला ॥ भरे अटल भंडार उसे गंगाने माया दी सारी । महिमा सुनो कान दे जैसी निकली वाकी असवारी॥ जब वह बैठा विमान में तब ब्रह्माजी मुरछल लाये । इन्द्र डुलावें पंखा सब देवतों ने पुष्प अति बरसाये । शिव और विष्णु ने करी शंखध्वनि ऐसे फल उसने पाये ॥ धन्य भाग्य हैं उनके जो कलिकाल में गंगाजी न्हाये ॥ करें नृत्य गंधर्व सकल मिल वाजे बजन लगे भारी । महिमा सुनो कान दे जैसी निकली वाकी असवारी॥ अष्टसिद्ध नवनिद्धि सभी कर जोर जोर आईं आगे । जब वह उठा विमान तो गोले अनहद के दगने लागे ॥ नंदीगण और गरुड सिंह गज विमान के नीचे लागे ॥ और सकल वाहन कांधा देने लागे बारी बारी । महिमा सुनो कान दे जैसी निकली वाकी असवारी ॥ हनूमानजी खवास बनगये भैरव बनगये अगमानी । गणेशजी डंका ले आगे चले महा योगी ध्यानी ॥ छप्पन कोटि मेघ ने मिलके रस्ते में छिडका पानी । चन्द्र सूर्य ने करी रोशनी सब देवतों के मन मानी ॥ तेंतिस कोटि फौज सब संगमें चली और छवि न्यारी न्यारी । महिमा सुनो कान दे जैसी निकली वाकी असवारी ॥ जब वह पहुंचा अमरलोकपुर सब फिर आये अपने धाम । मिला ज्योति में ज्योति रूप होय श्रीगंगा को करो प्रणाम ॥ याही ते मैं कहत बात हों जपो सकल गंगा का नाम । और कोई नहीं अन्त

समय में आवैगा अब तुम्हरे काम ॥ बनारसी यह कहै कभी तो आवेगी मेरी बारी । महिमा सुनो कान दे जैसी निकली वाकी असवारी ॥

गंगालहरी-बहेर खड़ी ।

भोजन कर या भूखा रहु या वस्त्र पहर या फिर नंगा । जौलों जिये तू कहु इस मुख से जय गंगा श्रीजय गंगा ॥ नेम धर्म और कर्म अकर्म में योग भोग में कहुगंगा । दुखमें सुख में भले बुरेमें रोग अरोगमें कहु गंगा ॥ सोवत जागत राह बाट में हर्ष शोक में कहु गंगा । मातु पिता दारा सुत बिछुडे तो बियोग में कहु गंगा ॥ धन दौलत या राजपाट हो या फिर बन जा भिखमंगा ॥ जौलों जिये तू कहु इस मुखसे जय गंगा श्रीजयगंगा ॥ १ ॥ रोवत हंसत नगर अरु बनमें जहां रहै तू कहु गंगा । सम्पत विपत कुपत और पत नर सबी सहै तू कहु गंगा ॥ डूबत तिरत मरत या जीवत मेरे कहे तू कहु गंगा ॥ रे मन मूढ समझ अब झट मेरो मन चहे तू कहु गंगा ॥ जो तेरे मन बसे कार यह लगे तेरे चितमें चंगा । जौलों जिये तू कहु इस मुख से जय गंगा श्रीजयगंगा ॥२ ॥ खेलतकूदत उछलत फांदत अपने मन में कहु गंगा । बाल जवानी और बुढापा तीनों पनमें कहु गंगा ॥ नाचत गावत ताल बजावत हरराागनमें कहु गंगा। सातद्वीप नवखंड और चौदह भुवन में कहु गंगा॥अन्धा हो या बहिरा हो या लूला हो या इकटंगा॥ जौलों जिये तू कहु इस मुख से जयगंगा श्रीजयगंगा । घटी नफे में दिवस रात्रि में आदि अंत में कहु गंगा ॥ संग कुसंग में रंग कुरंग में साधु संत में कहो गंगा । चराचर चेतन और जड में तू अनंत में कहो गंगा ॥ चाहे सब में बैठके

कहो चाहै एकान्त में कहौ गंगा ॥ बनारसी यह कहै चाहै तू गरीब बन या कर दंगा । जौलौं जिये तू कहौ इस मुख से जय गंगा श्री जय गंगा ॥

गंगा लहरी बहेर खडी ।

और सकल देवतों से फल जो मांगोगे तो पावोगे । बिन मांगे देहैं गंगा जो एक बार तुम न्हावोगे ॥ शिवजी की जो करो तपस्या मन में ध्यान लगावोगे । और वह श्रीगंगा का जल जब उनके शीश चढ़ावोगे ॥ बेलपत्र अरु आक धतूरा मंदिर में ले जावोगे । तब वह हुइहैं प्रसन्न जब तुम दोनों गाल बजावोगे ॥ वह कहिहैं कुछ मांगो तब तुम उनसे मांग के लावोगे । बिन मांगे देहैं गङ्गा जो एक बार तुम न्हावोगे॥ ठाकुरद्वारे जाय जाय जब विष्णु को शीश झुकावोगे । पत्र पुष्प से पूजन कर कर माला को पहिरावोगे ॥ धूपदीप नैवेद्य लगाकर और बिष्णुपद गावोगे । तब वह रीझेंगे तुमसे जब उनको भजन सुनावोगे ॥ वह कहिहैं कुछ हमसे लेउ तब तुम कर को फैलावोगे । बिन मांगे देहैं गङ्गा जो एक बार तुम न्हावोगे ॥ ब्रह्माजी का सुमिरण कर कर लाखन बर्ष बितावोगे । कन्द मूल फल खाय खाय के बहुतहि कष्ट उठावोगे ॥ यह काया कञ्चन तनु अपना इसको खूब सुखावोगे । तब वह दर्शन देइहैं पैहो फल जो कुछ तुम चाहोगे ॥ वह कहिहैं कुछ मांगो तब तुम मांगोगे शरमावोगे । बिन मांगे देहैं गङ्गा जो एक बार तुम न्हावोगे ॥ करिहौ पृथ्वी पैकर्मा और चारोंधाम फिर आवोगे । जगन्नाथ और रामेश्वर में जाय के पांव थकावोगे ॥ और द्वारका में छापे खाखा के बदन जलावोगे ।

जाओ बद्री केदार तब तुम क्योंकर शीत बचावोगे ॥ वहां तो तुम आपै मंगिहो मांगन में बहुत लजावोगे । बिन मांगे देहैं गङ्गा जो एक बार तुम न्हावोगे ॥ और कहीं जो पाप कर्म करिहो तो पाप उठावोगे । गङ्गाजी में देह भी धोइहो तो भी नहीं पछतावोगे ॥ लात लगावो कूदो फांदो बहुतै धूम मचावोगे । तो भी माता प्रसन्न होइ हैं वाके पुत्र कहावोगे ॥ बनारसी कहै अन्त में मुक्ति आपी से तुम पावोगे । बिन मांगे देहैं गङ्गा जो एक बार तुम न्हावोगे ॥

गंगालहरी—बहेर खड़ी ।

आज युद्ध की करो तयारी श्री गङ्गाजी तुम हमसे । मैं पापी तुम तारणहारी बनिहैं पाप बहुत हमसे ॥ मेरा पाप है पहाड के सम समर करन में वीर बडो । देखौं मैं अब आयके कैसो हैगो तुम्हरो तीर बडो ॥ रण में लडे हटे नाहिं कबहूं मेरो पाप रणधीर बडो । तुमतो यहां कहत हो मुख से मेरी रेणुका नीर बडो ॥ देखो उनको पुरुषारथ जो लडि हैं आय मेरे तम से । मैं पापी तुम तारणहारी बनि हैं पाप बहुत हमसे ॥ जब से जन्म भयो पृथ्वी पर कभी न हरि को नाम लियो । सेवा की नहिं मात पिता की साधुन को नहिं काम कियो ॥ हरो बहुत धन ठगाठग के नहिं हाथ से एकौ दाम दियो । कियो बहुत विषपान न अमृत को भी एकौ याम पियो ॥ कैसे बचिहौं काल से मैं अब कौन छुटैहै मोहिं यम से । मैं पापी तुम तारणहारी बनि हैं पाप बहुत हमसे ॥ वेद पुराण बखानत निशि दिन अधम पापियों को तारा । किया बहुत संग्राम कालते औ यमदूतों को मारा ॥ सुनी बात यह श्रवण से मैंने

किये पाप अपरम्पारा । करिहों और बहुत से अघ देखों कैसे हो निस्तारा ॥ अब तो येहि लडाई ठानी है गंगाजी में तुम से । मैं पापी तुम तारणहारी बनि हैं पाप बहुत हम से ॥ अईहैं जब यमदूत लैन को बडे बडे योधा भारी । जब तुम मोहि बचैहो तब मैं जैहों तुम्हरी बलिहारी ॥ तुम्हरे गण हैं पुष्प लिए औ यम के दूत शस्त्रधारी । इसका उत्तर देउ कि सैन। किस विधि से यमकी हारी ॥ कहो मुझे समझायके झटपट छुट जाऊं मैं इस भ्रम से । मैं पापी तुम तारणहारी बनि हैं पाप बहुत हम से ॥ फिर गंगाजी बोली मेरी एक रेणुका असंख्यवान । भगिहैं सब यमदूत बुलै हों मैं तुमको भेज के विमान ॥ एक बिन्दु गंगाजल से जल जांय पाप नहिं रहे निशान । किये पाप देवीसिंह ने यह पाप भी होगये पुष्प समान ॥ बारम्बार ये कहत जात क्यों बनारसी तुम हमसे । मैं पापी तुम तारणहारी बनि हैं पाप बहुत हमसे ॥

गंगालहरी—बहेर खड़ी ।

ब्रह्मा बिष्णु महेश शेष सनकादिक सबने किया भजन । तब आई ब्रह्ममण्डल से श्रीगंगाजी तारन तरन ॥ ब्रह्मरूप निर्भय निर्वानी अखण्ड गंगा की धारा । बिष्णु से ब्रह्मा के पास आई तब शिवजी ने धारा ॥ जटाको उनके शोभा दिया रूप भी सुन्दर सुधारा । आगे कहूंगा वृत्तान्त जिस विधि तीनलोक को उद्धारा ॥ अस्तुति करके आप ईश ने शीश चढ़ाई भये मगन । तब आई ब्रह्ममण्डल से श्रीगंगाजी तारन तरन ॥ भागीरथ ने करी तपस्या मगन भये शङ्कर भोला ।

कहा मांग कुछ हमसे तब भागीरथ मुख से ये बोला ॥ गंगा देउ नाथजी मुझको शुद्ध करो कुलका चोला । तब फिर अपनी जटा को शिव ने अपने हाथन से खोला ॥ एक बिन्दु गंगाजल निकला जटा से जब अति किया जतन । तब आंई ब्रह्ममण्डल से श्रीगंगाजी तारन तरन ॥ एक बिन्दु की तीन धार भई धारा एक गई पाताल । शेषनाग ने दर्शन पाये जीवन मुक्त भये सब व्याल ॥ एक धार आकाश गई सब देवते भये खुशहाल । हाथ जोड दंडवत करी गंगा ने उन्हें तारा तत्काल ॥ एक धार भागीरथ लाये मृत्यलोक तारन कारन । तब आंई ब्रह्ममण्डल से श्रीगंगाजी तारन तरन ॥ मृत्यलोक में चली वेग से तब्र समुद्र ने किया विचार । हाथ जोड गंगा से कहा तुम्हरे बलका नहिं पारावार ॥ ये मुझ से नहिं जाय सम्हारा बहुत सिन्धु ने करी पुकार । तब्र गंगा ने प्रसन्न होकर धारा अपनी करीं हज़ार ॥ नाम पडा गङ्गासागर कहै बनारसी नित कर दरशन । तब आंई ब्रह्ममण्डल से श्री गङ्गाजी तारन तरन ॥

लावनी ।

श्रीगंगाजी के तीर नीर पीने को नाग यक आया ।
था बड़ा वह विषधर नाग भाग्य कछु वादिन वाके जागे ।
जब जल पीने वह लगा तो मेंढक देखकर भागे ॥
इतने में आये गरुड चोंच से पकड के खाने लागे ।
झटपट वाको गये निगल प्राण तत्कालै वाने त्यागे ॥
मरतही विष्णु तन धारा । चढ गरुडपै यही पुकारा ॥ अब वाहन मिला हमारा ।
धन धन गंगा की बिन्दु मुझे गोविन्दै आप बनाया ।

श्रीगङ्गाजी के तीर नीर पीने को नाग यक आया ॥
शिर मोरमुकुट की लटक कान में कुंडल अधिक बिराजें ।
गल बैजन्ती माल पीत पीतांवर तनु पर साजें ॥
वो शंख चक्र और गदा पद्म की सम्पूरण छवि छाजें ।
यह चरित्र वाके देख देखकर गरुडजी मन में लाजें ॥
कुछ कहत नहीं बन आवे । गंगा जो चाहे बनावे ॥ चाहे शिवको रूप बरावे ।
है महिमा अपरम्पार पार नाहिं सुर नर मुनि ने पाया ।
श्रीगंगाजी के तीर नीर पीने को नाग यक आया ॥
फिर श्रीगंगा की आप स्तुती करी गरुड ने मुख से ।
भई प्रसन्न गंगा माता तो वाणी बोलीं यक सन्मुख से ॥
था बहुत कष्ट में नाग छुटाया मैंने इसको दुख से ।
अब तुम इसको बैकुंठ पहुंचावो बसै जाय यह सुख से ॥
ये गरुड ने आज्ञा मानी । तब उडे बडे बलवानी ॥ गंगा की महिमा जानी ।
झटपट पहुंचे उड धाय उसे बैकुंठ के बीच विठाया ।
श्रीगंगाजी के तीर नीर पीने को नाग यक आया ॥
जो ये स्तुती गंगा की कान दे सुने औ मुख से गावै ।
वो भुक्ति मुक्ती संपूर्ण पदारथ मन मांगे फल पावै ॥
गंगा से बडा नहिं और देव कोइ मेरी दृष्टी में आवै ।
हैं धनधन वाके भाग जो दर्शन करै और गंग नहावै ॥
कहैं देवीसिंह भज गंगा । तब तेरा मन होय चंगा ॥ मन बनारसी ने रंगा ।
गंगाजी में तन बोर बोर झलझोर के पाप बहाया ।
श्रीगंगाजी के तीर नीर पीने को नाग यक आया ॥

गंगालहरी अधर–बहेर छोटी ।

सागर की गिनि जाँय लहर गिने जाँय तारे । नाहिं

जाँय गिने श्रीगंगाजी के तारे ॥ षट शास्त्र गिने जाँय गिने जाँय नर नारी । दश दिशा गिनी जाँय सृष्टि गिनी जाय सारी ॥ सिध साधु गिने जांय गिनेजांय आचारी।राजा रानी गिने जांय खलक सरकारी ॥ गिने जांय शाह शाहनी गिने जांय हलकारे । नाहिं जांय गिने श्रीगंगाजी के तारे ॥ गिने जांय नदी नद सिंधु गिने जांय नाले ॥ गिने जांय श्वेत रंग लाल गिने जांय कालेदरखत डाली जांय गिनीगिनी जांय डालें ॥ छत्तीस रागनी राग सकल गिन डाले । गिनते गिनते कई कई हजार शायर हारे ॥ नाहिं जांय गिने श्रीगंङ्गा-जीके तारे । खग चींरद जाते गिने गिने जांय चातर । हरजात गिनी जांय नगर गिने जांय घर घर ॥ कागज स्याही जात गिनी गिने जांय अक्षर । सरदार गिने जांय गिने जांय सागर सर ॥ क्या जाने गंगाने कितने शठ निस्तारे । नाहिं जाँय गिने श्रीगंगाजीके तारे ॥ दिन रात गिने जाँय गिनी जांय तिथी घडी । शायरी गिनी जांय गिनी जाय छन्दकी लडी ॥ शायर कायर जांय गिने गिनी जांय कडी । जंगल खेडा गिन जांय गिनी जांय जडी ॥ यह सत्य सत्य छंद काशीगिर ललकारे । नाहिं जांय गिने श्रीगंगाजीके तारे ॥

यमराजका विष्णुसे श्रीगंगापर फिर्याद करना ।

अब विष्णु से जाकर यमने यही पुकारा । गंगाने बंद कर दिया नरकका द्वारा ॥ लाखों पापीपृथ्वीपै रोज मरते हैं । क्या कहूं मैं वो यक क्षणभर में तरते हैं ॥ मेरे भय से भी जरा नहीं डरते हैं । गंगा के गण उनकी रक्षा करते हैं ॥ बिन भजन किये होता उनका निस्तारा । गंगाने बंद कर दिया नरकका द्वारा ॥ हिन्दू या तुर्क या बेहना डोम कसाई ।

भंगी धोबी हडफोड या होवे नाई। गंगा की लहर जिसे दूर से दी दिखलाई॥ फिर अन्त समय में उसने मुक्ती पाई। दर्शन करते ही तरा महा हत्यारा॥ गंगाने बंद करदिया नरक का द्वारा। जो मेरे दूत पापियों को जांय पकडने॥ तौ गंगा के गण आवें उनसे लडने॥ वो देख देख दूता को लगे अकडने। और मारे बान तनु बीच लगे वो गड़ने॥ मैं लड़लड़ के कई लाख लड़ाई हारा। गंगाने बंद करदिया नरक का द्वारा॥ गंगा से सौ योजन परएक नगर था॥ उस नगर में इक पापी का ऊंचा घर था। वह पाप कर्मकर करता रोज गुजर था॥मरगया तो उसपर पडा एक वस्तर था।गंगाका धोया उसी ने उसको तारा॥ गंगाने बंद कर दिया नरकका द्वारा। यह सुनी बात जब विष्णुजी यम से बोले॥ गंगाकी महिमा कहां लों कोई खोले। इस नेत्र से दरशन श्री गंगाके जो ले॥ बैकुंठ में वह फिर झूले सदा हिंडोले। कुछ बस नहीं मेरा चलेन चलेतुम्हारा॥ गंगाने बंद कर दिया नरक का द्वारा॥ जब मृत्युलोक से गंगा आप सिधारि हैं। तब वह पापी फिर कौन विधि कर तरि हैं॥ उस काल में जो कोई पाप कर्म कर मरि हैं। वह आन आनकर नरक तुम्हारो भरि हैं॥ यमराजजी अब थोडे दिन करो गुजारा। गंगाने बंद कर दिया नरक का द्वारा॥ यह सुनी बात यमराजने घर फिर आये। कुछ हंसे और कुछ कुछ मन में पछताये॥ मन मारके यह गंगा को बचन सुनाये। अब तौ तुम्हारे थोडे दिन रहने पाये॥ कहैं बनारसी कुछ यम का चला न चारा। गंगा ने बंद कर दिया नरक का द्वारा॥

बहेर—छोटी ।

जौलौं पृथ्वी पर है गंगा की धारा । तौलौं यमराजा करि हैं कहा तुम्हारा ॥ मत डरो कोई यमदूत से मेरे भाई । रक्षा करने को है श्रीगंगा माई ॥ जबसे शंकर ने अपने शीश चढ़ाई । तब ईश और जगदीशकी पदवी पाई ॥ शिव बना वोही जिसने यक गोता मारा । तौलौं यमराजा करि हैं कहा तुम्हारा ॥ कुछ जोर न यम को चले पाप नाहिं लागे । औ काल भी देखे दूर से तो वह भागे ॥ जो गंगा के दरशन कर काया त्यागे । वह अमरलोक पुर बसे अलख हो जागे ॥ ये निश्चय करके मानो वचन हमारा । तौलौं यमराजा करि हैं कहा तुम्हारा ॥ चाहे हो पुत्र कुपुत्र तो माता पाले । कुछ कर्म अकर्म न उसके देखे भाले ॥ जो एक बार प्राणी गंगामें न्हाले । तो जन्म मरण के सकल पाप को टाले ॥ गंगा के बल से दल सब यमका हारा । तौलौं यम राजा करिहैं कहा तुम्हारा ॥ मत चलो हमारे मित्र किसी से डरके । निर्भय हो दर्शन श्री गंगाका करके ॥ कहै देवीसिंह गंगाको ध्यानमें धरके । जैहो भवसागर सहजै आप उतर के ॥ गंगा की महिमा जग में अपरंपारा । तौलौं यमराजा करिहैं कहा तुम्हारा ॥

स्तुति श्रीकृष्णके बांसुरी की—बहेर तवील ।

हरि प्रथम बजाई जब बंसुरी राधाबर कुंजबिहारी ने । ध्वनि सुनत अचानक उठि धाई तजि कान सकल ब्रजनारी ने ॥ पडी भनक श्रवण मुरली की जब तब सब सखियां उठि

धाय चलीं । कोउ एक दृग में सुरमा देकर कोउ एक कर मेंहदी लगाय चलीं ॥ कोउ आधी सारी तनढांके कोउ योवन खोलि दिखाय चलीं । कोउ के आधेदांतन मिस्सी कोउ आधाशीश गुंथायचलीं ॥ कोउ लट लटकाय चलीं झटपट लज्जा तज सकल विचारी ने । ध्वनि सुनत अचानक उठि धाईं तजि काज सकल बृजनारी ने ॥ १ ॥ कोउ पांयन से बांधे पहुंची कोउ हाथन पायल डालचलीं । कोउ कण्ठ में धारे किङ्किणि को और कोउ कटि पहिने मालचलीं ॥ कोउके कानन नथुनी लटकन कोउ खोले शिरके बाल चलीं । कोउ के नाकन बाली झुमके जो चलीं तो सब बेहाल चलीं ॥ जब पहुंची कृष्ण निकट सखियां तबही लखी गिरवरधारी ने । ध्वनि सुनत अचानक उठधाईं तजिकाज सकल ब्रजनारी ने ॥ २ ॥ फिर बोले कृष्ण कौन हो तुम कैसे तुमने शृंगार किये । पांयन पहुंची हाथन पायल और कटि मुक्ता के हार किये ॥ कानन में नथुनी और लटकन ये भूषण बिना बिचार किये ॥ नाकन में बाली और झुमके काहे तुमने ब्रज नारि किये ॥ ये सुनत वचन तब दिया जवाब बृज की युवती दो चारी ने । ध्वनि सुनत अचानक उठि धाईं तज काज सकल ब्रजनारी ने ॥ ३ ॥ जब तनकी सुधि कुछ नहिं रही तब भूषण कौन सुधार चले । मन तो अटका इस बंसुरी में दृग से अँसुवन की धार चले ॥ तुम राग बजावो राग करो ऐसा कोउ नहीं विहार करे । मझधार में नाव पडी हमरी तुम बिन को बेडा पार करे ॥ तुम पति हमरे हम दासी सब ये दिया जवाब दुखियारी ने । ध्वनि सुनत अचानक उठ धाईं तज काज सकल बृजनारीने ॥

लख प्रेम सकल ब्रजवनिताका फिर कृष्ण ने मुरली अधर धरी ।
मोहन भी वादिन मोहिगये वह तान जो निकली राग भरी ॥
तन मनकी सुधि कुछ नाहिं रही जब श्रीराधे पर दृष्टि परी ।
कहैं काशीगिरि बोलो सन्तो जय कृष्ण राधिका हरी हरी ॥
ऐसी लीला नहिं करी कोउ जैसी करी हरि अवतारी ने ।
ध्वनि सुनत अचानक उठि धाई तज काज सकल बृजनारीने ॥

स्तुति श्रीकृष्णकी बांसुरी की–बहेर तवील ।

हरि बंसुरी ध्वनि सुन बृजयुवती चलीं झुण्डके झुण्ड मगन मनकर । धन धन्य हरी धन धन्य सखी धन धन्य बंसुरी तन मन लियो हर ॥ मन प्रेम प्रबल अति तन सुन्दर सब वेद श्रुति अस गुण गावें । तज लाज सकल गृह काज छोड चलीं हरि पदपङ्कज मन भावें ॥ हरि आनन चन्द्र चकोर सखी छवि निरख निरखकर सकुचावें । कुछ कहि न सकें चितकी बतियां अति लज्जित मनमें मुसक्यावें ॥ अति व्याकुल गीत मदन मदकर सखि चाहत मिलें मनोहर वर । धन धन्य हरी धन धन्य सखी धन २ बंसुरी तनमन लियो हर ॥ मनकी बांछा लखि मुरलीधर ब्रज युवतिन संग बिहार करें । यक एक हरी यक एक सखी यक एक के कर यक यक पकरें ॥ यक यक मुरली दे गोपिकन को हरि कहते बजावो तबहिं बरें । यह प्रेम कथा सुन हँस हँसकर सुख धरत न बंजत प्राण बिखरें ॥ कहैं बृजयुवती हम कीन्ह कहा अब तुमहीं बजावो नटनागर । धनधन्य हरी धनधन्य सखी धन२ बंसुरी तनमन लियो हर ॥ यकयक तरुवर तर यकयक हरि यकयक युवतिन संग बात करें । इत घर आवें यशुदा के पास उत गोपियन बीच प्रभात करें ॥

हरि ढीठ पकड मुख चूमें और बात सखी सकुचात करें। यह मांगत वर विनती करकर विधना नित ऐसी रात करें॥ जब तिनके पति आवत सब गृह पावत अपनी पत्नी घरघर। धन्यधन्य हरी धन्यधन्य सखी धन२ बंसुरी तनमन लियो हर॥ शिव नारद आदि सकल ऋषि मुनि सब देखत मगन विमान धरें। कौतुक गिरिधर के लख न परें तन मानुष ब्रह्म अखण्ड हरे॥ युवती तनु नारी वेद सुरति रवि लीला ब्रज में खेल करे। हरि पुण्य न पाप दुःख न सुख कछु वेदान्त के कर्ता खेद परे॥ रचि छन्द यह काशीगिरि स्तुति करि मांगत भक्ति पदारथ वर। धन्य धन्य हरी धन्य धन्य सखी धन धन बंसुरी तनमन लियो हर॥

निर्गुण पलङ्ग--बहेर खडी।

चलो आज हिलमिल के सोवें प्रीतम प्यारे के अब संग। सात द्वीप नवखंड के ऊपर उत्तम जिसका बिछा पलंग॥ पंच तत्व से अलग है वो और तीनों गुण से न्यारा है। दिव्य रूप सुन्दर से सुन्दर अपना प्रीतम प्यारा है॥ दरबाजे पर चौकी देता जिसके कुतुब सितारा है। जहां न चन्दा सूर्य अग्नी पवन का तनिक गुजारा है॥ सो मेरे इस शरीर में है उसी से है अपना सत्संग। सात द्वीप नव खंड के ऊपर उत्तम जिसका बिछा पलंग॥ सदैव एक रंग बना रहे नहीं वृद्ध होय नहीं बाला है। उसी सें चन्दा सूर्य अग्नि में प्रकाश और उजियाला है॥ उसी से तू कर नेह अरी बुद्धि वो भोलाभाला है। इस शरीर की सेज में है वो पर इससे निरयाला है॥ गले उसी से लगके सोऊं अपने मन में यही उमंग। सातद्वीप

नव खंड के ऊपर उत्तम जिसका बिछा पलंग ॥ नेह निवार से बुना है वो और कञ्चन के चारों पाये । लगे हैं जिसमें पंच-रंग तकिये तहां सजन वो दरशाये ॥ योग युक्ति से शीश महल में जो प्राणी आये जाये । अपने पति से वही मिले जो प्राणायाम से लव लाये ॥ सोवत जागत चित्त उसी में लगा रहे सुख पावै अंग । सात द्वीप नव खंड के ऊपर उत्तम जिस का बिछा पलंग ॥ पतिव्रता है वही जो कोई ऐसे पतिसे भोग करे । दोनों सुख पावें उससे मिल भोग करे और योग करे ॥ जन्म मरण के दुःख से छूटे दूर जगत का रोग करे । देवीसिंह कहैं आवागमन मिटजाय न मनमें शोक करे ॥ बनारसी सोवै अपने सांई संग और नहावै गंग । सात द्वीप नवखण्ड के ऊपर उत्तम जिसका बिछा पलंग ॥

निर्गुण वर्षा-बहेर खड़ी ।

निरआसरे हैं निरङ्कार जहं अमृत की वर्षा बरसे । निर-आसरे पीवें योगीजन सुधा जिन्हें सद्गुरु दरसे ॥ निरआसरे अनहद घन गरजे नाद बीन बोले चाले । निरआसरे अपनी हरियाली आपी वो देखे भाले ॥ निरआसरे उल्टे बहते हैं ब्रह्मांडमें नद्दी नाले । निरआसरे दामिन दमकें चलें निरआसरे बादल काले ॥ निरआसरे वर्षें आषाढ सावन भादों उसके घर से । निरआसरे पीवें योगीजन सुधा जिन्हें सद्गुरु दरसे ॥ निरआसरे स्वांती की बूंद जब प्राण पपैहा पान करे । तभी मिटै तृष्णा उसकी जब नारायण का ध्यान करे ॥ निरआसरे हो मुक्त उसीसे वह मुक्तीकी खान करे । निरआसरे हैं असोज

जो सारी वर्षा में पान करे ॥ निरआसरे हो गजमुक्ता स्वांती बूंद जब गज पर से । निरआसरे पीवें योगीजन सुधा जिन्हें सद्गुरु दरसे ॥ निरआसरे ब्रह्मा बिष्णु और वो महेश उसमें नहाते हैं । निरआसरे श्री सूर्य किरणोंसे अमृत जल बरसाते हैं ॥ निरआसरे हैं नक्षत्र जो सब वर्ष वर्ष सुख पाते हैं । निर आसरे हैं चन्द्र जडी को सदा पियूष पिलाते हैं ॥ निरआसरे गंगाजल बरसे शिव जो जटा खोलें कर से । निरआसरे पीवें योगीजन सुधा जिन्हें सद्गुरु दरसे ॥ निरआसरे दक्षिण में कञ्चन गायत्री ने बरसाया । निरआसरे हैं शक्ती और हैं निर आसरे उसकी माया ॥ निरआसरे हैं आदि ब्रह्मा ये देवीसिंहने छन्द गाया । निरआसरे हैं बनारसी जिसने घट में दर्शन पाया ॥ निरआसरे वो चिरञ्जीव जिस जिसकी लगन लागी हरिसे । निरआसरे पीवें योगीजन सुधा जिन्हें सद्गुरु दरसे ॥

लोकलोक की बर्षा--बहेर खडी ।

चन्द्रलोक से अमृत बरसे सूर्यलोक से बरसे ज्ञान । आदि ब्रह्म से ब्रह्मज्ञान बरसे सोहं करते हैं पान ॥ इन्द्रलोक से वर्षा बरसे सकल सृष्टि का हो कल्याण । कुबेर के घरसे धन बरसे पावें तो होवे धनवान ॥ आषाढ सावन भादों कुंवार ये चार महीने दो ऋतु जान । स्वाती से बरसे मुक्ता और अनेक औषधी की वो खान ॥ विष्णुलोक से भक्ती बरसे पूजा जप तीरथ और दान । आदि ब्रह्मसे ब्रह्मज्ञान बरसे सोहं करते हैं पान ॥ सत्यलोक से धर्म बरसता सत्य बात बोले गुणवान । स्वर्गलोकसे स्वरूप बरसे सुन्दरताई तनमें जान ॥ शिव के लोक से तप बरसे जो करे सो होवे भानु समान । वेदसे बरसे

गायत्री निश दिन जपते हैं संत सुजान ॥ गोलोक से गोरस बरसे लूटे ब्रजमें श्रीभगवान । आदि ब्रह्मसे ब्रह्मज्ञान बरसे सोहं करते हैं पान । सात स्वर्ग से गंगा बरसे जिसमें सब करते स्नान ॥ यम के लोक से यमुना बरसे वेद शास्त्र ये कहैं पुरान । शक्तिलोक से सरस्वती बरसे उत्तम जिसका है सुस्थान ॥ सो मेरी जीह्वा पै बैठके भाषा में करै वेद बखान । गुण बरसे गणपति लोक से औ विद्या का हो सन्मान । आदि ब्रह्म से ब्रह्मज्ञान बरसे सोहं करते हैं पान ॥ बरसे राग गंधर्वलोक से करैं अप्सरा सुन्दर गान । सदा वो गावें भगवत के गुण सुनने से होवें पवित्र कान ॥ देवीसिंह कहै बनारसी ख्याल से बरसे मीठि तान । कही ये मैंने निर्गुण वर्षा सुनो लगाओ ब्रह्म में ध्यान ॥ सर्व लोक मेरे शरीर में मुझे दिखावें कृपानिधान । आदि ब्रह्मसे ब्रह्मज्ञान बरसे सोहं करते हैं पान ॥

बेहेर—खड़ी (उत्तर) ।

कर्म करै और फल नहीं चाहै यही तो है संन्यास का कर्म । धर्म अधर्म को समझकर देखे इससे परे न कोई धर्म ॥ करैं आत्माको वो ग्रहण और शरीर को त्यागे अभिमान । सोवत जागत सुमिरणमें रहैं सदा रूप देके निवान ॥ निर्बल से नहिं लडैं लडाई उससे जो कोई होवे बलवान । कुबेर उनकी आज्ञामें रहैं भिक्षासे करते गुजरान ॥ जीव ब्रह्मको एक समझते तनिक न उनके मनमें भर्म । धर्म अधर्म को समझकर देखें इससे परे न कोई धर्म ॥ गुह्य ज्ञानकी बात करैं अज्ञानी नाहिं समझन पावें । येही बोलनेमें हैं मौन सब अर्थ तुम्हें हम समझावें ॥ भोजन तो ये क्षुधा करैं हम कुछ नाहिं खाँय और

सब खावें । बैठे रहैं एक आसन पर योग मार्गसे फिर आवें ॥ लोहेसे है कडा और मन मोम से भी है जिसका नर्म । धर्म अधर्म को समकर देखें इससे परे कोई न धर्म ॥ इन्द्रीका जो धर्म है वो वह अपना अपना करती हैं भोग । अपनेको कर्ता नहिं माने योग विषे हैं येही भोग ॥ शरीरका दुख सुख है आत्मा सदा अवध्य है सदा निरोग । जिनका ऐसा ज्ञान उनको एकहि है संयोग वियोग ॥ ब्रह्मज्ञानकी बातका कोई ब्रह्मज्ञानी पावे मर्म । धर्म अधर्मको सम कर देखे इससे परे न कोई धर्म ॥ शरीरको धारे हैं पर वो आप नहीं बनते काया । मायासे हैं वोहिं रहित हैं जिनके बीच योगमाया ॥ देवीसिंह ये कहें कि जिसने श्रीकृष्णका गुण गाया । बनारसी सुन उस प्राणीने सहजहि परमधाम पाया ॥ जिसके मनमें द्वैत नहीं है वो क्या जाने धर्म अधर्म । धर्म अधर्मको समकर देखें इससे परे न कोई धर्म ॥

योगाभ्यास—बहेर नई ।

मैं सत्य २ कहूं हाल सुनो अहे बाल तनका बयान ।
है ब्रह्मांडमें बादशाह ब्रह्मसोई आदि ज्योति भगवान सोयमभगवान ।
जहाँ महत्तत्त्व है पवन करो तुम श्रवण सोई है शक्त ।
रहे पारब्रह्म के सङ्ग वह है अर्द्धंग बात कहूं सत्त ॥
हैं शीशमें श्रीमहादेवजी उन्हींको सेव करो तुम भक्त ।
हैं वही ब्रह्म के खवास हाजिर रहैं वहां हरवक्त ॥
सुन प्यारे जहँ तरह तरह के राग रंग होते हैं ।
सुन प्यारे उस बादशाह के सभी सङ्ग होते हैं ॥
दोहा—हैं चार वो उसके वजीर, उनका जुदा जुदा सुन नाम ।
ब्रह्मा और विष्णु वो रुद्र करे, श्रीगणेश पूरण काम ॥

ये अगम अगोचर छंद हरफ कडीनन्द ज्ञान विज्ञान ।
है ब्रह्मांडमें बादशाह ब्रह्म सोई आदि ज्योति भगवान सोयमभगवान ।
दो नयन हैं चौकीदार बडे हुशियार फिरे दिन रात ।
हैं खबरदार दो कान इधर धर ध्यान खबर ले जात ॥
नासिका मालनी दोई लिये खुशबोई पुष्प अरु पात ।
वह ब्रह्म करे सब भोग कही ये महायोगकी बात ॥
तोडा—सुन प्यारे ये जिह्वा पढके सभी वो हाल सुनावे ।
सुन प्यारे और कंठ गन्धर्व राग रागिनी गावे ॥
दोहा—हैं मुखमें बत्तीस दांत सोई हैं हीरे मोती लाल ।
वह ब्रह्म पहनके भूषण सुन्दर सदा रहै खुशहाल ॥
दिल दलेल रहता संग करै वह जंग युद्ध घमसान । है ब्रह्मांड०॥
पढ मुखसे चारों वेद खोल दिया भेद सो चारों धाम ।
ऋग्वेद है बद्रीनाथ और श्रीजगन्नाथ हैं श्याम ॥
तीसरा अथर्वण वेद न कर निषेध भजो हरनाम ।
सोई रामनाथ रमि रहे गुणीजन लहे सिद्ध हो काम ॥
तोडा—सुन प्यारे हैं यजुर्वेदमें बनी द्वारका पुरी ।
सुन प्यारे कहो अलख निरंजन छोडो बातें बुरी ॥
दोहा—मन घोडे पर असवारी करता ब्रह्म बादशाह राजा ।
हिरदे हाथीको पारब्रह्मने खूब तरहसे साजा ॥
दमदिवान दफ्तर दार बडा पुरकार ज्ञानकी खान । है ब्रह्माण्ड०॥
हैं तरह तरहके महल औ सुंदर पहल हीरोंसे जडे ।
औ सत्तर दोबहत्तर खाने नव दरवाजे खडे ॥
दशमी खिरकीमें आप रहा वो व्याप शब्द ध्वनि झडे ।
बाजे नाद बीन और शंख आपनी शंख रहे निम छडे ॥

तोडा—सुन प्यारे है शीशमहलमें आदि ब्रह्मका बासा ।
सुन प्यारे अपनी इच्छा कर उसने जगत प्रकाशा ॥
दोहा—वह परात्पर है आप और नहिं कोई उससे परे ।
औ अव्यय अविनाशी सन्यासी नाहिं जन्में नहिं मरे ॥
है मुक्ति उसीके युक्ति उक्तिसे किया नाम निशान । है ब्रह्मांड०॥
है पांच तत्त्वका तख्त बना शुभवख्त तीन गुण भरा ।
सब है मायाका खेल उसीमें मेल निरंजन करा ॥
ले तेज ताजको ईश आप जगदीश शीश पर धरा ।
जो धरता उसका ध्यान ज्ञानसे वो भवसागर तरा ॥
तोडा—सुन प्यारे रही कलाकी कलँगी झलक फलकसे दूनी ।
सुन प्यारे उस पारब्रह्मकी अगम ज्योति है धूनी ॥
दोहा—तन तख्तके ऊपर बैठ बादशाह करै अदल इन्साफ ।
चाहें जिसको दे सजा करै वह चाहे जिसको माफ ॥
हर निराकार निराधार वो है अपरंपार उसे पहिचान।है ब्रह्मांड०॥
सब रोम रोम है फौज कररही मौज कटे और बढे ।
कोई पीछेको हटजाय कोई बढजाय कोई जा चढे ॥
हैं दोनों हाथ हथियार करैं सबकार हरीने गढे ।
और शब्द नकारा चोबदार चित नाम नकीब पढे ॥
तोडा—सुन प्यारे ये फ फकीरां पारब्रह्म से मांगे ।
सुन प्यारे नाभीमें सर है भराकमल सत्र लागे ॥
दोहा—बिनलिंग भग पैदा करै सकल संसार ब्रह्म ब्रह्मचारी ।
औ आपी आप है एक नहीं वो पुरुष नहीं वो नारी ॥
हैं हलकारे दो पाँव कहे सब नाम देवीसिंह जवान ।
है ब्रह्मांडमें बादशाहब्रह्म सोई आदिज्योतिभगवानसोयमभगवान॥

योगाभ्यास गोपिनी—बहेर छोटी।

है ऊपर कुआँ औ नीचे जिसके डोरी । पानी भरती पनिहारिन चोरा चोरी ॥ डोरीके ऊपर घिरनी चक्कर खावे । वो मधुर मधुर ध्वनि बोले मोहिं सुहावे ॥ जब तलक वो डोरी कुएँमें आवे जावे । तब तलक कुआँ वो नहीं सूखने पावे॥ उस कुएंके ऊपर खडीं हजारों गोरी । पानी भरती० ॥ मुख बंद कुएंका रहै और पानी दरशे । ओह देखे जिसकी डोर लगी रहै हरसे ॥ जब पनिहारिन कुछ काम न राखे घरसे । तब अमृत जलको छके छुटे सब डरसे ॥ वह नित उठ गागर भरे बनी रहै कोरी । पानी भरती० ॥ जब उलटा डोल वह जाय तो पानी आवे ॥ फिर सींचे अपना बाग अमर फल पावे । है काहेका वोह डोल औ कौन बनावै ॥ जो पूरा योगी होय तो मोहिं बतावे । उस कुएंके ऊपर नहीं चले बरजोरी । पानी भरती० ॥ उस कुएँ पै गंगा यमुना सरस्वती हैं ॥ औ महादेव अविनाशी पारवती हैं । नौ नाथ चौरासी सिद्ध और बालयती हैं ॥ नाना प्रकारकी उसमें बेलपती हैं । है राह वहां की बहुते सांकर खोरी ॥ पानी भरती० ॥ लाखों पनिहारिन एकहै यहां पनिहारा । उस पनिहारेने सब को भर दी धारा ॥ जिसने पाया वह नीर तो जन्म सुधारा । कहै बनारसी उसकी गति अपरंपारा ॥ वो न्हावे उसमें जिसका पंथ अघोरी । पानी भरती पनिहारिन चोरा चोरी ॥

उत्तर—बहेर छोटी।

ब्रह्माण्ड कुआं और श्वासा जिसकी डोरी । जिह्वा पनिहारिन पिये अमीरस चोरी ॥ जो गुरु देवे उपदेश कानमें आप । तो

जिह्वा उसका करती गुपचुप जाप ॥ सुमरन करनेसे दूर होय संताप । ये वो चोरी है जिसमें कुछ नहीं पाप ॥ मन मगन रहै गुण गावे नंद किशोरी । जिह्वा पनिहारिन० ॥ कर प्राणायाम जब उलटा चढावे । तब वह अमृत फिर उसी डोलमें आवे ॥ मुँह उलटा उसका रहे बूँद टपकावे । हो जन्म मरणसे रहित अमर होजावे ॥ मैं सत्य सत्य कहूँ हाल बात सुन मोरी । जिह्वा पनिहारिन० ॥ हैं नव दरवाजे खुले औ दशवां बंद । जहां आदि ज्योति है पूरण परमानंद ॥ जो देह भावको छोड रहै निर्द्वंद । वोह देख उसको कटे जगतका फंद ॥ निशिदिन खेलैं फिर आप ब्रह्मसंग होरी । जिह्वा पनिहारिन० ॥ अनहद बाजोंके बीचमें घिरनी डोले । हर श्वास श्वासपर मधुर मधुर ध्वनि बोले ॥ जो ज्ञानगंगते अपनी आत्मा धोले । वह देखे जो भीतर की आंखें खोले ॥ ज्ञानीसे काल भी नहीं करे बरजोरी । जिह्वा पनिहारिन० ॥ सब सृष्टी है पनिहारिन औ ब्रह्म पनिहारी । है सबके बीचमें उसीका देखपसारा ॥ कहैं देवीसिंह वो सबमें सबसे न्यारा । जिस जिसने उसको लखा वो उसका प्यारा ॥ उस निरमें काया बनारसी बोरी । जिह्वा पनिहारिन पिये अमीरस चोरी ॥

दवा नारायणके नामकी—बहेर खडी ।

हर एक ढूंढते हैं जंगलमें दवा रसायनकी बूटी ।
नारायण है संजीवन भाई वो बूटी हमने लूटी ॥
कोई ढूंढता उस बूटीको जिसमें पारा तुरत मरे ।
कोई खोजता जडीको जो तन कायाके दुःख हरे ॥
बहुत लोग खोदैं पृथ्वीको जो वृक्ष काटते हरे भरे ।

उनको भी फिर यम काटेगा कहे शब्द ये खरे खरे ॥
हरी हरी बूटी है समझो हरी नाम है सबसे परे ।
उस बूटीको जिसने पाया वे भवसागर सहज तरे ॥
राम रसायन पाई हमने और रसायन सब छूटी ।
नारायण है संजीवन भाई वह बूटी हमने लूटी ॥
कोई कहे हम सिंदरफ़ मारें और काढें गंधकका तेल ।
कोई देखते जडी बिरंगी कोई ढूंढते अम्मर बेल ॥
हमने सबको देखा यारो ये तो हैं सब झूठे खेल ।
अमर नामहै दत्त निरंजन उसको अपने मनमें मेल ॥
मनको मारके बना ले कुस्ता जो गुजरे रह दिलपर झेल ।
तनधो शोधके शुद्ध करो तुम तजो झूठ और तजो झमेल॥
जौन शख्स फूंके धातुको उनके हियेकि हैं फूटी ।
नारायण है संजीवन भाई वह बूटी हमने लूटी ॥
कोई मारते अभरख तांबा कोई फूंकते हैं हरताल ।
हमने अपने मनको मारा मिले हमें गोविंद गोपाल ॥
कोई कहै हम चांदी मारें जिससे हो कुछ धन और माल ।
इन कर्मोंको जो कोई करता उसका होता हाल बेहाल ॥
कोई कहे हम सोना मारें और करें पैसोंको लाल ।
ठग ठगके लूटें दुनियाको उसको एक दिन ठगेगा काल ॥
बहुत घोटते खरलमें धातू संतोंने काया कूटी ।
नारायण है संजीवन भाई वो बूटी हमने लूटी ॥
कोई मारते हैं कलई को जिसमें होवे पुष्ट शरीर ।
घरको फूंकके तबाह किया वो अमीरसे होगये फकीर ॥
साधूका नाहिं धर्म जो कि मारें धातू करके तदबीर ।

कहे देवीसिंह हरी हरी कहो यह जिह्वा हैगी अकसीर ॥
खाक सारकी जबां रसायन इसमें है हर एक तासीर ।
जवांसे वह मुर्देको जिलादे जवांसे देडाले जागीर ॥
बनारसी ये कहैं हमारी राम नाम हैगी घूँटी ।
नारायण है संजीवन भाई वह बूटी हमने लूटी ॥

कामधेनु—बहेर लँगडी ।

यह काया है कामधेनु कर प्रेम प्रीति हमने पाली ।
सभी पदारथ हैं इसमें इच्छा फल देने वाली ॥
मगन रूप मस्तक झलके संतोष सुमतके सींग खडे ।
नहीं वो मारें किसीसे नहीं मरें और नहीं लडे ॥
हीरे मोती लाल और हरएक रतन रसनामें जडे ।
कृपा और करुणाके दोनों कान नहीं छोटे न बडे ।
त्रय गुणके हैं तीन चिन्ह कहिं श्वेतश्याम कहिंहै लाली॥
सभी पदारथ हैं इसमें इच्छा फल देने वाली ।
दया धर्म के दृग दोनों जैसे रवि शशिका उजियाला ।
बनी नासिका नाम निश्चय रूपी सबसे आला ॥
अपार महिमाका मुख उसमें मंत्र रूप फिरती माला ।
अपनी कायाका हमने कामधेनु करके पाला ॥
जस जिह्वा और दिव्य दंत कल्याण कंठ रेखा काली ।
सभी पदारथ हैं इसमें इच्छा फल देने वाली ॥
परमतत्त्वकी बनी पीठ और उग्रतेजका उद्र भला ।
परमारथकी पूछ हिलरही करे हर एक कला ॥
चतुराईके चारों थनमें सम दृष्टि सम दूध ढला ।
चरचारूपी चरण चारों सुंदर सबसे अबला ॥

जगमगात हिरदेमें जगमग ब्रह्म जोतिकी उजियाली ।
सभी पदारथ हैं इसमें इच्छा फल देने वाली ॥
हमने धार हुही धीरजकी अब अपना उद्धार करा ।
छान छानके दूधको हिरदेकी हांडीमें भरा ॥
ज्ञानसे गरम किया इसको संजीवन जामन बीच धरा ।
जमा दहीको मथा छल छिद्र छाछ नहिं रही जरा ॥
मुक्तिरूप माखन पाया हुई पूरी मनसा मनवाली ।
सभी पदारथ हैं इसमें इच्छा फल देने वाली ॥
जो मांगे सो पावे इससे ऐसी काया कामधयन ।
विश्वरूप है जो देखे इसको उसको होय चयन ॥
बनारसी कहे इसे देखकर खुशी हमारे हुये नयन ।
रंग रंगकी पढे वाणी और बोले मधुर बयन ॥
सबकी मनशा पूरण करती कोऊ नहिं फिरे खाली ।
सभी पदारथ हैं इसमें इच्छा फल देने वाली ॥

ख्याल वेदांत---बहेर जीकी ।

सबके बीचमें है और देखाई नहीं दे गोविंद ।
हुआ दुनियां को मोतियबिन्दजी ॥
भीतरकी गई फूट देय बाहरसे देखलाई, कहें बाप हैं ये माई जी ।
मरजावे तो कोई साथ नाहिं चले बहन भाई, या चाचा हो ताईजी ॥
झूठ बात नाहिं बोले बोले सत्य बचन ये रिंद ।
हुआ दुनियाँको मोतियाविन्दजी ॥
गोदीमें लडका औ दिंढोरा शहरमें फिरवाते, मसल जो है वोही हम गाते जी । इसी तरहसे घटमें हर बाहर खोजन जाते मिलै नाहिं उलटे फिर आतेजी ॥

मुसलमान मक्के जा भटके हिंदू भटके हिंद ।
हुआ दुनिया को मोतियाबिन्दजी ॥
अरे मूढ अज्ञान तू क्यों भटकै है चारों धाम, तेरे है घटमें आत्मारामजी । उन्हें तू क्यों नहिं देखे जो हिरदेमें करे विश्राम, नाम जप तौ तेरा हो नामजी ॥
घटमें आत्मा सूझपडे नहिं योंहिं गमाई जिन्द ।
हुआ दुनियाको मोतियाबिन्दजी ॥
जगन्नाथ और बद्रीनाथ सब हम भी फिर आये, कृष्ण इस हिरदेमें पायेजी । देवीसिंहने ज्ञान ध्यानके सदा छंद गाये' रामके चरणों चितलायेजी ॥
बनारसी ने ज्ञानदृष्टिसे दिया जगत्को नींद ।
हुआ जगतको मोतियाबिन्दजी ॥

शुद्ध वेदांत—बहेर जीकी ।

नहिं करो मैं ग्रहण और कुछ त्याग न हमसे होय ।
न पाया कछु न दीना खोय जी ॥
नहिं रैनिको सोवें हम और दिनमें नहिं जागें, लडाई लडें न हम भागेंजी । ज्ञान अग्निमें दग्ध करें हम कर्मन तन दागें, न देवें दान न कुछ मांगेंजी ॥
सुख पावें तो हंसें नहीं दुखमें देवें रोय ।
न पाया न कछु दीना खोय जी ॥
नहिं रैन वहां होय और जहां दिनका नहीं प्रकाश, हमारा निशिदिन वहीं निवासजी । नहीं किसीसे दूर बसे हम नहीं कोईके पास, न स्वामी बने न कोई के दासजी ॥

अनहोनी होनीसे परे हम सोहं पद है सोय ।
न पाया कछु न दीना खोय जी ॥
नहीं शत्रुसे विरोध अपना मित्रसे नहीं सनेह, नहीं हम देह हैं नहीं विदेहजी । बनमें अपना वास नहीं और नहीं हमारे गेह, न चाहे धूप न चाहे मेहजी ॥
मात पिता दारा सुत भगिनी, सब हैं और नहिं कोय ।
न पाया कछु न दीना खोय जी ॥
धर्ममें हम नहिं पुण्य चाहैं, और अधर्ममें नाहिं पाप, न दे वरदान न कोई को शापजी । जिधर को देखे एक ब्रह्म सर्वज्ञ रहा है व्याप, अलखको लखा अलख भये आपजी ॥
बनारसी कहै एक है वह मत समझो उसको दोय ।
न पाया कछु न दीना खोय जी ॥

श्रीकृष्ण और शिवजीकास्वरूप वर्णन-बहेर जीकी।

शिव गौराको सब कोई कहते ये दोउ एकी अंग ।
कृष्ण शिव हम कहते अर्द्धंग भला ॥
आधे शीशपर जटा औ आधे लटके लट काली ।
आधे शिव आधे बनमाली जी भला ॥
आधे मुख बेदांत और आधे वेदकी ध्वनि आली ।
करें आपसमें बोला चाली जी भला ॥
दोहरा--कहें गौरजा सुनो लक्ष्मी देखो पतिका रूप ।
ऐसा रूप नहीं देखता सो देखो आज स्वरूप ॥
आधे शिर मुकुट आधे शिर गंग भला ।
आधे शीशपर चन्द्र और आधे चंदनका है खौर ॥

इधर मुरछल और उधर हो चौंर भला।
आधे मुख माखन और आधे धतूरेका है कौर॥
आधा अंग श्याम आधा अंग गौर भला।
दोहरा--आधे अंगमें भस्म लगी आधे अंग लगी सुगंध॥
आधा अंग है क्रोधवंत और आधा अंग आनंद।

आधे अंग वस्त्र आधा आधा अंग नंग भला॥
आधे मुख मुरली बाजे आधे मुख बाजे नाद।
न उनका अन्त न उनका आदि भला॥
आधे मुख अमृत और आधे हलाहलका है स्वाद।
दूर करैं क्षणमें विघ्न विषाद भला॥
दोहरा—आधे अंगमें सर्प और आधे अंगमें भूषण हेम।
आधा अंग है कर्मरहित और आधे अंगमें नेम॥
आधा ब्रह्मचर्य आधा शरभंग भला।
आधे कमरमें लंगोटा आधे कटकछनी कसे॥
दोनों अंग एक अंगमें बसे भला।
आधा आसन गरुडपर आधा नंदीगणपर लसे॥
ये शोभा देख मेरा मन हँसे भला।
दोहरा—अर्ध स्वरूप है महाकाल और आधा पालनहार॥

काशीगिर ये कहै उनकी महिमा अगम अपार।
देख सुर नर मुनि होगये दंग भला॥

एक रूपमें चाररूप—बहेर लँगडी।

आधे अंगमें कृष्ण लक्ष्मी आधेमें शिव पारवती।
एक अंगमें रूप हैं चार ये वर्णन करैं यती॥
एक समय मैंने भक्ती कर कहा हरीहरसे भाई।

एक अंगमें मुझे तुम चार रूप देव दिखलाई ॥
शिवके बायें गौर दाहिनी श्री लक्ष्मी यदुराई ।
भक्तके वस हैं प्रभू यह महिमा वेदोंने गाई ॥
ऐसाई रूप दिखाया मुझको लक्ष्मीवर और गवरपती ।
एक अंगमें रूप हैं चार ये वर्णन करैं यती ॥
श्रीकृष्णके मोर मुकुट शिवका जूडा बंध रहा विशाल ॥
गौरको सोहें हार फूलोंके रमाके मुक्तामाल ।
शिव धारें भस्मी माथेपर श्रीकृष्णके केसर भाल ॥
रमाको सोहें वह भूषण दिव्य गवरके लपटे व्याल ।
चार वेद चारों की अस्तुति करें न पावें पाव रती ॥
एक अंगमें रूप हैं चार ये वर्णन करैं यती ।
श्रीकृष्णके शंख हाथमें शिवजी करमें लिये कपाल ॥
रमा बजावें वो चुटकी गौरी दो करसे दें ताल ।
मनमोहनकी मुरली बाजे शिवका डमरू बजे धमाल ॥
गौरके माथेपै चंदन रक्त रमाके बिंदी लाल ।
शिव योगी हरि ब्रह्मचारी लक्ष्मी कुँवरी और गौर सती ॥
एक अंगमें रूप हैं चार ये वर्णन करैं यती ।
श्रीकृष्णके चक्र सुदर्शन शिवजी करमें लिये त्रिशूल ॥
पार्वतीके हाथमें खड्ग रमाके कमलका फूल ।
देवीसिंहने कहा ख्याल यह वेद पुराणोंके अनुकूल ॥
बनारसीके छंदमें कभी न हरगिज निकले भूल।
जो इस पदको सुने औ गावैउसकी होजाय तुर्त गती ॥
एक अंगमें रूप हैं चार ये वर्णन करैं यती ।

हरिहरात्मक मूर्ति—बहेरजीकी ।

श्रीकृष्ण शिव एक रूप हैं रहते एकी संग,हरि हर दोनों हैं

अर्द्धांग भला। आधा अंग है श्रीकृष्णका आधा शिवका जान, कहा ये परम पुरातन ज्ञान भला ॥ कृष्ण करैं शिवका स्मरण शिव धरें कृष्णका ध्यान, आत्मा एक एक स्थान भला।

दोहा–शिवजी साधें योग, कृष्णजी करते भोग विलास। योग भोग दोनों एकी, दोनोंका ब्रह्ममें बास ॥ वह पहने भूषण वह रहैं नंग भला। कृष्ण पढें गीता और शिवजी पढें आप वेदांत, वो करते क्रोध वो रहते शांत भला॥कृष्ण करैं क्रीडा ब्रजमें शिव रहैं सदा एकान्त दोनोंकी सुंदर शोभा कान्ति भला ॥

दोहा–शिवका सुमिरण करते करते कृष्णजी होगये श्याम ॥ शिवजी होगये श्वेत जपा करते हैं कृष्ण का नाम ॥ ऐसा नहीं कोई का सत्संग भला ॥ कृष्ण बजावें मुरली मुख धर शिवजी गाते गान ॥ निकले दोनों में एकी तान भला ॥ कृष्ण भरें भंडार जगत के शिव देते वरदान, करैं दोनों जनका कल्याण भला।

दोहा–कृष्ण करैं वैराग तीव्र और शिव धारैं सन्यास। वो उनके सेवक हैं और वो हैंगे उनके दास ॥ करैं राक्षसों का दोनों ढंग भला ॥ कृष्ण सोवते शेषकी सेज्या पर करके आराम, करें शिव मशान में विश्राम भला। कृष्ण करैं शिवकी सेवा शिव करैं कृष्णका काम ॥ रटो दोनों याम भला ॥

दोहा–शिव पूजें विष्णु के चरण करैं कृष्ण लिंग पूजा। हरी हरातम है यक सुरती और नहीं दूजा। उनके शिर मुकुट उनके शिर गंग भला ॥ त्रयी गुणसे शिव रहित कृष्ण हैं तीन लोकसे परे, भजो चाहे हरि भजो चाहे हरे भला। शिवने त्रिपुरासुर को मारा कृष्ण ने कौरव मारे, ये दोनों कोऊ से नहीं डरें भला ॥

दोहा--शिवके संग रहैं सदा योगिनी और भूत वैताल ॥ कृष्ण लिये ग्वालनी संगमें ब्रजके सारे ग्वाल । वो पीते दूध वो पीते भंग भला ॥ कृष्ण बने गौराजी शिवजी बने लक्ष्मी आप । न उनको पुण्य न उनको पाप भला ॥ कृष्ण हरैं बाधा तनकी शिव दूर करैं संताप, मेरा मन दोनों में रहा व्याप भला ॥

दोहा--कृष्ण बने नंदीगण शिवजी गरुड रूप लें धार ॥ वो उनपर बैठे और ओ होते उनपर असवार ॥ ये दोनों एक हैं और बहु रंग भला ॥ कृष्ण पारथी पूजैं शिवजी पूजैं शालिग्राम ॥ बना दोनों का सुन्दर धाम भला । शिवकी काशी बनी बना श्रीकृष्ण का गोकुलग्राम । देवीसिंह दोनोंका ले नाम भला ॥

दोहा--शिवका शिवाला बना कृष्णका है ठाकुरद्वारा । बनारसी ये कहैं मुझे दोनों का नाम प्यारा ॥ उठें हैं मनमें यही तरंग भला ॥

लक्ष्मी गौराका--अभेद छंद ।

वोही लक्ष्मी वही गौराजी चार वेदमें देखा । शक्ति है एक जुदे दो वेष भला ॥ विष्णुके संग रहै सदा लक्ष्मी शिव के संग पार्वती । लखी नहिं जाय दोनों की गती भला ॥ लक्ष्मीके पति इन्द्रजीत हैं गौरा के पति यती । लक्ष्मी कुँवारी गौरा सती भला ॥

दोहा--लक्ष्मी को चढैं पुष्प और गौरा को चढैं बेलपती । उनकी बुद्धि निर्मल है और है उनकी मती सुमती ॥ रूप दोनों का अलख अलेखा भला । लक्ष्मी के मस्तक पर सोहै सुन्दर

बेंदी माल ॥ गौरी के मस्तक चन्द्र विशाल भला ॥ लक्ष्मी के उर पड़ा हार है जिसमें मोती लाल । गौरी के कंठ मुंड की माल भला ॥

दोहा—लक्ष्मी के दोनों करमें हैं कडे जड़ाऊ पडे । गौरी के कर सोहैं कंगन दोनों के भाग हैं बडे ॥ लिखा विधना ने ऐसी रेख भला । लक्ष्मी के सेवक हैं सो सब करत सुंदर भोग॥ गौरी के सेवक साधें योग भला ॥ लक्ष्मीको जो सुमरे उसको कभी न व्यापे सोग । गौरिको भजे सो रहे निरोग भला ॥

दोहा—क्षीरसिंधुमें बसे लक्ष्मी नारायणके पास ॥ गौरि बसे शिव संग जहां सुंदर पर्वत कैलास । भक्तजन लेते उन्हें परखे भला ॥ लक्ष्मीका शीतल स्वभाव है जल और चन्द्रमा जान । गौरिको समझो अग्नि भानु भला ॥ लक्ष्मीके हैं पासमें हीरे लाल मोतिनकी खान । गौरिकी विभूती है धनवान भला ।

दोहा—लक्ष्मीमें बसें गवर गवरमें करैं लक्ष्मी वास । सुनो इधर धर ध्यान तुम हमसे इनकी उनकी रास ॥ है उनकी कुंभ और उनकी मेष भला । श्रीलक्ष्मी पहने तनुके ऊपर बस्तर लाल।गवरजा ओढ रहीं मृगछाल भला । कहीं भार्या बनी कहीं जननी हो करैं प्रतिपाल ॥ बनी कहीं अंतकालका काल भला ।

दोहा--ब्रह्मा लिखते थके शेशजीने नाहिं पाया पार । बनारसी येकहैं कहूंमें कहांतलक विस्तार,मुझे दोनोंकी भक्ति विशेष भला॥

ख्याल अद्भुत-बहेर जीकी ।

जो चाहे सो करै प्रभु उसकी गति लखी न जाय । कर्मके लिखेको देय मिटाय जी ॥ कितनेही मरगये तो उनको पलमें दिया जिलाय । काळको देखै कालै खायजी ॥ लूला चढै पहाडके

ऊपर बिना पौरुषसे से धाय ॥ एक तृणमें त्रैलोक समाय जी ॥ सेतु बांधके समुद्रमें हरि पत्थर दिये तराय । कर्मके लिखे को देय मिटाय जी ॥ मूरख चातुरको देता एक पलमें वेद पढाय, जिये ओ सदा जो विषको खाय जी । मीन धूपमें मगन रहै नहीं पानी उसे सुहाय ॥ कहो कोई इसके अर्थ लगायजी । लोहा कंचन बने जो उसको पारस देव छुवाय, कर्मके लिखेको देय मिटायजी ॥ विधवा होय सुहागिन उपजे पुत्र तो करै सहाय । आगको पानी देय जलायजी ॥ भूखा भोजन नहीं करे और पेट भरा सब खाय । शेरको भेडी देय भगायजी ॥ भृंगी कीडेको अपने सम लेता आप बनाय ॥ कर्मके लिखेको देय मिटायजी । मार्कंडेयजी बारा बरसकी आपे उमर लिखाय ॥ लिखी विधनाने बहुत चितलायजी । सो तो होगये चिरंजीव मैं सत्य सत्य कहूं गाय ॥ प्रभूके आगे कर्म लजायजी । बनारसी कहै नरसे प्राणी नारायण होजाय । कर्मके लिखेको० ॥

सिद्धान्त--बहेर जीकी ।

चार फरिस्ते हुकममें हाजिर रहैं मेरे दरबार । लिये वो चार चार तलवार जी ॥ जिधर इशारा करूं उधर दल डारें मार । करें वो दुष्टोंको मिसमारजी ॥ आंख उनकी लाल बनी रहैं उतरे नहिं खुमार । है ताकत उनमें बिना सुमारजी ॥ कोई न [illegible] बचैं जडें जिस वक्त वो कातिलवार, लिये वो चार चार तलवारजी । कोई अमर छेडे औ करै कुछ मुझ से दारोमदार, ॥ दिखावें उसीको वोः फिर दार जी । हत्यारोंका तनसे शिर करदें दम्में नादार ॥ हुकुम ये है दावरदादारजी । मशरिगसे मगारिबतक घुमें चारों तरफ वो चार लिये वो चार,

चार तलवारजी ॥ कोई नहीं जीते उनसे जो लड सो जावै हार । करैं वो चारों तरफ गोहारजी ॥ जिस जिसको वो मारें उसका कर डालें आहार । चोट उनका क्या सके सहार जी ॥ एक हाथसे काटैं वह काफिरकी लाख करतार ॥ लिये वो चार चार तलवारजी । नाम एकका सुनो शनिश्चर दूजे मंगलाचार ॥ तीसरेको समझे एतवार जी । एक बृहस्पति सदा सुखी रहैं मेरे चारों यार । उतारैं कुल पृथ्वी का भार जी ॥ मेरे कहे से दुर्बुद्धी का कर डालें संहार । लिए वो चार चार तलवारजी ॥ कांप उठै आसमां जिस घडी मारें वह किलकार । मरैं सब दुनियां के मक्कारजी ॥ बनारसी कहैं तीनलोक में मचै वह जयजयकार । बचै नहिं कोई भी बदकार जी ॥ सत युग को दे राज और कलयुग को डारे फटकार । लिए वह चार चार तलवार जी ॥

श्रीकृष्णके लट की स्तुति ।

श्री गिरिधर ने लट काली लटकाली आनन पर आला । अति विचित्र लटकी लटक लटक कर अमृतरस को चाखें । ज्यों सर्प ओस जिह्वा से चाटके प्राण को अपने राखें ॥ शशि मंडलकीसी शोभा उपमा वेद भी ऐसी भाखें । राधे सखियन से कहै घूमकर मनको मेरे सुलाखें ॥

तोडा—मोहनी अलकन में बसी-छवि भांति भांतिकी । मानो बने कृष्ण महेश पहनकर नागनकीसी माला । श्री गिरिधर ने० ॥ कोई बांबी में से लपक चलें कोई गिडली मार के बैठे । कोई उगलके मनको खडे और कोई संगनारके बैठे ॥

कोई फन से फुफकारें और कैंचली उतार के बैठे। मानों विष भरे भुजङ्ग वह मलयागिरि विचार के बैठे॥

तोडा–कोई श्वेत लाल कोई पीले रंग रंग के सर्प रंगीले। रोली केशर चन्दनसे चर्चके अद्भुत रंग निकाला।श्रीगिरिधर.॥ उपमा एक और कहूं जो सुनो कोउ कवि से कही न जावै। मानों कजली वन से सुगन्ध नाना प्रकार की आवै॥ एक तो मन उलझा काव्य में दूजे कृष्ण की लट उलझावै। जो कुञ्ज कुञ्ज में परदेशी भूला नहिं रस्ता पावै॥

तोडा–हरिकी लट भूलना वीरा-भूले ब्रजके नरनारी। जो प्रेमजाल में फँसा वहीं वह बसा न गया निकाला। श्री गिरिधर ने०॥ अति उत्तम छवि अलकन की सुन्दर श्याम घटा दरसे। जब कृष्ण करें स्नान तो मोती झूम झूमकर बरसें॥ वो घुंघरवारे केश छाये चहुँ देश बसे अम्बरसे। स्तुति कर करके थके शेष और महिमा को जी तरसे॥

तोडा–जो इस पदको कोइ गावै।वह भुक्ति मुक्ति सब पावै। कहै बनारसी भज राम कृष्ण गोविन्द और श्री गोपाला। श्री गिरिधर ने लटकाली लट काली आनन पर आला॥

ख्याल–अधर।

कान्हा ने लट लटका के लट का लटका नया निकाला। श्रीकृष्ण की अलकें अलख केशसे शेष लजत धरणीधर। घन घटा नकर घटत निशा अति छकत कहत धरणीधर॥ काली काली लट कला करै चित हरत तकत धरणीधर। रसना सहस से रटन रटन दिन रात थकत धरणीधर॥

तोडा–करसे गहकर छिटकाई-नागिन देख लहराई। काली

ने शंका खाई-लेखनी लिखना लिखत अलख अद दिखा कृष्ण की आला । कान्हा ने० ॥ दृग चञ्चल चतुर हरीके नेत्र लागत खंजनते नीके । करें लहर लकीरें लाल लगत कारें अंजनते नीके ॥ गड़ गये कलेजे आय धाय के चन्द्रकिरण ते नीके । रससागरते अति सरस हरन चित लागत हरिनते नीके ॥

तोडा--शर चलत नेत्रते तीखे-जद लड़त दृगनते दीखे । हरि चरित्र कैसे सीखे ॥ कसकत हिरदे दिन रैन नयन ते ऐन कलेजा शाला । कान्हा ने० ॥ आनन की षटदश कला दिखते हीरे लाल लजाये । दर्शन कारण षट दर्शन आसन त्याग त्यागकर आये ॥ शङ्कर इन्द्रादिक सहित चरण नंगे कर करके धाये । श्रीकृष्ण की लीला देख छन्द आनन्द से कथ कथ गाये ॥

तोडा--तन चन्दन हार चढ़ाये--अक्षत ले शीश लगाये । हिरदे चरणन चित लाये ॥ नन्दलाल कंस के काल काट दिया अन्धकार का ताला । कान्हा ने० ॥ हर निरधार चार कर त्रयी ताल के करता । षट राग तीस रागिनी नारायण तीन तालके करता ॥ हैं सच्चिदानन्द आनन्द काल कालके करता । है आदि अनादि अगाध कृष्ण अक्षय अकाल के करता ॥

तोडा--कहै काशीगिरी हरि हर हर--दिन रैन ध्यान हिरदय धर । रज चरणन की अंजन कर ॥ कहा अधर छन्द धर ध्यान ज्ञान दे दान नन्द के लाला । कान्हा ने० ॥

श्रीकृष्ण के विश्वरूप की मूर्ति ।

नन्दनंदन ब्रजराज की छवि अब कोटिन भानु प्रकाश करें । उद्दित करें चन्द्र कोटिन और कोटिन तम का नाश करें ।

कोटिन शीश नेत्र कोटिन अरु कोटिन कर्ण हरी के हैं । को-टिन हैं नासिका हरी की कोटिन वर्ण हरी के हैं ॥ कोटिन मुख कोटिन जिह्वा कोटिन गति शरण हरी के हैं । कोटिन भुजा उदर कोटिन अरु कोटिन चरण हरी के हैं ॥

शैर—कोटिन हरी के मुकुट हैं कोटिन हैं तिलक भाल । कोटिन हरी के कण्ठ हैं कोटिन हैं मुक्तामाल ॥ कोटिन मणी हरी की हैं कोटिन हरी के लाल । कोटिन हरी के भाव हैं कोटिन हरी की चाल ॥ कोटिन पग पाताल छुवे अरु कोटिन आश अकाश करें । उदित करें० ॥ कोटिन नाम हरी के हैं और कोटिन गाम हरी के हैं । कोटिन कर्म हरी के हैं और कोटिन काम हरी के हैं ॥ कोटिन ग्राम हरी के हैं और कोटिन धाम हरीके हैं । कोटिन शैव हरीके हैं और कोटिन वाम हरीके हैं ॥

शैर—कोटिन हरी के वेद हैं कोटिन हरी के मन्त्र । कोटिन हरी के शास्त्र हैं कोटिन हरी के तन्त्र ॥ कोटिन हरी की पूजा हैं कोटिन हरी के यन्त्र । कोटिन से हरी अन्त्र हैं कोटिन से हैं निरन्त्र ॥ कोटिन को सुख देय हरी कोटिन के मन में त्रास करें । उदित करें० ॥ कोटिन इन्द्र हरी के हैं और कोटिन राज्य हरी के हैं । कोटिन हैं गन्धर्व हरी के कोटिन साज हरी के हैं ॥ कोटिन माया हरी की हैं कोटिन समाज हरी के हैं । कोटिन मित्र हरी के हैं कोटिन मुहताज हरी के हैं ॥

शैर—कोटिन हरी के गज हैं और कोटिन खडे तुरङ्ग । कोटिन हरी के रथ हैं और कोटिन हैं रथ के संग ॥ कोटिन हरी के वेष हैं कोटिन हरीके रंग । कोटिन हरी की लहर हैं कोटिन उठें तरङ्ग ॥ कोटिन हरी वैकुण्ठ करें चाहै कोटिन

कैलास करें । उदित करें० ॥ कोटिन हैं गोपिका हरी की कोटिन ग्वाल हरी के हैं । कोटिन धेनु हरी की हैं कोटिन गोपाल हरी के हैं ॥ कोटिन सिन्धु हरी के हैं और कोटिन ताल हरी के हैं । कोटिन रत्न हरी के हैं और कोटिन थाल हरी के हैं ॥

शेर—कोटिन हरी के दैत्य हैं कोटिन हैं देवते । कोटिन हरी के नाम को हैं मुख से लेवते ॥ हरी के नाव हैं कोटिन कोटिन हैं खेवते । कोटिन हरीके चरण को हैं करसे सेवते ॥ देवीसिंह कहै बनारसी के घट में हरी निवास करें । उदित०॥

श्रीसीताजी के वियोग में—बहेर लङ्गडी ।

श्री सीताजी के वियोग में भये राम दुर्बल तन छीन । निर्बल होयके लडे रावण से प्रेम के प्रभु आधीन ॥ उठें तौ कांपें चरण खडे होवें तो लरजै सकल शरीर । धनुष वह तानें तौ छुटै चुटकी से धीरज में तीर ॥ क्रोध से कांपें तीनलोक और जरै राक्षसन की सब भीर । रावण मन में डरै देखै जो क्रोधित श्री रघुवीर ॥

शेर—प्रथम तो उनका राज पाट योग में छूटा । औ खानो पान सिया के वियोग में छूटा ॥ अवध का वास गया तात स्वर्ग को पहुंचे । भरत का साथ भी देखौ वो शोगमें छूटा ॥ शरीर तौ पांजर सब बन गया मन रह सीता में लवलीन । निर्बल० ॥ दिवस को होय संग्राम निशा को करें कहौ किस विधि हरि शैन । मुख ढांपें तौ झरें झरना से प्रभुके वह दोउ नैन ॥ करें जो मुख से बात तौ निकलें जिह्वा से कुछ के कुछ वैन । लषण सुनें तो लख प्रभु वियोग में हैं अति बेचैन ॥

शैर—यह कष्ट देखके लक्ष्मण ने यों विचार किया । मरेगा कल वह रावण मिलेगी आन सिया ॥ काल के वश हैं वोही जो कि प्रभु से झगडा । हमारे राम से लडकर ये जगमें कौन जिया ॥ दुर्बल भये तो मन नहिं हारा याहीते लेह सब छीन । निर्बल० ॥ भोर होत मुख धोय किया जब रामचन्द्रजी ने स्नान । पूजन विधि से करी फिर उठा लिया वह धनुष औ बान ॥ चले साथ देखने युद्ध लछमन भ्राता और श्रीहनुमान । पहुँचे रण में जहां रथपर बैठा रावण बलवान ॥

शैर—राम को देखके रावण ने धनुष को ताना । औ मारे पांच बाण तब ये राम ने जाना ॥ है इसकी आज मौत काल ने इसको घेरा । तो रामजी ने भी अपना धनुष संधाना ॥ अङ्ग तो दुर्बल था ही पर सीताकी शक्ति थी परवीन । निर्बल० ॥ आसौज का था मास और वह शुक्लपक्ष दशमी का दिन । राम औ रावण के उस दिन चले बाण कोटिन गिन गिन ॥ रावण के बाणों को राम काटें तृण वत पल पल छिन छिन । रावण के शिर कटें उपजें इतने में छिप गया दिन ॥

शैर—हृदय में अपने वह रखता था ध्यान सीता का । सो उसके मन से गया पल में ज्ञान सीता का ॥ उसी समय में वह मारे जो बाण दश प्रभु ने । रहा इस जगत में देखो वह मान सीता का ॥ काटके उसके दशों शीश फिर अपने ही में कर लिया लीन । निर्बल० ॥ गिरा वह रथ से पृथ्वी पर तो कहा कहां है कहां है राम । इस कारण से मिला वह अन्त समय में उत्तम धाम ॥ किसी बहाने अन्त समय में राम राम

का कहे जो नाम । कहे देवीसिंह मिले वह राम में और पावे आराम ॥

शेर-यह छन्द राम का अपने जो मुख से गावैगा । तरैगा वह भी इसे जो सुनै सुनावैगा ॥ यह पूरी होगई रावण के मारने की कथा । वोही समझैगा इसे जो कि लव लगावैगा ॥ रामचन्द्र ने लेकर सीता लंक विभीषण को देदीन । निर्बल०॥

स्तुति शिवजी के त्यागकी—बहेर खडी ।

धन धन भोलानाथ तुम्हारे कौडी नहीं खजाने में । तीन लोक बस्ती में बसाये आप बसे वीराने में ॥ जटा जूट का मुकुट शीश पर गले में मुण्डों की माला । माथे पर फूटासा चन्द्रमा कपाल का कर में प्याला ॥ जिसे देखकर भय व्यापै सो गले बीच लपटा काला । और तीसरे नेत्र में तुम्हारे महा प्रलय की है ज्वाला ॥ पीने को हरवक्त भांग और आक धतूरा खाने में । तीनलोक० ॥ चर्म शेर का वस्त्र पुराना बूढा बैल सवारी को । तिस पर तुम्हरी सेवा करती धन धन गौर वि-चारीको ॥ वह तो राजाकी पुत्री और ब्याहीगई भिखारीको । क्या जानें क्या देखा उसने नाथ तेरी सदारी को ॥ सुनी तुम्हारे ब्याह की लीला भिखमङ्गों के गाने में । तीनलोक० ॥ नाम तुम्हारे अनेक हैं पर सब से उत्तम है नंगा । याही ते शोभा पाई जो विराजती शिरपर गंगा ॥ भूत प्रेत बैताल साथ में यह लश्कर सब से चंगा । तीनलोक के दाता होकर आप बने क्यों भिखमंगा ॥ अलख मुझे बतलाओ मिलै क्या तुमको अलख जगाने में । तीनलोक० ॥ यह तो सगुण का स्वरूप है निर्गुण में निर्गुण हो आप । पल में प्रलय करो छिन

में रचना तुम्हें नहीं कुछ पुण्य न पाप ॥ किसी का सुमिरन ध्यान न तुमको अपना ही करते हो जाप । अपने बीच में आप समाये आपी आप में रहे हो व्याप ॥ हुआ मेरा मन मगन यह सिठनी ऐसी नाथ बनाने में । तीनलोक० ॥ कुवेर को धन दिया और तुमने दिया इन्द्र को इन्द्रासन । अपने तनुपर खाक रमाई नागों के पहने भूषण ॥ मुक्ति कि भुक्ति दाता हो मुक्ति भी तुम्हारे गहे चरन । देवीसिंह कहै दास तुम्हारा हित चित से नित करै भजन ॥ बना-रसी को सब कुछ बख्शा अपनी जवां हिलाने में । तीन० ॥

ख्याल शिवजी का निर्गुण-बहेर खडी ।

शिवजी तो कुछ सूम नहीं जो धन को धरें खजाने में । सारी बसुधा बांट दई मशहूर है यही ज़माने में ॥ राई भर चांदी नाहिं सोना हीरे मोती लाल नहीं । जिह्वा से सब कुछ देदें जिसको वह हो कंगाल नहीं ॥ विभूति में जो कुछ उन के वह कुवेर के घर माल नहीं । दीन के ऊपर दया करें कोई ऐसा दीन दयालु नहीं ॥ भागिरथ को गंगा देदी मुक्ति मिलै नहाने में । सारी वसुधा० ॥ १ ॥ वेद न जानें भेद कुछ उन का पुरान पावै पार नहीं । शास्त्र न जानें गति कुछ उनकी शिवसा कोई अपार नहीं ॥ जहँ पर है उनका आसन वहां किसीका है विस्तार नहीं । रवि शशि अग्नि पवन भी तो कोई उनके पहुँचे द्वार नहीं ॥ निर्गुण में तो ब्रह्म वोही हैं सगुण हैं लिंग पुजाने में । सारी बसुधा० ॥२॥ तीन लोक के बीच में कोई नहीं है ऐसा बरदानी ॥ कोई नहीं योगी ऐसा औ कोई नाहिं ऐसा ध्यानी ॥ भिक्षुक बेष न देखो

उनका वह स्वरूप है निरवानी ॥ सर्प न लिपटे जानो तन में वह तो भक्त सब है ज्ञानी ॥ खुलै आंख जब भीतर की तब आवे दरशन पाने में ॥ सारी बसुधा बांट दई मशहूर है यही जमाने में ॥ ३ ॥ निन्दामें स्तुती करे तो इसी में वह होते हैं मगन ॥ रूप अमंगल मंगलदायक उनकातो उलटा है चलन ॥ प्रेम से उनको गाली दो तो उसीको समझे हैं भजन ॥ जो कोई उनको जहर चढावे उसीको वह देते, अन धन ॥ और कुछ उनको ख्वाहिश नहिं वह मगन हों गाल बजाने में ॥ सारी बसुधा बांट दई मशहूर है यही जमानेमें ॥ ४ ॥ शशि न उनके लिंग न उनके चरण न उनके औ सब है । ऐसा कोई बिरला जन जान उसे नहीं व्यापे फिर भय ॥ देवीसिंह यह कहै अरे नर कहु तू मुख से शिव जय ॥ बनारसी जय जय करने से शिवस्वरूप में होगया लय ॥ राजा हिमाचल दंग होगये पारवती के ब्याहने में ॥ सारी बसुधा बांटदई ॥०॥

शिवजी का बाँटना -बहेर खडी ।

धन धन भोलानाथ बांट दिये तीन लोक इक पलभर में ॥ ऐसे दीन दयालु हो दाता कौडी नहीं रखी घर में ॥ प्रथम दिया ब्रह्मा को वेद वो बना वेद का अधिकारी ॥ बिष्णुको देदिया चक्र सुदर्शन लक्ष्मीसी सुन्दर नारी ॥ इंद्र को देदी कामधेनु और ऐरावतसा बलकारी ॥ कुवेर को सारी वसुधा का कर दिया तुमने भंडारी ॥ अपने पास पत्र नहीं रक्खा रक्खा तो खप्पर करमें ॥ ऐसे दीनदयालु हो दाता कौडी नहीं रखी घरमें ॥ अमृत तो देवतोंको दिया और आप हलाहल

पान किया ।। ब्रह्मज्ञान देदिया उसे जिसने कुछ तुम्हरा ध्यान किया ॥ भागीरथ को गंगा देदी सब जगने स्नान किया ॥ बडे बडे पापियों का तुमने इक पलमें कल्यान किया ।। आप नशेमें चूर रहो और पियो भांग नित खप्पर में ॥ ऐसे दीन-दयालु हो दाता कौडी नहीं रखी घरमें ॥ रावणको लंका देदी और बीस भुजा दश शीश दिये ।। रामचन्द्र को धनुष बाण वो तुमहीं तो जगदीश दिये ॥ मन मोहन को मोहनी देदी मोर मुकट तुम ईश दिये ॥ मुक्ति हेतु काशी में बास भक्तों को बिश्वा बीस दिये ।। अपने तनुपर वस्त्र न राखो मगनरहो बाघम्बरमें। ऐसेदीनदयालहो दाताकौडीनहींरखीघरमें नारद को दई बीन और गंधर्वों को राग दिया ॥ ब्राह्मण को दिया कर्मकाण्ड और सन्यासी को त्याग दिया ॥ जिस पर तुम्हरी कृपा हुई उसको तुमने अनुराग दिया ॥ देवीसिंह कहै बनारसी को सबसे उत्तम भाग दिया ।। जिसने पाया उसीने दिया महादेव तुम्हरे बर में ।। ऐसे दीनदयाल हो दाता कौडी नहीं रखी घर में ॥

ख्याल श्रीहनुमानजी का पंचमुखी कवचका महात्म्य इसके पढने से होगा।

बहरे खडी-तीन तीन सिसरेका चौक।

प्रथम मुख की स्तुति ॥ १ ॥

महावीर मस्तकम् ललित सेंदूरम् कुमकुम् अगरम् ।।
ज्ञानवान अभिमान रहित निरअहंकार हर योगी ।
इन्द्रीजीत कामना त्यागी नच कामी नच भोगी ॥
रूप आनन्दम् परमानन्दम् महावीर मस्तकम् ॥

द्वितीयमुखकी स्तुति ॥ २ ॥

दशकंधर अभिमान हनन् लंका दाहन बजरंगी ।
पूरणब्रह्म अखंड सच्चिदानंद साध सतसंगी ॥
नाम उचारत नित गोविंदम् ।
महावीर मसतकम् ललित सेंदूरम् कुमकुम् अँगरम् ॥

तृतीयमुखकी स्तुति ॥ ३ ॥

रक्तम् चीर गदा कर शोभित पुष्पमाल उर धारन ।
दैत्यन दलन हनन दुष्टन दल सकल शत्रु संहारन ॥
शब्द ध्वनि गर्जंत हरि हरि बम् बम् बम् बम् ।
महावीर मस्तकम् ललित सेंदूरम् कुमकुम् अगरम् ॥

चतुर्थमुखकी अस्तुति ॥ ४ ॥

शिवशंकर सर्वज्ञ स्वरूपम् विश्वेश्वरम् विशालम् ।
परमवैष्णव शुद्ध आत्मा कालंकाल अकालम् ॥
बहु विस्तारम् मम किम् वर्णम् ।
महावीर मस्तकम् ललित सेंदूरम् कुमकुम् अगरम् ॥

पञ्चमुखकी स्तुति ॥ ५ ॥

जटाजूट मकराकृत कुण्डल रत्न जडित तनु भूषण ।
पंचमुख सुखदायक दाता देओ पति निर्दूषण ॥
छंद काशीगिर शास्तर कथितम् ।
महावीर मस्तकम् ललित सेंदूरम् कुमकुम् अगरम् ॥

इति पांचो मुखकी स्तुति सम्पूर्ण ।

विश्वरूपी बाग ।

विश्वरूप खिल रहा बाग जिसमें आदमकी गुलजारी ।
रंग रंग के फूल हैं तरह तरह की फुलवारी ॥ पूरब पश्चिम

उत्तर दक्षिण ये चारों दीवार बनी। हरेक तरफसे नदियोंकी हैं छूटी नहर घनी॥ सात सिन्धु सोइ तालाब सातों सबका मालिक वही धनी। चाहे बनावे चाहे एक पलमें करदे फनाफनी॥ विश्व बागके भीतर उसके कुदरतकी फैली क्यारी। रंग रंगके०॥ नवखंडोंके महल बनाये दशों दिशाके दश द्वारे। त्यार किये हैं बागमें चौदा भुवन न्यारे न्यारे॥ आसमानकी छत्त लगाई जिसमें जड़ दिये हैं तारे। गरज गरज घन करै छिड़काव छोड़ते फौवारे॥ चांद और सूर्य चारों तरफकी करते हैं चौकीदारी॥ रंग रंगके०॥ चमत्कारका चमन लगाया पारब्रह्मके आपी आप। हरज़रे में झलकता हरशयमें वो रहा है व्याप॥ इसी बागके भीतर बैठे ऋषी मुनी सब करते जाप। कोई गावते भजन और कोई रहे पंच अग्नि ताप॥ साधु सन्त करैं शैर बागमें परमहंस या ब्रह्मचारी। रंग रगके०॥ कल्पवृक्ष औ मलियागिर वो फलें हैं उसमें अमृत फल। कभी न सूखे कि जिसमें ज्ञान रूप है गंगाजल॥ देवीसिंहने कहै हरि कृपासे जिसकी हो बुद्धि निर्मल। ऐसे बागमें अमर वो होय न आवे उसे अजल॥ विश्व बागको मालिक है वोही श्रीकृष्ण गिरवरधारी। रंग रंगके०॥

भक्तियोग-बहेरजीकी।

भजन हरिके प्यारे वो तो होवैंगे कालके काल, काल को क्या समझें मालजी। निरंकार जो भजे उसे नाहिं व्यापे भव जंजाल, उसीकी रचना तीनौं कालजी॥ आठ याम ले नाम उसीका शेषनाग पाताल, चतुरपद पक्षी जपते व्याल जी। भीड़ पड़ि जहँ जहं सन्तो पर हुऐ आप रछपाल, बचाये ब्रजमें गोपी ग्वालजी॥

दोहा-सदा भक्तके काजको, उठ धाये तत्काल ।
ग्राहसे गजको छुटादिया, ऐसे नन्दके लाल ॥
जो कोई उनको सुमरे उनका होय न बांका बाल ।
कालको क्या समझे वो मालजी ॥

पूछा तेरा राम कहां जब गिर्द अग्नि दो बाल, दिखाया त्रास वो खड्ग निकालजी । उसने कहा है मुझमें तुझमें सब श्रीगोपाल, करे वो सब जगका प्रतिपालजी ॥
दोहा-खम्भ फाड़ प्रकटे ऐसे, और धारा रूप विकाल ।
हरिणाकश्यपु दैत्यको, मार किया पैमाल ॥
उसकी यादमें जो रहते वो सदा बजावें गाल ।
कालको क्या समझें वो मालजी ॥

श्रीकृष्णके मित्र सुदामा ज्ञानी द्विज कंगाल, पढ़े थे दोनों एकी शालजी । शरण गये वो हरिके होगये एकपलमें निहाल मिल निर्धनको वो धनमालजी ॥ उसकी याद बिन प्राणी जैसे सूखा जल बिन ताल, नाम जप साईंका रहु लालजी ।
दोहा-बिना भक्ति नहिं मुक्ति है, कहाँ तक कहूं अहवाल ॥
नाम लियेसे तरगये, कई पापी चंडाल ।
लाख चाटले रोज जो रक्खे उनके नामकी ढाल ॥
कालको क्या समझे वो मालजी ॥

उसकी यादमें मीरा नाची देदे दोऊ ताल, गावती फिर प्रभूके ख्यालजी । उसकी यादमें वह ताकत है कोटि व्याधि दे टाल, कभी नहिं आवे उसे बवालजी ॥ देवीसिंह कहै बनारसीको उसका हुआ विशाल, देखता दिलमें वही जमालजी ।
दोहा-निहुरके चलना जहाके अन्दर, यह है बड़ा कमाल ॥

जिस दरख्त पर मेवा होवे झुकै उसीकी डाल ।
नाम प्रभूको प्यारा भक्तोंको नहीं होय जवाल ॥
कालको क्या समझे वो मालजी ।

परमेश्वर मिलनेका मार्ग-बहेर खड़ी ।

नरतन पाय जतन कर ऐसे जिसमें वो करतार मिलै । ऐसी उत्तर योनि पदारथ फिर नाहिं बारंबार मिलै ॥ बने हैं पूरब कर्म कुछ ऐसे उसीकी है यह प्रभुताई । जो तूने संसार में है यह सुन्दर नरदेही पाई ॥ पायके ऐसी कंचन काया भजन करो हरिको भाई । जन्म जन्मको बिगडी बात सब इसी जन्ममें बनजाई ॥ सुख दुख भोग पिता औ माता और सकल संसार मिले । ऐसी उत्तम ० ॥ मिला तुझे अनमोल रत्न ये अब उपाय तू ऐसा कर । त्याग सकल कामना जगतकी हित चितसे हरि नाम सुमरि ॥ वासुदेव भज नारायण तू कृष्ण कृष्ण और कहो हर हर । जीते ये भवसिन्धु जगतसे क्षणमें जाये पार उतर ॥ जन्म मरण नाहिं हो तेरा नाहिं जगमें फिर अवतार मिलै । ऐसी उत्तम ० ॥ कर विचार मनमें अपने तू किस कारण जगमें आया । किस कारण संसारमें तुझको मिली है यह कंचन काया ॥ जिसने कुछ नाहिं भजन कियो नाहिं मुखसे गुण गोविन्द गाया । सुन्दर जन्म गंवाय वृथा वो अन्तकाल फिर पछताया ॥ लख चौरासी पड़े भरमता यम दूतोंकी मार मिले । ऐसी उत्तम ० ॥ दुर्लभ ये जामा नरका है मिला बड़े संयोगोंसे । देवीसिंह कहता है सदा समझायके ये सब लोगोंसे ॥ भजन करो आनंद रहो और छुटो दुःख सुख भोगोंसे । हर्ष सदा मनमें व्यापे और शुद्ध चित्त रहो

सोगों से ॥ बनारसी कहै और जन्ममें नहिं उसका दीदार मिले । एसी उत्तम ० ॥

ज्ञाननौका बहेर खडी ।

भवसागर है कठिन कि इसमें और नहिं कोई खेवैया । दीनदयालु जो कृपा करैं तो पार लगै मेरी नैया ॥ गहरी नदिया थाह मिले नहिं चारों तरफ से उठै बयार । माया मोहका जाल पड़ा उसमें किस बिधिसे उतरै पार ॥ चारों तरफ जो देखा तो कुछ नजर न आवे वारापार । कितने ही गये डूब इसीमें गोते खाखाके मंझधार ॥ भवसागरके पार उतारै कोई नहीं ऐसा भैया । दीनदयाल जो ० ॥ चलै जो आंधी भवसागरमें तब उसमें वोह उठे तरंग । लोक कुटुम्ब के सब रोवें और कोई न देवे उसका संग ॥ कालबली जब आकर घेरै कोई न जीतै उससे जंग ॥ जो कोई हरिका भजन करै तो मौत भी उससे होजा दंग । सब कोई हैं अपने स्वारथी क्या बाबा और क्या भैया ॥ दीनदयाल जो ० ॥ भयके इसमें भंवर पड़े और चिन्ता की चादर न्यारी । काम क्रोध और लोभ मोहके मगर मच्छ करते ख्वारी ॥ सातों समुद्र जरासे हैं औ भवसागर सबसे भारी । उससे पार वोही उतरै जो नाम जपै गिरवरधारी ॥ अन्तकालमें पापी रोवैं दीनदयालु जो कृपा करैं तो पार लगै मेरी नैया । सो होवे तो हजार मांगे हजार हो तो ढूंढे लाख ॥ लाख होय तो करोड चाहे कहै बढ़ै कछु उसमें साख । दया धर्म नहिं हिरदे में तो अन्तमें जलके होजा राख ॥ बनारसी कहै खुन्नीलाल तू नाम सुधारक मनमें चाख । राम नाम को सुमिरण कर मन मुखसे कहु तू कन्हैया । दीनदयालु जो ० ॥

शरीरका भेद—बहेर लंगडी ।

आजकल नहिं कहा किसाने और न कोई कह सकेगा अब । आसमान हो तले जमीं ऊपर इसका कहो क्या मतलब ॥ अगर तुम्हें मालूम होय तो कहो मायने इसके सब । आईनेमें शकल नजर नहिं आये इसका कौन सबब ॥ और बात मैं कहूं आपसे इसके तंई सुनना साहब । उलटा दरिया चलै कहां पर इसका ज्वाब दीजियेगा कब ॥ अचरज ये मैं रोज देखता हूं इन आंखोंसे बेदब । आसमान हो ० ॥ ऐसी बात बतलाये ओही जिसको दिखलाई देहै रब । अव्वल माया मामामें जोरू जोरू में माकी छब ॥ आगे इसके एक बात है यही मुझे है बडा अजब । है आजुरदा औ कभी न होवे जिसके ऊपर पडै गजब ॥ इगानसे देखा मैने तो मुझे नजर आया जब तब । आसमान हो ० ॥ नीचेको ऊंचा समझे औ जीसे इलमका होंगे कसब । आदम होके याद न भूले आपको पहिचानै तब ॥ आपको जो पहचाने ओ आपी आप है अब औ जब । अल्ला अकबर आदम ईदम मशरिक मगरिब अरब खरब ॥ अन्दर दिलके देख अरे नादान तुझे गर हो कुछ ढब । आसमान हो ० ॥ अगर्चे जो तुम सुनो तो मैं सच कहता हूं उसका करतब । आदि कुंवारी बनी रहैं और ऊ॰ जहानसे करैं कसब आनके अपने खसमको मारा बनी सोहागिन लाल ओ लब ॥ उसे नहीं कोइ कहे रांड सुन बनारसी ओ बडी चरब । इसके मायने वही बतावे जो कोइ प्रभुका करैं अदब ॥ आसमान हो ० ॥

होली निर्गुण—बहेर छोटी ।

होलीमें इज्जत रहै तो खेलो होली । ओ होली मत

खेलो जो होय ठठोली ॥ पांचों भूतोंको मारके तू पिचकारी । रंग हरीके रंगमें इन्हें तो हो हुसियारी ॥ सरबोर उसीमें करदे काया सारी हरवक्त नाच और गाव तू गुण गिरधारी । तू ज्ञान गुलालसे भरलें अपनी झोली ॥ ओ होली ० ॥ तुम काम क्रोध कुमकुमको अपने मारो । वोह लडो लडाई कालसे भी नहिं हारो ॥ दो प्रेमकी गाली प्रभुको उसे पुकारो । ओ कबीरके संग आत्मज्ञान बिचारो । जो ज्ञानी हो तो पहिचानो ये खोली ओ होली ० ॥ तुम ज्ञान अग्निमें लोभ ओ मोह जलावो । लव उस मालिकसे अपनी आप लगाओ ॥ तुम तत्व ताल दे मृदंग बीन बजाओ । अनहद बाजेको सुनो तो उसको पाओ मत कीचडमें तुम गिरो जो आवे डोली ॥ ओ होली ० ॥ जलगई होलिका प्रहलादका आंच न आई । एसी होली खेलो तो होय बडाई ॥ कहे देवीसिंह तुम सुनो हमारे भाई । है बनारसीकी सब अद्भुत कविताई ॥ सुन मिनौचेहरकी बात रंगीली भोली । ओ होली ० ॥

लावनी वाल्मीकिजीकी—बहेर जीकी ।

चाहे जपो तुम मरा मरा चाहे तुम भजलो राम । उलटा सीधा रामनाम हर विधसे आता कामजी ॥ त्रेतायुगमें एक पुरुष करता था बटमारी । कितनेंहूँ को मारा उसनें पाप किये भारीजी ॥ हत्या करते उसको सूरत होगई हत्यारी । बहुत किये अपराध बोझसे पृथ्वी तक हारी । तोडा-धर्म रायभीजीमें डरे ॥ यह पातक कोई कहां धरे । अब यह पापी कैसे तरे ॥

तोडा कभी न सुमिरा रामको. ना दया करी नहिं दान ।

कितनोंही का धन हरा, मारी कितनों की जान ॥ कौन पुण्य से होगा इसका वाल्यमीकीसा नाम । उलटा सीधा रामनाम हर विधिसे आता कामजी ॥ १ ॥ एक समय नारदमुनिजी ने किया उधर फेरा । वाल्यमीकिने आकर नारदमुनिकोभी घेराजी ॥ नारदमुनिने कहा वचन सुनले तू यह मेरा क्यों मुझको मारेहै ॥ क्यों मुझको मारेहै मैंने किया है क्या तेराजी तोडा-जब पापी बोला ललकार । मेरा तो है एही कार ॥ कितनोहीको डाला मार ।

दोहरा-नहीं मेरीको वृत्त है करता मैं खेती । कुटुंब अपना पालताहूं लूटमारसेती । क्या जाने कितनोंसे मैंने किया यहां संग्राम ॥ उलटा सीधा रामनाम हर विधि से आता कामजी ॥ २ ॥ वाल्मीकिको फिर नारदमुनिने यह समझाया । तैंने धन लूटा सो तेरे कुटुंबने खायाजी ॥ दौलतका हिस्सा तेरे सब घरने पाया । पाप जो तैंने किया उसे नहीं किसीने बटवायाजी । दारा सुत भगिनी भाई ॥ सबसे तू कहो यह जाई । पाप यह मेरा लो बटवाई ॥

दोहरा-जो वो तेरे पापको लेवैं सब बटवाई । तो तू मुझको मारियो अपने गृहसे आई ॥ इतना सुनके वाल्मीकि उठ धाया अपने धाम । उलटा सीधा रामनाम हर विधसे आता कामजी ॥ ३ ॥ चलते चलते वाल्मीकी पहुंचा अपने डेरा । भाई बंधु अरु लोग वहांके सब उसने टेरेजी ॥ सुन सुन के सब उठ ठाढे भये औ बैठे चौफेरे । बाल्मीकिने कहा बचन यह सुनलो सब मेराजी ॥ जो जो धन मैं हर लाया । सो सो सब तुमने खाया । पाप मेरा नाहिं बटवाया ॥

दोहरा-अब तुम मेरे पापको सब कोई बटवावो। मैं लाऊं धन लूटके तुम घर बैठे खाओ॥ जितनी दौलत हरूंगा मैं सब तुम्हींको दूंगा दाम। उलटा सीधा रामनाम हर विधिसे आता कामजी॥ ४॥ वाल्मीकिका सुना बचन सब बोले नर नारी। क्या जाने हम तैंने है कितनोंकी जान मारीजी॥ हमैं पापसे काम नहीं है तुही पाप धारी। किये से अन्त समयमें होती है ख्वारीजी॥ वाल्मीकि होके लाचार। छोड दिया अपना घरबार। मनमें करता शोच विचारजी॥

दोहरा-भाई बिरादर त्यागके, अब चलूँ गुरूके पास। वो चाहै तो पापका, एक पलमें करदे नाश॥ अब घरसे कुछ काम नहीं वसूंगा मैं इस ग्राम। उलटा सीधा०॥ ५॥ नारायणने करी कृपा जब हुआ उसे वैराग। जितने खोटे कर्म थे उनको छिनमें दीना त्यागजी॥ नारदमुनिके पास आया और जागे उसके भाग। दिया शीश उनके चरणोंमें किया बहुत अनुरागजी॥ कहा गुरूजी सुनो बचन॥

दोहरा-भाई बिरादर कुटुम्बके कोई नहीं बांटे पाप। तुम अपनी कृपा करो काटो मेरे संताप॥ तुम हो गुरू मैं हूं चेला शिर झुका किया परणाम। उलटा सीधा रामनाम हर विधिसे आता कामजी॥ ६॥ फिर नारद मुनीने देखा अब हुआ इसे कुछ ज्ञान। रामनाम रटनेसे होवैगा इसका कल्यानजी॥ वोही मंत्र उपदेश दिया और बताया उसको ध्यान। इसी नामसे पाप तेरे होवेंगे पुण्य समानजी॥ अब तेरा हो गया भला। किसीका मत काटियो गला॥ पाप तेरे सब दिये जला॥

दोहरा-बाल्मीकिने रामनामका मनमें जाप करा। राम

रामके नाममें निकलै मरामरा । बड़े शोचमें वह आया पग लिये गुरूके धाम ॥ उलटा सीधा० ॥ ७ ॥ बाल्मीकिने कहा गुरूजी रामनाम गया खोय । मैं कहताहूं राम राम जी तो मरामरा मुख होयजी ॥ नारद मुनिने कहा जपे हैं यही नाम सब कोय । मरा मरा कहनेसे रामजी सब दुख डालै धोयजी ॥ बाल्मीकि निश्चय करके । बैठ गया आसन भरके ॥ उलटा नाम हिरदे धरके ।

दोहरा-नारद मुनि तो चलदिये, बैठा ध्यान लगाय । मरा मरा रटने लगा गई भूख प्यास बिसराय ॥ वर्षाऋतु जाडा झेड़ गरमीमें सही अति घाम । उलटा सीधा ॥ ८ ॥ शरीरकी सुधि नहीं रही और तनुपै जमगई घास । और आश सब छोड लगाई मरामराकी आशजी ॥ जब तो रामने करी कृपा आ पहुंचो उसके पास । बालमीकिके घटमें अपना किया रामने बासजी । ब्रह्मज्ञान देदिया उसे ॥ अपनी आत्मा किया उसे । लगा कंठसे लिया उसे ॥

दोहरा-जब तो ताली खुल गई भये बालमीकि चेतन । कंचनसा तनु बन गया पायो निर्गुण दर्शन ॥ बालमीकिके घटमें रामने किया आप विश्राम । उलटा सीधा ॥ ९ ॥ मरा मरा कहने से होगये बालमीकि ज्ञानी । रामनाम रामायणकी कथा कही हैगई सिद्ध बानी ॥ दश हजार बरसोंकी बात आगे सब पहचानी । भूत भविष्यत् वर्तमान ये तीनों राह जानी । उलटा नाम जपा भाई ॥ तिसपर यह पदवी पाई । बालमीकि की कविताई ॥

दोहरा-विष्णुसहस्रनाममें श्रीरामनाम है सार । जो कोई

सुमिरे रामको उनका होता उद्धार ॥ सकल कामना मिलें उसे जो जपै नाम निष्काम । उलटा सीधा० ॥ १० ॥ मरा मरा कहनेसेही ऐसे पापी तरते । राम नाम जो रटै हैं वो क्या जानै क्या करतेजी ॥ रामनामते समुद्रमें अबतक पहाड़ तरते । वोभी होजाय रामनामको जो हिरदे धरतेजी । रामनामकी सब माया ॥ पार किसीने नहिं पाया । यही नाम चहुँदिशि छाया ॥

दोहरा-जो कोई ऐसे छंदको गावे सुने दे कान । भुक्ति मुक्ति पावे वही और हो उसका कल्यान ॥ कहै देवीसिंह बनारसी है रामनाम सरनाम । उलटा सीधा० ॥ ११ ॥

लावनी अहंकारनाशिनी ।

जो कहता हम करते वो दुःख भरता है । जो करता जगके कार वही करता है ॥ जो कहता हमने वेद पढे हैं चारी । उसको कहते हरी इसकी मति है मारी ॥ कोई कहता हम क्षत्री हैं हम ब्रह्मचारी । सब अहंकारमें फँसे हुए नर नारी । जो अहं बुद्धिको तजै करै ना चारी ॥ उसको मिलते इक पलभरमें गिरधारी । जो निष्फल पूजा करै वही तरता है ॥ जो करता० ॥ १ ॥ जो कहता हम तौ नित्य दान करते हैं उसका परमेश्वर नहीं मान करते हैं ॥ जो देत वस्तु मनमें गुमान करते हैं । वो स्वर्ग छोड़ फिर नरक पान करते हैं ॥ जो अहंकार तजि हरिका ध्यान करते हैं । उसका स्वामी आदर अरु मान करते हैं ॥ जो करता है सो वही वही धरता है । जो करता० ॥ २ ॥ जो कहता हम हैं बड़े कवीश्वर ज्ञानी । उसको हरि कहते इसकी मिथ्याबानी ॥ कोई कहता हम हैं बड़े वीर बलवानी । उसको हम कहते यह तो है

दहक्कानी ॥ कोई बनके बैठे राजा और कोई रानी । इस पृथ्वी पर हैं बड़े बड़े अभिमानी ॥ इस अहंकारसे अपना दिल डरता है । जो करता० ॥ ३ ॥ जो कहता मैंने बड़ा जंग जीता है । वह मरता है फिर कभी नहीं जीता है ॥ जिस जिसने मनमें अहंकार जीता है । वह दो दिनमें दुनियां से हो बीता है ॥ अब देवीसिंह दिल फटा हुआ सीता है । जो कर्म किया प्रभुके अर्पण कर देता है ॥ कहै बनारसी हरिभक्त नहीं मरता है ॥ जो करता० ॥ ४ ॥

वचन पलटनेवालेका जोहाल होताहै यह सही लिखा

बहेर छोटी ।

जो जबांसे कहिके सखुन पलट जाते हैं । शिर दगाबाजके अकसर कट जाते हैं ॥ जो कहते हैं वो करते हैं पूरे नर । चाहे इसमें हो जाय कलम धडसे सर ॥ मैं कहूं तू झूठा कौल किसीसे मतकर । जो कहिके सखुनको नहीं करैं वो हैं खर ॥ जो झूठ बोलते हैं वो फिरते दरदर । कह सत्य बच[illegible]तन बलि विक्रम राजा गये तर ॥ जो कायर हैं वो रनते हट ज[illegible]मीकिं हैं । शिर दगाबाजके० ॥ १ ॥ जो कलाम पै अपने [illegible]ते हैं साकर । तौ लाकलाम वोह खालक मिलता आकर ॥ [illegible] मत झूठ किसीसे बोल यह नरतन पाकर ॥ सब बुरा कहैंगे [illegible] कहूँ तुझे समझा कर । जो करै दगा अपने घरमें बुलवाक[illegible]र ॥ ले उसका बदला सांई उससे आकर । नाहिं मिलै हशरत[illegible]का जब दिल फट जाते हैं ॥ शिर दगाबाजके० ॥ २ ॥ पूरोंका सखुन नाहिं लाखोंमें टलता है । सर सखुनके आगे शूरोंका चलता है ॥ जो सच्चा है वह कुटुम्बसे फलता है । उसका

चिराग उसके आगे बलता है ॥ जो करके दगा यारोंके तईं छरता है । वो नरक कुण्डकी आतिशमें जलता है ॥ सच्चोंके आगे झूठे घट जाते हैं । शिर दगाबाजके० ॥ ३ ॥ जो कलाम को झूँठा मुखसे फरमाते । वो अन्त समय दोजखमें डाले जाते ॥ कहै देवीसिंह जे साईंसे लव लाते । वह भवसागर यक लहजा में तर जाते ॥ छंद बनायके तो सचा मिसरा गाते । हरनाम सुमिरके सभामें चंग बजाते ॥ कहै बनारसी हम सखुनमें डट जाते हैं । शिर दगाबाजके० ॥ ४ ॥

भगवान्से विनय-बहेर छोटी।

कर दया दासके कष्ट हरो गिरिधारी । करुणानिधि करुणा करो मैं शरण तुम्हारी ॥ सब संकट मेरे दूर करो अब स्वामी । ऋद्धि सिद्धि से मुझे भरपूर करो अब स्वामी ॥ अपने अब मुझे हुजुर करो तुम स्वामी । चरणोंकी मुझे तुम धूर करो अब स्वामी । यह काम तो मेरा जरूर करो अब स्वामी ॥ भक्तोंमें मुझे मशहूर करो अब स्वामी ॥ हो निर्भय पूरणब्रह्म आप अवतारी । करुणानिधि करुणा० ॥ १ ॥ सब संतोंको आपी तुम ने तारा है । ग्रहसे यह गजको तुम्हींने उबारा है ॥ प्रहलाद की खातिर नरसिंह तनु धारा है । नखसे नाभीको चीर असुर मारा है । मुझको वो नाम श्रीनारायण प्यारा है ॥ प्रभु तेरे विन अब कोई न हमारा है । क्यों मेरे वास्ते करी देर बनवारी ॥ करुणानिधि करुणा० ॥ २ ॥ पांचों पंडवोंका साथ किया है तुमने । ब्रजमें सखियनसे रंग किया है तुमने ॥ काली को नाथके तंग किया है तुमने । कंसासे जाय फिर जंग किया है तुमने ॥ हर एक राक्षसको तंग किया है तुमने । सब असुरों

को चौरंग किया है तुमने ॥ अब मेरे पांच भूतोंको मार मुरारी । करुणानिधि करुणा० ॥ ३ ॥ सब कसूर मेरा माफ आप अब कीजै । शिर चरणोंमें अपने मेरा नाथ लीजै ॥ यह उम्र सदा दिन रात घड़ी छीजै । कर मेहर प्रभू कुछ भक्ति में अपनी दीजै ॥ एक अरजी मेरी गरीबकी सुन लीजे । दिल भक्तिमें तुमरी सदा हमारा भीजै ॥ हरि हरलो तनुकी पीर हुआ दुख भारी । करुणा करो० ॥ ४ ॥ तुम जो चाहो सो करो आप यदुराई । राईसे गिरि करदेते गिरिसे राई ॥ है सत्य सत्य सांची तेरी प्रभुताई । तरगये वही जिसने तुमसे लव लाई ॥ कहै देवीसिंह जिन तुम्हारी महिमा गाई । वह भवसागर के पार उतर गया भाई ॥ कहै बनारसी यह राखो लाज हमारी । करुणानिधि करुणा० ॥ ५ ॥

ख्याल निर्गुण चौकड-बहेर शिकस्ता ।

बहुत दिनोंपर बिछी है चौसर सम्हलके खेलो ये चाल क्या है । जो फेंकूं पासे तो छूटैं छक्के नलोदमनकी मजाल क्या है ॥ मैं हूँ जुवारी सुघड खिलाडी हमेशह जीतूँ कभी न हारूँ । सदा पडे पोदुइ दूर हो चौरासी ॥ यों घर घरकी नरद मारूँ । पडे अगरचे जो तीन काने तो अपने दिलमें मैं यह विचारूं ॥ ये तीन गुण हैं सभीके तनमें मैं इनसे चलके अलग सिधारूं । हैं चार काने वो चौथा पद है मिला अब हम को मजाल क्या है । जो फेंकूं० ॥ १ ॥ है इसमें पंजडी सो पांच तत्त्व हैं मैं इनसे गोटी चला बचाके । और फेंकूं छकडी ले आऊँ सत्ता सतको सदगुरु के पास जाके ॥ है दाँव अट्ठा सो आठ सिद्धी नव ऋद्धी मैं रखूं मनाके । पडे अगर

छः चहार दश तो दशौ द्वार देखूं दिल लगाके ॥ न रंग अपना मेरे किसीसे मैं अब समझता हूँ काल क्या है । जो फेंकूं० ॥ २ ॥ आये हमारे वो दशपौ ग्यारा तो ग्यारहो रुद्र हैं बदनमें । और बारह राशैं सो दोनों बारह समझ सोच कुछ तू अपने तनमें ॥ बडे हैं इनमें वो दोनों तेरा मैं तेरा तेरा कहूं हूं मनमें । तू चौधरी है जहांका मालिक नजर पडे चौदहों भुवनमें ॥ करूं भजन मैं ये पन्द्रहों दिन माया मोह का वो जाल क्या है । जो फेंकूं ० ॥ ३ ॥ है आतमा सोलहों कलाये । सो पाँसे मैं सोलहों बनाये ।। वो आये सत्रह ये सतरहा अब हरी हरीके गुण गाये । पढे अठारह पुराण हमने और अर्थ उसके ये दिलमें पाये ॥ उठे रंग बदरंगभी उठगये वो सारी मायाको जीतलाये । बनारसी को सदा बनारस बना हुआ है बवाल क्या है । जो फेंकूं० ॥ ४ ॥

ख्याल जीकी लयका ।

नहीं मेरे ये शरीर हैं नहिं है मुझको दुख द्वन्द । मेरा है रूप सच्चिदानंदजी ॥ नहीं लोभ नहिं मोह नहिं बुद्धि नहिं अहंकार । नहिं आचार औ नहीं विचारजी ॥ नहीं रात नहीं दिन नहीं तिथि घडी लग्न नहिं वार । नहीं है अपना पारा-वार जी ॥ नहीं ऊजड नहीं जंगल बस्ती नहीं कुटुम्ब घरवार । नहीं दारा सुत नहिं परिवारजी ॥

दोहरा-नहीं शीश नहिं मुख नहिं जिह्वा नहिं बाणी नहिं हाथ । नहीं उद्र नहिं लिंग चरण नाहिं नहीं वर्ण नहिं जात ॥ नहीं वेद नहिं शास्त्र नहीं श्लोक नहीं पद छन्द । मेरा है० ॥ १ ॥ नहीं काम नहिं क्रोध नहीं कुछ ज्ञान नहीं

अज्ञान । नहीं कोई मंत्र तंत्र नहीं ध्यानजी ॥ नहीं नेम नहीं संयम पूजा नाहिं तीरथ अस्थान । नाहिं व्रत होम यज्ञ नाहिं दानजी ॥ नहीं योग नहीं भोग नहीं संयोग मान अपमान । नाहिं वनवासी नाहिं स्थानजी ॥

दोहरा-नाहिं सीधा नाहिं गोल नहीं दुबला औ नाहिं मोटा । नाहिं टेढा नाहिं बेडा बहुत नहीं बडा नहीं छोटा ॥ नहीं तुर्श नहीं लौन अलोना नाहिं कडवा नाहिं कंद । मेरा है० ॥ २ ॥ नहीं सुखी नाहिं दुखी नहीं धनवान नहीं कंगाल । नहीं मंत्री और नहीं भूपाल जी ॥ नहीं सिंधु नाहिं नदी नहीं है कूप बावडी ताल । नहीं आकाश नहीं पातालजी ॥ नहीं श्वेत नाहिं पीत नहीं है कपोत नीला लाल । नहीं है वृक्ष फूल फल डालजी ॥

दोहरा-नाहिं हीरा नाहिं मोती माणिक नाहिं रत्न की खान । नहीं खडग नाहिं चक्र नाहिं त्रिशूल धनुष नाहिं बान ॥ नाहिं जाग्रत नाहिं स्वप्न सुषुप्ति नहीं खुला नाहिं बंद । मेरा है० ॥ ३ ॥ नाहिं त्रिदंडी नाहिं वनखंडी नहीं ब्रह्मचारी । नहीं मुण्डित न जटाधारी जी ॥ नहीं अग्नि नाहिं पवन न पानी नाहिं मीठा खारी । पशु नाहिं पुरुष नहीं नारीजी ॥ नहीं शाक्त नाहिं वैष्णवी नहीं आचारी । नहीं हलका और नहीं भारीजी ॥

दोहरा-नाहिं मिमांसक नहीं जैनी नहीं उदासीन मतवाद । नहीं देव गंधर्व यक्ष नाहिं नहीं विघ्न विख्याद ॥ नाहिं विजली नाहिं घना नाहिं तारे नाहिं सूरज नाहिं चन्द । मेरा है० ॥ ४ ॥ नाहिं शिष्य नाहिं गुरू न माता पिता नाहिं भ्राता । नाहिं रिश्ता और नाहिं नाताजी ॥ नाहिं बैठा नाहिं खड़ा नाहिं आता

है नहिं जाता। नहीं भूखा है नहिं खाताजी ॥ नहिं लेय नाहिं धरे नहीं देता नाहिं दिलवाता। सखी नहीं सूम नहीं दाताजी ॥
दोहरा-नहीं कर्मकी रेख लेख नाहिं नहीं पढ़ा जाता। नाहिं मौन हो रहे नहीं बोले नाहिं बुलवाता ॥ नहिं पक्षी नाहिं फंद कहै नहिं जाल नहीं फरफंद। मेरा है० ॥ ५ ॥ नाहिं हिन्दू नहिं मुसलमान याहूदी नाहिं फिरंग। नाहिं कोई रूप नहीं कोई रंगजी ॥ नहीं बीन बांसुरी नहीं करताल मृदंग नहीं जल तरंग नाहिं उपंगजी। नाहिं कलंगी नाहिं तुर्रा नहीं अनघड़ डुंडा नाहिं चंग ॥ नाहिं कोई संग है नहीं असंगजी।
दोहरा-अपी आपमें आप है रहा आप में व्याप। नहीं स्वर्ग नाहिं नरक है नहीं पुण्य नाहिं पाप ॥ बनारसी कहैं रूप हमारा अखंड परमानंद। मेरा है० ॥ ६ ॥

मथनी श्रीकृष्णके खेलकी-बहेर छोटी।

यह नंदलाल यशुदाका दुलारो कनिया। लै गयो सखीरी मेरी दधिकी मथनियां ॥ सुन सखी एक दिन कान्ह मेरे घर आया। दधि गोरस दी ढलकाय औ माखन खाया। दधिकी मथनियां हाथमें लेकर धाया ॥ मैं देखा चोरी करत पकड़ बिठलाया ॥ उन फाडो मेरो चीर मैं तोरी तनिया। लै गयो० ॥ वो कुस्तंकुस्ता मुस्ती करने लागा। मथनी भी ले गया हाथ छुड़ाकर भागा ॥ इतनेमें हो गया भोर ससुर घर जागा। पतिने मुझको अकलंक लगाकर त्यागा ॥ डर सास ननँदका हमसे लडे जेठिनियां। लै गयो० ॥ सुन सखी श्यामसे मथनी क्योंकर पाऊँ। मोहिं मांगत आवे लाज बहुत सकुचाऊँ ॥ है नया नेह शर्माते सन्मुख जाऊँ। दूरीसे नटवर वेष देख

ललचाऊँ ॥ मुख धर बांसुरी बजावे तान रसमिनियां । लै गयो० ॥ वोह सुन्दर सांवरा मेरी नजर जब आवे । पलकोंसे मारे सैन नैन मटकावें । बंशीमें मोहनी डाल मुझे बिलमावे ॥ एक नजर दिखाकर तन मन हर लेजावे । है ब्रजमें प्रकटो बडो वो छैल चिकिनिया ॥ लै गयो० ॥ माथे पर चंदन मोर मुकुट शिर साजे । कानोंमें कुण्डल कर मुरली बीराजे ॥ एक पडी वो नाक बुलाक अधिक छबि साजे । सांबरी सूरत पर पीतांबर राजे ॥ कटि किंकिणी बाजे पग म्याने पैंजनियां । लै गयो० ॥ भोलामुख भोली बतियां लगतीं प्यारी । मन चाहे चितसे प्रेम राह रस न्यारी ॥ ग्वालिनकी लगनसे मगन हुये गिरिधारी । कहै देवीसिंह मैं कृष्ण तेरी बलिहारी ॥ दिन रात तुम्हारा ध्यान धरै दुनियां । लै गयो० ॥

ख्याल तवहीर-बहेर तबीर ।

मैं देखूं हूं सबके है सरपर वही पर अपना तो रखता वो सर ही नहीं । ये सितम है कि उसके हैं चश्म कहां पर ऐसी किसी की नजरही नहीं ॥ है दैरो हरममें वो जलवे कुना पर अपना तो रखता वो घरही नहीं । वो मकीं है अजब के मकांही नहीं वो मक्का है अजीब के दरही नहीं ॥ है उसका वह मसकन पाक जहां वहां वह मोगुमां का गुजरही नहीं । न तो दिन है वहां न तो शब है वहां वहां देखो तो शम्शोकमरही नहीं ॥ है नूरका उसके जहूर खिला पर है वो कहां ये खबरही नहीं । ये सितम है० ॥ वह जलवा है उसका तमाम जगह कोई और तो जलवागरही नहीं । कहीं मिस्ले नूर अयां है वोही कहीं मफी है मुजहरही नहीं ॥ ये जमीनो फलक का है उसके

सिवा कोई मालक जेरो जबरही नहीं । सरदार है कुल आलम का वही कोई उसपै तो है अफसरही नहीं ॥ जो चाहे सो करता है आप वही कुछ उसको किसी का खतरही नहीं । ये सितम० ॥ वोः अजीब है नखले मुरादे चमन कहीं हस्ती में ऐसा शजरही नहीं । तरोताज निहाल लतीफ है वह कोई उससे तो है बेहतर ही नहीं ॥ कहीं नखल में शाख हैं बर्ग नहीं कहीं गुल में तो लगता समरही नहीं । उसे जाके चमन में जो ढूंढे अगर तो औ पाये नसीमो सहरही नहीं ॥ वोः सहज है बहार है जिसे है सिदा कभी बादे खिजां से नजरही नहीं । ये सितम० ॥ जिसे इश्क खुदान जहां में हुआ कोई उससे तो है बरही नहीं । वालिद ही हुये कुछ अकलो कहे मगर ये भी नहीं तो बशरही नहीं ॥ कहै काशीगिर लापरवा है वोः कुछ ख्वाहिशे सीमोजर ही नहीं । वो रुतवा है उसका के शाहों का भी कुछ आगे तो उसके बकरही नहीं ॥ जो फकीरों के फैजे सखुन में हैं वो जवां में किसी के असर ही नहीं । ये सितम है कि० ॥

ख्याल तौहीद बंदा खुदाया बहेर तवीर ।

जिसे जिस्मका अपने गुरूर नहीं उसे मौतका खौफो खतरही नहीं । न तो ख्वाहिश उसको बिहिश्तकी है कुछ दोजख काभी तो डरही नहीं ॥ वो मकाँ है मेरा तनकाई जहां शम्शो कमर का गुजरही नहीं । न आबो हवा न तो आतिशबाँ कोई मेरे सिवा तो बशरही नहीं ॥ जिसके परदा दुई का वो दूर हुआ तो फिर उसमें खुदामें कसरही नहीं । जहां देखे वहां पै है नूरे खुदा कोई और तो आता नजर ही नहीं ॥ कोई लाख

तरेसे जो मारे उसे पर उसका तो कटता वो सरही नहीं । न तो० ॥ १ ॥जिसकी एक निगाह है तमाम जगह उसके आगे तो जैरो जबरही नहीं । जिसे अक्ल फैहम में है दखल बडा उसके आगे तो इल्म हुनरही नहीं ॥ जिसके कबजेमें गंज है वहदका कोई उस्सा दौलतबर ही नहीं । जो कुछ आया वह उसने लुटाही दिया कुछ पासमें रखता वो जरही नहीं ॥ हरहालमें जो के खुशी है बशर ऐसी होती किसीकी गुजर ही नहीं न तो० ॥ २ ॥ उसके ज़ेरेसे नूर हजार बने आगे तो शम्शो कमरही नहीं । जिसने देखा उसे वह उसीमें मिला कोई और तो उसका है घर ही नहीं ॥ मैंने दोनों जहांमें जो देखा तो क्या कोई और तो मेरा जिगर ही नहीं । सिवा उसके न कोई रफीक मेरा मुझे और किसीकी फिकर ही नहीं ॥ जो है बंदा उसी का न गन्दा हुआ कोई औरका उसपै असरही नहीं ॥ न तो० ॥ ३ ॥ मुझे ख्याल उसीका है आठों पहर मैंने याद किसीकी तो करी ही नहीं । जबसे देखा उसे तो मैं भूला सभी पर भूला मैं उसका तो डरही नहीं ॥ वो दिलही में मुझको दिखाई दिया कहीं करना पड़ा कुछ सफर ही नहीं । दरिया है ये देवीसिंहका सखुन कहीं ऐसी तो लहरो बहरही नहीं ॥ है नाम वो तेरा काशीगिरि कोई और तो ऐसा नसरही नहीं । न तो ख्वाहिश० ॥ ४ ॥

फकीरके चार हुरूफही दुरुस्त हैं चहार दर्वेश गलत बहेर खडी ।

ऐसे फख और काफसे कुदरत रेसे रहम और येसे याद । चार हर्फ हैं फकीरोंके जो पढे तो हो दिल शाद ॥ फकीर

होना बहुत कठिन है जिसमें फख्रकी हो नहीं बू। और तो कुदरत भी न हो तो ऐसी फकीरी पर है थू॥ रहम न हो दिल में तो दुनियां छोड़ न होना फकीर तू। यादे इलाही जो कोई करे तू उसके कदमको छू॥

शैर-यह चारों बात हो जिसमें वह फकीरीको करे। नहीं क्यों जटा बढाके बोझ शिरपै धरे॥ इससे बेहतर है कि दुनियामें तू रह और कुछ दे। मैं यह करता हूं फकीरी तो है परसे परे॥ ऐसी फकीरी मत करना जो चारों बात होवे बरबाद। चार हर्फ॰॥ १॥ फख्र वह कुदरत रहम और यादे इलाही भी है बहुत कठिन। वह फकीर है कि जिसकी आठ पहर उससे है लगन॥ फिर उसको क्या ख्वाहिश है दुनिया की और क्या करना धन। फकत गुजारा यहां करना है इसीमें रहै मगन॥

शैर-आगया माल तो दम में लुटा दिया उसने। किसी को देदिया कोई से लेलिया उसने॥ न तो लेनेकी खुशी कुछ भी न गम देनेका। काम नेकीका जो कुछ बन पड़ा किया उसने॥ इसके मायने वह समझें जिसके दिलमें पूरा इतकाद। चार हर्फ॰॥ २॥ फकीर है कि जो कोई जीते जी समझे मरना। जीते जी जामैरे तो मौतसे भी नहिं हो डरना। अगर मरें तो खुदा में मिलै नाहिं हो दुख भरना॥

शैर-खौफ दोजखका न कुछ और न खुशी जन्नत की। किया दोनों को तर्क वश ये उनकी मन्नतकी॥ दोनों दुनियां को छोडकर मैं न मैंने सुन्नत की। चार हर्फ ये पढे और गुने तो वह कहलाये आजाद॥ चार हर्फ॰॥ ३॥ चार

किताबें पढे तो क्या और सुने अगरचे चारों वेद । पर नहिं उसको गुने तो कभी न हो पूरी उम्मेद ॥ और इल्म कितने सीखे इस दिलपर आपने उठाके खेद । पर मुशकिल है जहांमें सुनो फकीरीका कुछ भेद ॥

शैर-मैंने देखा कि फकीरों के हैं मौताज सभी । फकीरी मुझको मिलै और न मिलै राज कभी ॥ खुदाने अपनी जुबां फखसे मिलाई । हुकममें उसके है वो साज और समाज सभी ॥ बनारसी भी फकीर है और देवीसिंह मेरे उस्ताद । चार हर्फ० ॥ ४ ॥

लावनी तौहीद बहेर-लँगडी ।

खुदासे जो कोई मिला तो वह फिर खुदा हुआ नहिं जुदा हुआ । नक्की उसको मिली और दुईका तो हर गया हुआ ॥ यकताईके आलिममें हर वक्त चूर रहता हूं मैं । दुई वालोंसे तो लाखों कोस दूर रहताहूं मैं ॥ अन अल कह जो कहै तो उसके संग जरूर रहता हूं मैं । पेशानी में जो उसकी बनके नूर रहता हूं मैं ॥

शैर-अगर वह खाकमें लोटें तो गिल अक्सीर बनजावे । करे मिसको तिला उस गिलकी वह तासीर बनजावे ॥ जवां से जिसको कुछ कहदे तो वह फिर पीर बनजावे । खुदासे गर कहें तू बन तो वह तसवीर बनजावे ॥ कभी नहिं हारे दुनियाँमें उन्होंने वह जीता है जुवा । नक्की उसको० ॥ १ ॥

आबका कतरा मिले जो दरियामें तो वह दरिया बनजाय । खुदासे जो कोई मिले तो बेशक वह माला बनजाय ॥ नूरमें जिसको मिले नूर कुल जहांका वह जलवा बनजाय । दुईको करदे दूरतो आलममें यकता बनजाय ॥

शैर—मिला चाहै तो उससे मिल तू अब अपनी ही हस्ती में। हमेशा मस्त झूमाकर सदा रहो अपनी मस्ती में ॥ कभी शहरा में घूमाकर कभी जा बैठ बस्ती में। कभी रहो बुत परस्ती में कभी रहो हक परस्ती में ॥ जिसने समझा एक वह तो फिर मौत को जीता नहीं मुवा। नक्की उसको० ॥ २ ॥ हम दश अव्वल खानम वाहेद यकता उसमें हुई नहीं। बारे मेरे दिलके इसमें दुई तो मुतलक हुई नहीं ॥ जो के जिनस मैंने पकडी वह चीज किसी की हुई नहीं। बात खुदा से तो मेरे सिवा किसी की हुई नहीं ॥

शैर—कलामे मारफत मेरी जवां से हर घडी निकले। कि जैसे सिफत मौला की कुरआं से हर घडी निकले ॥ गिरेवां फाडकर हम इस जहां से हरघडी निकले। बयां तौहीद तो मेरे बयां से हरघडी निकले ॥ जिसने खेल खेला है खुदा से जुवा फिर उसने कहां छुवा। नक्की उसको० ॥ ३ ॥ नेक जो है यह एक समझता एक नाम से काम मुझे। मुफत मिला वह खर्च नहीं करनी पडी छदाम मुझे ॥ उस मालिक का नाम लिए से मिला बहुत आराम मुझे। अब तो यही लौ लगी रहती है आठों याम मुझे ॥

शैर—दुई का उठगया परदा तो यकताई नजर आई। न फिर बाबा नजर आया न वह माई नजर आई ॥ अगर रुसवा हुए हम तो न रुसवाई नजर आई। जब अपने आपको देखा तो जेबाई नजर आई ॥ बनारसी नाहिं थका अब उसके कांधे का उठगया जुवा। नक्की उसको० ॥ ४ ॥

लावनी तौहीद—बहेर लंगडी ।

पास न कौडी रही तो मैंने मुफ्त खुदा को मोल लिया । ऐसा सौदा किया अनमोल और मैंने कुछ न दिया ॥ पाया खजाना गयेब का मैंने कभी नहीं घटने का है । चाहे जितना मैं बांटूं कभी नहीं बटने का है ॥ खर्च न कौडी होय फकत ये जबांही से रटने का है । ऐसा सौदा तो कोई फकीर से पटने का है ॥

शेर—न रही पास में मेरे जो एक लंगोटी । मुँडाया उसको भी शिरपर मेरे जो थी चोटी ॥ किया सवाल तो सबकी सही खरी खोटी । लगी जो भूख तो खाई वह मांगकर रोटी ॥ पियास लगी तो पानी भी जैसाही मिला वैसाही पिया । ऐसा० ॥ १ ॥ यह बाजार निरगुन का है मैं खरीददार मालिक का हूँ । मालिक भी हूँ और मैं तावेदार मालिक का हूँ ॥ वह मेरा है दोस्त और मैं भी तो यार मालिक का हूँ । जो चाहे सो करूं मैं मुखतियार मालिक का हूँ ॥

शैर—यह हाट में जो गया उसका वह हुआ सौदा । न खर्च कुछभी पडा मुफ्तमें मिलासौदा ॥हम हाथ उसकेबिके जिसे यह किया सौदा ॥ न कोई देख सके है मेरा छुपा सौदा । कभी नहीं घाटा होवेगा अब मेरा खुल गया हिया ॥ ऐसा० ॥ २ ॥ रोजगार करना होवे तो ऐसा रोजगारी तू बन । खर्च न जिसमें पडे तो ऐसा व्यौपारी तू बन ॥ लूट खजाना खुदाके घर का ऐसा बटमारी तू बन । तू भी लुटादे जहां में कुछ तो उपकारी तू बन ॥

शैर—यह हाथ जिसके लगा माल वह निहाल हुआ ।

निहाल वह भी हुआ इसमें जो पामाल हुआ ॥ खुदाकी राह में गरचे कोई कंगाल हुआ । तो आखिरशको फिर वो कोठी वाला हुआ ॥ हिन्दू मुसलमाँसे मैं कहता क्या सुनी या होवे शिया । ऐसा सौदा० ॥ ३ ॥ यह रंज फकीरोंकी इस सौदे का कुछ मोल नहीं । छिपाले इसको हर एक के आगे यह तो खोल नहीं ॥ खामोशी का आलम है इस जांपर निकले बोल नहीं । कहे देवीसिंह अरे तू अमृत में विष घोल नहीं ॥

शेर-बुरा न मान मेरी बात सुन भला होगा । इसे खरीद करै वह जो दिल जला होगा ॥ यह राह सख्त है इसमें जो कोई चला होगा । तो उसको पाके हर एक हूरने मला होगा बनारसीने सबको छोड लिया बासुदेव और राम सिया । ऐसा सौदा किया अनमोल और मैंने कुछ न दिया ॥ ४ ॥

पंथ प्रेमका-बहर लंगडी ।

दुनियामें लाखोंई पंथको हमने देखा भाला है । पर जो देखा तो कुछ आशकों का पन्थ निराला है ॥ कोई बदन पर खाक मले और सेल्ही कफनी डाले हैं । कोई रँगावे बस्त्रको अपना वेष सँभाले हैं ॥ कोई मौन होकर बैठे नहीं किसी से बोले चाले हैं । कोई फड़ाये कानको पिये वो मदके प्याले हैं ॥ कोईने लम्बा तिलक दिया और पहने तुलसीमाला है । पर जो० ॥ कोई रात दिन खड़े रहैं और कोई हाथ उठाये हैं । किसीको देखा तो वह बैठे और ध्यान लगाये हैं ॥ किसीने अपने बदन को दागा तनुपर छापे खाये हैं । किसीने अपने शीशपर लंबे बाल बढाये हैं ॥ किसीके तनपर वस्त्र नहीं ओढे मृगछाला है । पर जो० ॥ कोई सेंवडा बना और कोई

कहै कि हमतो दंडी हैं। कोई तपस्या करैं और कोई बने वनखंडी हैं॥ किसीके मठपर ध्वजा उडै और कहीं फरकती झंडी हैं। विना इश्कके हुवे जो फकीर वो पाखंडी हैं॥ किसीने मसजिद बनवाई और कोईने रचा शिवाला है। पर जो०॥ कोई कहै हम यती हैं और कोई बना जगत में वैरागी। बिना इश्कके किसीकी लव नाहिं सद्गुरु से लागी॥ बनारसी ने इश्कमें अपनी जीतेजी काया त्यागी। दुई न मुतलक रही और दुविधा भी सुनके भागी॥ रामकृष्णका सखुन यही समझो तुम सब पर वाला है। पर जो देखा०॥

तथा

दुनियामें कहते हैं सभी आशिकका दरजा आला है। पर जो देखा तो कुछ माशूक का रुतबा वाला है। आशक था मजनू पर वह लैलाका तावेदार रहा॥ गमें इश्कमें हमेशा लैलाके बीमार रहा। गया तन बदन सूख पर अपने दिलसे ताकतदार रहा॥ दिलहीमें अपने वह करता लहला को दीदार रहा॥

शैर-जबांपर हर घड़ी उसके कलामें विर्द लैला था। कुरां था हाथमें तिसपर भी वह लैला पे शैदा था॥ बताओ इश्क क्या है इसकी सूरत किसने देखी है। बलाये लागहानी थी हुआ जिस दिन यह पैदा था॥ आशक भी है मस्त वही जो वहदतमें मतवाला है। पर जो०॥ तख्त सल्तनत तर्क किया आशक रांझा हीर हुआ। खाक बदन पर मली और शाहसे बडा फकीर हुआ॥ काली कामर ओढ चराई गाय नहीं दिलगीर हुआ। हुक्म हरिका जो माना तो वोः औलिया पीर हुआ॥

शैर-पकड कर शेरको जंगलमें क्याही घातसे मारा। वह ताकत हीरकी उसमें थी जिसकी जातसे मारा ॥ सुनो दुनियां में माशूको चरचका तुम जरा मुझसे। जिसे मारा उसी की यक जरासी बातसे मारा ॥ वोः आशिक पक्का है जिसने अपनाही घर घाला है। पर जो० ॥ शीरीके ऊपर आशक फरहाद एक मजदूर हुआ। गजब इश्क है जिसे यह लगा, वोः चकनाचूर हुआ ॥ शीरीके रुतवेसे कुछ फरहादका भी मखदूर हुआ। बाद मार्गके वोः दोनों मिले नाम मशहूर हुआ ॥

शैर-जिसे माशूक चाहे क्यों न उसे आशककी इज्जत हो। बनाये या बिगडे यह तो सब अख्तियार है उसको ॥ कहां वह शाहजादी और कहां फरहादकी इज्जत। बनाई बस वह शीरीने इसे आशक हो तो समझो ॥ आशिक ने दिया तो क्या माशूकने उसे सम्हाला है। पर जो० ॥ हम जिसके आशिक हैं उसका हुकुम बजाया करते हैं। जो जो कहै वोः काम उसका कर लाया करते हैं ॥ लाख तरह के सदमें अपने दिलपै उठाया करते हैं। सितमगार का सितम नहीं जबां पर लाया करते हैं ॥

शैर-फलक पर वो है और हम इस जहांके बीच रहते हैं। वह तो है लामकां हम हरमकांके बीच रहते हैं ॥ तबक चौदाके ऊपरसे सदा आती है कानोंमें। वहां उसकी जबां ह्यां हम कुरांके बीच रहते हैं ॥ देवीसिंह कहै बनारसी भी आशक भोलाभाला है। पर देखा तो कुछ माशूकका रुतवा वाला है ॥

खुदा के नूर की तारीफ शिरसे पैर तक।

कहरना जो अन्दाज गजब है अजब हुस्न दमके दमदम।

जालमें छलबल इशारें नहीं तेरे आफत से कम् ॥ गरचे हुस्न तेरे की सिफत कोई लाख तरह से करे रकम् । क्या ताकत है जो उसके हाथ में ठहरे लोहे कलम् ॥ जाये ताज्जुब है जलवा तेरा जलवेगर बना सनम् । तेरे नूरसे हुआ कोह-तरमें वह मूसा बेदम ॥ हाथ मला यक मलै हूर हैरत खाखाके छुये कदम् । जिनो बसर बस तेरी तावेदारी करते हरदम् ॥ सर तापा तसवीर खिंची कुदरत की तेरी बिना कलम । चालमें छलबल० ॥ १ ॥ सर तेरा है हरसरका सरदार तू है शाहे आलम् । उसके ऊपर ताज कलँगी औ छत्र झलके झमझम् । जुल्फ मुशलशिलमें वह पेंचे हैं और तेरे हरवाल में खम् ॥ गोया नागिनी माहपर आई चाटन को सबनम् । यामें जुल्फ को अब्र कहूँ या लाम अलीफ या नसर नजम् । यामैं उनको कहूँ जुलमात याके जादय सितम् ॥ आगे लाखों तिलिस्म हैं जुल्फोंमें तेरे तेरी कसम्। चालमें छलबल० ॥ २ ॥ देख तेरे माथेको फलकपर आफताब खाता है शरम् । चीने जबीं से किरन खुरशैदकी कांपै होके बहम् ॥ सिफत करूँ अबरूओंकी तौ शमशीर पर हो शमशीरे अलम् । याकै कमां है बनी मुलतानकी या है तेगे दुदम् ॥ मिजे तीर पैकां है या नजर है या बरछी बल्लम् । यक पल में वह करैं कतलाम करै एक पल में रहम् ॥ तेरी नजर गर फिरै तो फिर होजांय कतल लाखों रुसतम ॥ चालमें छलबल० ॥ ३ ॥ चहरा गोल अनमोल के जिसके रश्क कमरको होवे गम् । चश्म वह नरगिश कमलसे खिले हैं गोया बागे इरम् ॥

देख के बैनी की तेजी को हर यक का हो नाक में दम । गजब फड़क है तेरे नथुनोंकी कहैं किसतौरसे हम ॥ रुखसारोंपर छुटा पसीना जैसे दो दरियाये अगम । बात बात में दिल्लगी शीरींसखुन औ जबां नरम ॥ हरयक आन में जान निकाले अदा अजायब हुस्नेयम । चाल में छलबल इशारे० ॥ ४ ॥ और जो करूं तारीफ तेरे दन्दा की ऐ दिलजाने दिलम । या वह गौहर है बेश कीमत या है हीरों की किसम ॥ देख लबों पर पानकी लाली लालों का रुतवा हो कम । खाले जकब पर आनबर उगद सुरैया हुआ खतम ॥ चाहे जनखदां देखके तेरी चाह में डूबा कुल आलम । कद वह कयामत की जिससे सर्व सिद्धि को हो मातम ॥ गला सुराहीदार और सीना साफ आईना सा उत्तम । चाल में० ॥ ५ ॥ दस्त व नाजुक गोल कलाई हिना हथेली में रही रम । देख वह सुर्खी खूने दिल कितनों का हो नाखुं दम ॥ वो गोया हिलाल औ मखमली मुलायम बना शिकम । नाफ वह सागर कमर चीते सी वह जानूं नूर के थम ॥ देख झलक कदमों की तेरे पैरों में आनबर पड़ा पदम । बनारसी कहै मैं आशिक तेरे नाम का हूं हमदम ॥ नारंगी सी एडी तलुवे मलें तेरे बाबा आदम । चाल में छलबल इशारे नहीं तेरे आफत से कम ॥ ६ ॥

ख्याल इश्क मार्फत-बहेर लंगडी ।

कूंचे जाना की दिल पर गर जरा किसीके हवा लगी । रहा नीमजां न उसको तावे उम्र तक दवा लगी ॥ अदा हुआ जी जानसे जिसको प्यारी तेरी अदा लगी । गदा हुआ वह इश्क का जिसके दिल पर गदा लगी ॥ सदा अनलहक कहूं जबांसे

मुझे वह प्यारी सदा लगी । खुदी मिटगई खुदाकी यादे दिल पर अब खुदा लगी ॥ चोट इश्क की जिसके दिल पर जरा लगी या सिवा लगी । रहा नीमजां न उसको तावे० ॥ १ ॥ तिलाकर दिया मिसको खाक पा तेरी उसे यक तिला लगी । दिलादे अपना दीद तबीअत तुझसे ऐ दिला लगी ॥ सिलाए क्यों कर जखम जिगर के जिसको इश्ककी सिला लगी । मिला खाक में खाकसारी जिसको कामिला लगी ॥ इश्क के बीमारों को और कोई दवा न तेरे सिवा लगी । रहा नीमजां न उस को तावे उम्र तक दवा लगी ॥ २ ॥ बला करै दिनरात इश्क की जिसके पीछे बला लगी । भला हो क्योंकर वह जिसको तेरा इश्ककी भला लगी ॥ मला करूं तलवे तेरे मुझको यह चाह वरमला लगी । चला लासकां चाल कदमोंमें मेरे चंचला लगी ॥ तू है समा मैं परवाना मुझको तो लौ तेरी वह लवा लगी । रहा नीमजां न उसको तावे उम्र० ॥ ३ ॥ अथाह है दरियाए इश्क का कहां इसकी किसको थाह लगी । न था जो इसमें वह डूबा हरगिज इसकी न थाह लगी ॥ कहा छन्द देवीसिंह ने उन्हें इश्ककी प्यारी कथा लगी । जत्था वाले हैं जो शायर उन्हें बात यह यथा लगी ॥ बनारसी को सिवा इश्क के और बात नहिं रवा लगी । रहा० ॥ ४ ॥

परमेश्वरके भजनमें रोनेकी तारीफ—बहेर लंगडी

रहे उम्र भर दरिया में निकले तो खुश्क गौहर निकले । सद आफरीं है जो मेरी चश्म से मोती तर निकले ॥ सिजै की नोंकों पर जिसदम वह अश्क हमारे तुल निकले ।

अजब ताज्जुब हुआ ज्यों खारके ऊपर गुल निकले। चश्म हमारे उन्हें देखने को जो यह खुल खुल निकले। अश्क जो गुलरू बने तौ दीदे भी बुल बुल निकले॥ गर निकले इल्मास तो क्यों वह भी सूखे कंकर निकले। सद आफरीं है जो मेरी चश्म से मोती तर निकले॥ १॥ कहौ मैं क्या क्या तशबीदूं जो बन बन के आंसू निकले। मैं बहदत में कि गोया करते बिहिश्त से चूं निकले॥ मैंने कहा ऐ अश्क मेरी चश्मों से जिस तरह तू निकले। क्या ताकत है जो ऐसी लडी बनके लूलू निकले॥ कहीं जवाहर निकले वह भी स्वा- मिल पत्थर निकले। सद आफरीं है जो मेरी चश्म से मोती तर निकले॥ २॥ रोया फिरा के यारगें मैं तो क्या २ अश्क बनबन निकले। यकीं यह हुआ कि दरिया इसीसे गंगोजमन निकले। और भी कुछ कहताहूं सुनो इस जबांसे जो कि सखुन निकले॥ अब्र पुतालिया बनी तो चश्म भी दो सावन निकले। अश्क मेरे पुर आब हैं गौहर खाली खुश्क जिगर निकले॥ सद आफरीं० ॥ ३॥ फुरकते जाना मैं जो कभी हम रोते जारजार निकले। तार न टूटा हारसे तोफा गुंथे हार निकले। क्या ताकत इस दरिया के गरबार से कोई पार निकले॥ बनारसी कहै जो निकले मगर तो हमीं यार निकले। और जो निकले रत्न वह भी अश्कों से मेरे बतह निकले॥ सद आफरीं० ॥ ४॥

खुदाके नूरकी आंखोंकी तारीफ—बहेर लंगडी।

तेग लगे तलवार लगे और तीर लगे तो चैन पडे। नैनके मारे तडपते हैं कितने बेचैन पडे॥ एक झलक मूसा को

नजर गर पडी तो वह लग गई नजर। गिरा कोहे पर न उसको तनो बदन की रही खबर ॥ जिसे इशारे रोज करै वह क्यों कर उसका होवे गुजर। जिये किस तरह और फिर मरे भला कहो किस पर ॥ दिलका हाल दिलही जाने जो जखम जिगर पर ऐन पडे ॥ नैनके मारे० ॥ १ ॥ तोप लगे बन्दूक लगे तो इसकी भी हो दवा कहीं। अगर दुगाडे नैनके लगे तो फिर वह बचे नहीं ॥ बरछी से बच गये कटारी की चोटें कितनों ने सहीं। नोक पलक की जरा भी चुभी तो वह रो दिये वहीं ॥ नींद कहां आती है जगते हैं हम तो दिन रैन पडे ।। नैन के मारे० ॥ २ ॥ बांक में है क्या बांकपन और खंजर में वह अब कहां। चश्म के आगे दिखाई दे है किसी का रुआब कहां। अगर नशे की कहो तो देखी ऐसी भला शराब ॥ कहा मस्तानों से भी गर पूछो तो आये जबाब कहां। लाखों दल कट जांय मेरे कातिल की जिधर को सैन पडे ॥ नैनके मारे० ॥ ३ ॥ वह हैं चश्म खूंरेज अब इनके खूनका दावा कौन करे। डार पेंच ढकके बोला मन्शूर के अब हम नहीं मरे। उसे मिले दीदार जो आशिक मस्ताने हैं सरसे परे। बनारसी कहै हम हैं सरमद के पीर सुनहरे भरे। शवो रोज हर वक्त जवां से कहते हैं यही बैन पडे ।। नैनके० ॥ ४ ॥

जीवन्मुक्तका ख्याल ।

मनको मारके बनाया मुर्दा जब यह तन आवाद किया। पहन के कफनी फकीरों ने तो कफन आबाद किया ॥ बस्तीको समझे उजाड सहारा औ बन आवाद किया। माल खजाना

तर्क कर फ़ख्रका धन आबाद किया ॥ लोमें शोले नूरके अपना जलाके मन आबाद किया। आहसे अपनी मेहर चरखेको इन आबाद किया ॥ जिसे कहैं वीराना सब मैंने वह बतन आबाद किया। पहनके कफनी० ॥ १ ॥ गुलखाखा गुलबदनपै मैंने वह गुलशन आबाद किया। जिस गुलशनसे गुलोंका हुस्न चमन आबाद किया ॥ कहके जबांसे वह कुम बइजनी अपना सखुन आबाद किया। जिलाया मुर्दा हुक्म से उसका कफ़न आबाद किया ॥ जीते जी जो मरा उसीने तो मुर्दा आबाद किया। पहनके कफनी० ॥ २ ॥ गम खाखा इस दिलपर हमने रंजो महल आबाद किया। दीवानोंको पढ़के दीवानापन आबाद किया ॥ तख्त सल्तनत छोड़ खाक पर वह आसन आवाद किया। जिस आसन से इन्द्र का इन्द्रासन आबाद किया। तर्क किया दुनियाका रास्ता और चलन आबाद किया ॥ पहनके कफनी० ॥ ३ ॥ अश्कसे अपने दुर्वेशों ने बुरे रतन आबाद किया। इश्कमें पैदा किया गम गममें जशन आबाद किया ॥ जिस जा आशक बैठ रहे उस जा संसकन आबाद किया। कहै देवीसिंह नाम अपना रोशन आबाद किया ॥ बनारसीने करके इश्क आश्की का फन आबाद किया। पहनके कफनी० ॥४॥

आशक के आह की तारीफ-बहेर लँगड़ी।

मेरी आहका तीर तोड़ गरदूंको गया लामकतिलक। बेअदबी अब बहुतसी हुई कहूँ मैं कहांतलक ॥ हुआ इश्क का जोर जब इस दिल में तो मैंने चाह कारी। सातों फलक को चीरकर लामकान की राह कारी ॥ वहां जो देखा नूर खुदा का खुदा-का उसने पाप निगाह करी। और जहांमें नहीं फिर किसीकी

मैंने चाह करी ॥ आशकसादिक नाम मेरा यह रोशन है कुल जहां तलक । बेअदबी अब ॥ १ ॥अजब मजा पाया है हमने अपनी आह सोजांके बीच । हुस्न खुदाई दिखाई दे है मेरी जांके बीच ॥ नहीं वह जल्वा मुल्कमें देखा और न हूर गिलमाके बीच । नहीं मेहरमें नहीं वह झलक माहेतावांके बीच ॥ मेरी आह रोशन है सातों जमीं और कुल आसमां तलक । बेअदबी अब० ॥ २ ॥ इसी आहसे इश्क यह पैदा हुआ और आशकनाम हुआ । इसी आह से जहांमें सारे में बदनाम हुआ ॥ इसी आहसे हुआ सखुन मस्ताना मस्त कलाम हुआ । इसी आह से वह पैदाम वहदतका जाम हुआ ॥ मेरी आह है लिखा देखलो जाके कलमें कुरांतलक । बेअदबी अब० ॥ ३ ॥ इसी आह से कुफ्र तोडके काफ़र को मारा हमने । इसीआह से किया दुश्मन पारापारा हमने ॥ इसी आहसे पाया वह दिल में दिलपर प्यारा हमने । इसी आहसे कर दिया फ़नारंज सारा हमने ।। बनारसी कहै जहां बह हक है मेरी आह है बहांतलक । बेअदबी अब० ॥ ४ ॥

जो आशक को छेडे उसका यह हाल हो ।

हम आशक हैं हमें न छेडो छेड के पछतावोगे तुम । आहसे गरदूं गिर पडेगा तो दब जावोगे तुम ॥ गर हमको छेडोगे तो निकलैगी इस दिलसे आतिशे आह । आग लगैगी वह जिससे कुल जहान होवेगा तबाह ॥ कहां भागके बचोगे तुम फिर कहीं नहीं पावोगे राह । हक कुलाये बात है इसका है अल्लाही गवाह । जिसने आशकको छेडा वह नहीं बचा हरगिज वल्लाह । कसम खुदाकी बात यह कुल जहान में है आगाह ॥

शेर–तुम्हें वाजिब नहीं है आशकोंको जोर दिखलाना।
जो होवे नातवां उसको न जोर और शोर दिखलाना॥
अगर तुम जोर दिखलावो तो फिर मत कोर दिखलाना
जो भागे इश्कके मैदांसे उसको गोर दिखलाना॥

आशके दिल को कभी सतानेसे न चैन पावोगे तुम। आह से गरदूं०॥ १॥ शबोरोज हम आप मरे रहते हैं हिज्र गमके मारे। हमें सताना तुम्हें नहीं वाजिबहै मेरे प्यारे॥ अभी आह गर करूंगा तो बरसेंगे फलकसे अङ्गारे। कोई बचेगा नहीं मर जायँगे कुल बिन मारे॥ मेरी आह से डरें औलिया पीर पयगम्बरभी सारे। इसी वास्ते नहीं भरता हूं मैं आहों के नारे॥

शेर–अभी गर उफ़ करदूं कुल जहां पलमें उलट जावे।
जमीं ऊपर हो और वे आसमां पलमें उलट जावे॥
ये मौसम सब उलट जावे समां पलमें उलट जावे।
हरेक दरिया उलट जावै तवां पलमें पलट जावे॥

हम तो आपी जले हैं हमको और भी जलावोगे तुम। आह से गरदूं०॥ २॥ छेड़ा शम्सतबरजको वह मुलतान अबतलक जलती है। वहांसे आतश देखलो अबतक नहीं निकलती है। और छेड़ा सरमद को दिल्ली इधरसे इधर उछलती है। आशिके सादिकके आगे रुसतम की नहीं चलती है॥ मेरी आहसे समा है रोशन आतस अबतक बलती है। काफरको ये जला देती है औ मुझको फलती है॥

शैर–निकालूं दिलसे मैं गर यारब अपनी आहसोजां को॥
जला डालूं हजारों कोस तक जंगल बियाबाँको॥
करूं मैं खाकसा इस आहसे बस्ती औ वीरांको।

कयामत आह से करदूं दिखाऊं मैं वह तूफां को ॥
छेड़छाड़ गर करोगे आशकसे तो घबराओगे तुम । आह से गरदूं० ॥ ३ ॥ जिसने आशकको छेड़ा फिर उसका घर बरबाद हुआ । गया हस्रको नहीं वह दुनियां में आबाद हुआ । दोजख उसको मिली और वह बहिश्त से बेदाद हुआ । नाम उसीका जहांमें काफर और जल्लाद हुआ ॥ ये है सखुन आशकों का इसपर जिस जिसको एतकाद हुआ। दोनों जहांमें उसी का भला हुआ दिल शाद हुआ ॥
शैर–सदा ये आशकोंकी है भला होवे भला होवे ।
अदांपर उसकी ये दिल देखिये किस दिन अदा होवे ॥
उसीका नाम रोशन हो जो उल्फतमें जला होवे ।
कहे ये छन्द देवीसिंह मेरा दिलवर खुदा होवे ॥
बनारसी यह कहै अगर नापाक इश्क गावोगे तुम । आह से गरदूं गिर० ॥ ४ ॥

खुदासे बन्देका सवाल जवाब–बहेर लँगड़ी।

खुदा तू है बरहक तो मैं भी हक जबांसे कहता हूं । आब जो तू है तो मैंभी लहर बरहम रहता हूं ॥ अगर तू है आतश तो मैंभी उसी का अंगारा हूंगा। तिल तू है तो मैं जेवर तेरा प्यारा हूंगा ॥ गर तू है सीमाब तो मैं भी सनम पारापारा हूंगा । आहन तू है तो मैं भी बना तेरा आरा हूंगा॥ जो तूहै दरिया तो मैं हां मौजरवां हो बहता हूं । आब जो० ॥ १॥ तूही तो है दम में दम तो मैं भी आदम कहलाता हूं। हुस्न जो तू है तो जलवा तेरा दिखलाताहूँ ॥ गरचे तू खामोश रहै तो मैं नहिं जबाँ हिलाता हूं । तूही है मेरा तो मैं प्यारे

अब तेरा कहाता हूँ ॥ तुही नहीं गम खाय तो फिर मैं जहां में किसीकी सहता हूं। आब जो० ॥ २ ॥ तेरा नहीं कोई दीन तो मेरी बातका कौन ठिकाना है। तुझने न जाना तो फिर मुझको किसने पहिचाना है ॥ तू है फख्र तो मेरा भी दिल फकीर तेरा दीवाना है ॥ तू है लामकां तो मेरें मकांको किसने जानाहै । तूहै सांवलिया शाहतो प्यारे मैं नरसीमेहताहूं॥ आब जो० ॥ ३ ॥ तू है शम्स तो मैं भी शम्स तबरेज जहां में आया हूं। मुझमें तू है और मैं तेरे बीच समाया हूं ॥ गर तू है नापैद तो मैं भी नहीं किसीका जाया हूँ। बनारसी कहै जो तू कुदरत तो मैं भी माया हूँ ॥ तूने पकड़ा हाथ मेरा मैं बाजू तेरा गहता हूँ। आब जो तू है तो मैं भी लहर बहर में रहता हूं ॥ ४ ॥

खुदा से बन्दे का सवाल जबाब।

खुदा तू गर है इश्क तो मैं आशिक हूँ हर नूरानी का। शान जो तू है तो मैं पुतला हूं तुझ लासानी का ॥ अगर तू राजेनिहां है तो मैं पोशीदा इस तन में हूं। तू है गुलिस्तां तो मैं भी गुञ्चा उस गुलशन में हूं ॥ तू चाह तो मैं भी डूबा प्यारे चाहेजकन में हूं। भला तू जो है तो मैं भी हरदम उसी लगन में हूं ॥ तेरी नहीं तस्वीर मुझे खींचे यह न रुतबामानी का। शान० ॥ १ ॥ तू है पाक तो मेरा भी दिल साफ मिस्ले आईना है। जान जो तू है तो मेरा तेरे हाथ में जीना है ॥ अगर तू दानिशवर है तो दिल मेरा दाना बीना है। बुलन्द है तू तो मेरा तेरे बामपर जीना है ॥ तू है मौज दरिया तो मैं भी हूं वह बुल्बुला पानी का। शान० ॥ २ ॥ तू है खुदा तो मैं भी तेरे से जुदा नहीं जीजान से हूं। यकीन है तो मैं

साबित अपने ईमान से हूं ॥ तू है दोस्त मेरा तो मैं तेरा यार भी हरएक आन से हूं । तू है तसव्वर तो मैं भी पूरा अपने ध्यान से हूं ॥ तू है लिबासे नङ्ग शौक है मुझे तने उरयानी का । शान० ॥ ३ ॥ तू है एक तो मुझसा दूसरा और जहां में कौनसा है । कलमा तू है तो तेरे सिवा कुरां में कौनसा है ॥ देवीसिंह कहैं बगैर तेरे मेरी जां में कौनसा है । नातुवानी में और ताकते तवां में कौनसा है ॥ यही सखुन है विर्दआशके बनारसी हक्कानी का । शान जो. ॥ ४ ॥

तारीफ सनम के पान खाने की–बहेर लङ्गडी ।

स्याही झलक दन्दां में हुई प्यारे तेरे मुसक्याने से । बर्फ तड़पने लगी अखतर रहे मुंह दिखलाने से ॥ अजब तिलिस्म हुआ जालिम तेरे उस पान चबाने से । मरजां गौहर जमुर्रद निकल पडे हखाने से ॥ शफकादम फक हुवा बहुत फूली थी सुरखी पाने से । अनार के भी दाने मौताज होगये दाने से ॥ देख तेरे दंदा की झलक उठगये लो लाल जमाने से । बर्फ तड़पने. ॥ १ ॥ भूल जाय जौहरी परखना रतन औ फिरैं दिवाने से । दन्दा तेरे देख पायें जो किसी बहानेसे ॥ कितने ही गये डूब वह सागर में भी गोता खाने से । पर नहीं वाकिफ हुए वह भी ऐसे दुर्दाने से ॥ सूखगया वह लहू तेरे दांतों की रिफत सुनाने से । बर्फ तड़पने लगी, ॥ २ ॥ शरमिन्दा होगए जवाहर दांतों के चमकाने से । खून उगलने लगे हीरे क्या हो पछताने से ॥ देखें सुरस्से साज तो रहजांय अपना काम बनाने से । यह वह जडत है जडी बस खुदा के हाथ लगाने से ॥ आज मुझे मिलगया मजा इस हँसी में

तुम्हें हँसाने से । बर्फ़ तड़पने लगी, ॥ ३ ॥ टुकड़े हों याकूत तेरे दांतों के रूबरू आने से । करै चमेली बात ये अपने और बेगाने से ॥ पान ने भी पाई लाली उस माहिलका के खानेसे॥ इसी वास्ते वो वह बस्ती में आये वीराने से । ये दन्दां निकले हैं बेबहा खुदा के सुनो खजाने से । बर्फ़ तड़पने, ॥४॥ बनारसी ने कहा हाल ये अपने मन मस्ताने से । इन दन्दोंमें देखले खुदा मेरे दिखलाने से ॥ थक जायगा औ नादां तू लामकान के जाने से । यहीं देखलै नूर दन्दां में यारके आने से ॥ ऐसी सिफ्त दांतोंकी किसीसे बनै नहीं मरजानेसें । बर्फ़.॥

पानकी लालीकी तारीफ-बहेर लँगडी।

पानकी लाली से वह झलक दन्दां में तेरे लालों की बनी । लाले बदक्शां देखकर जिसे खांय हीरा की कनी ॥ आज जो तू हँसके बोला तो दहन में वह दन्दां चमके ॥ जिगर छिद गया हर एक गौहर का सुनो मारे गमके ॥ सुनते ही वह सिफ्त सूखकर होस उडगये शबनमके ॥ क्या ताकत है मुकाबिल दन्दाके अखतर दमके ॥ हर एक जवाहर के ऊपर प्यारे तेरे दन्दां है गनी ॥ लालेबदक्शां० ॥ १ ॥ अगर चमेली को देखूंतो उसका सुर्ख लिबास कहां । मगरजो टुकडे हुआ उसको जीनेकी आश कहां ॥ झूठ नहीं बोलूंगा सनम मुझको कोई का पास कहां । सच कहता हूं मुकाबिले दन्दांके इलमास कहां ॥ क्या ताकतहै गर इनके रूबरू चमक सके कोई और मनी ॥ लाले बदक्शां० ॥ २ ॥ इन्हें देखकर बर्फ़ तड़पती है वह आसमा के ऊपर । सदके करदूं शफक को भी इन दन्दां ऊपर ॥ किसीसे निस्बत कभी न दूं नहीं लाऊं

इस जबांके ऊपर । दन्दां तेरे झलकतेहैं वह लामकांके ऊपर ॥ सायत तू पीसे जो दांत तो दममें करदे फनाफनी ॥ लाले बदक्शां० ॥ ३ ॥ गर जो कोई याकूत कहै तो जवां को उसकी कटवाऊं।अनारकेभी कहैं दाने तो काट के मैं खाऊंऔर जो कह गौहरकी लडी तो उसको भी मैं छिदवाऊं । किसी से निस्बत न दूं नाहिं सुनूं न खातिर में लाऊं ॥ बनारसी गर कहै तो क्या दिलमें उसके अब यही ठनी ॥ लाले बदक्शां०

ख्याल तौहीर अर्थात् वेदान्त मतलब उलटा ।

❋ बहेर लंगडी ❋

बुरा किया तो भला हुआ चोरी करने से शाह बने । गदा से हो गये बादशाह बन्दे से अल्लाह बने ॥ जात से हो वे जात जो कोई तो उसका वह दीन बने । शकल शबाहत बिगाडे तब चहरा रंगीन बने ॥ इमान से छोडे इमानको पूरा जभी यकीन बने ॥ लौमें शोले नूरके जले तो वो लवलीन बने । जबां कटी तब बोलन लागे फूटे नयन निगाह बने ॥ गदासे० ॥ १ ॥ करके गौर देखा हमने तो आजाब से बडा सबाब बने । लाजबाब गर सनम से हो तो खूब जबाब बने । मय वहदत कहते हैं उसे जो अश्क से मेरे शराब बने ॥ लज्जते शीरीं मिले जब जलके जिगर कबाब बने ॥ बुतखाने से बहिश्त और मयखाने से दरगाह बने ॥ गदा से० ॥ २ ॥ शिरको काटके अपने दस्तपर रक्खै तो सरदार बने । माल मुल्क सब तर्क कर बैठे तो जरदार बने । तयार दिलको कभी न उडने दे तो वह परदार बने । जिन्दा उसको समझते हैं

हम जो मुर्दार बने ॥ चलन से जब बदचलन हुये तो लाम कानकी राह बने । गदासे हो० ॥ ३ ॥ जिसे कहैं सब हराम हमने देखा वही हलाल बने । घोलके जिसने लगाली स्याही वह फिर लाल बने ॥ जो कि हुये पैमाल जहांमें वह साहबे कमाल बने । बनारसीके सखुन पर क्या ताकत कोई ख्याल बने ॥ जमींसे होगये आसमान और अखतरसे हम माह बने । गदासे हो गये बादशाह बन्देसे अल्लाह बने ॥ ४ ॥

रंजमें राह इश्क पूरा-बहेर लँगडी ।

मैं आशक हूँ रंजो अलम्का गर ये मेरे पास न हो । मुझ मरीज को तो फिर यकदम जीनेकी आश न हो ॥ बेचैनीसे उल्फत है बेकलीसे याराना अपना । हिजर है अपना दोस्त औ वतन है वीराना अपना ॥ आह की नकदी पासमें है खाना है मयखाना अपना । जीना यही है किसीके ऊपर जीजाना अपना ॥

शैर--फुरकते यार वह क्या मजे दिखलाती है । बेकाराहि मेरे दिल्को बहुत भाती है ॥ वस्ल होता है तो वो बात चली जाती है । इन्तजारीसे तबियत् नहीं घबराती है ॥

रंग जर्द नहीं हो अपना और चहरा मेरा उदास न हो । मुझ मरीजको० ॥ १ ॥ जो आशक सादिक है उनकी जीस्त जान का खोना है । यही खुशी है जो उस दिलवरकी यादमें रोना है ॥ खाकके सोनेसे बत्तर पन्ना और चाँदी सोना है । वजूसे बेहतर हमें अश्कोंसे मुंहका धोना है ॥

शैर-टपकके आंसू जो रुखसार पर ढलकते हैं । तो मेरी आँखमें जोहर हरएक चमकते हैं ॥ ये मस्त दानों हैं और दो जहांको तकते हैं । दीवाने दर्दके हैं अब ये कब झपकते हैं ॥

जो जुलम और जफामें अपना दुरुस्त होश हवास न हो। मुझ मरीजको० ॥ २ ॥ प्यास हमारी बुझती है इस खूने जिगरके पीनेसे। वाकिफ हुवा हूँ मैं अपनी चाहके जरा करीनेसे ॥ काम नहीं काशीसे मुझे नहीं मक्के और मदीनेसे। और न आरजू हमें मरनेकी न मतलब जीनेसे ॥

शैर--आतिशे इश्कसे जलके जिगर तर होता है। जेरसायेसे सनमके ये जबर होता है ॥ और बेखबरीसे दिलहर्गिज न खबर होता है। नफा है इश्कमें यही जो जरर होता है ॥

गर्चे कत्ल नहीं होवें हम तो काम इश्कका रास न हो। मुझ मरीजके० ॥ ३ ॥ दर्द हमारा दिलवर है हरवक्त इसीसे यारी है। वेददोंसे भी अपनी कुछ नहीं गिले गुजारी है ॥ सूली पर मन्शूर ने वो अनल्हक सदा पुकारी है। जान गई वलासे नाम तो उसका जारी है ॥

शैर--इश्कबाजीमें अगर जानकी बाजी होजाय। तौ तवियत यह मेरी खूबसी राजी हो जाय। चाहे हम पर हो जफा या दगाबाजी होजाय। रजामें राजी हैं उसके जो वह राजी हो जाय ॥

बनारसी कह अगर्चे मेरा मुरसद देवीदास न हो। मुझ मरीजको तो फिर यकदम जीनेकी आश न हो ॥ ४ ॥

जो रंज उठावेगा खुदाको पावेगा-बहेर लँगडी।

कहा ये मुझसे रंजने आशक मेरे पास न हो। तो दुनियामें आशकी आशककी फिर रास न हो ॥ इश्क है मेरा मकाँ औ मैं रहता हूँ उसीके खानेमें। वह नहीं आशक कि जिसके दर्द न होवे शाने में ॥ तीरमें क्या है लुत्फ मजा मिल जाय जो रहो निशानेमें। बस्तीमें नहीं गुजर आशक हैं मस्त बीरानेमें ॥

सूख गया मजनू औ वह ताकत बनी रही मस्ताने में। अब तक जिसका नाम रोशन है सुनो जमाने में ॥

शैर- है कहां तकलीफ व तलवों में जो चुभते हैं खार। हँस पड़ा मन्सूर तो शरमा गई उस जांपे दार ॥ रंज ये कहता है आशक वह करै जो जां निसार। हर कदम पर तीर हो हर दिल में हो वह जिक्रे यार ॥

चोट न आशक सहे और अपना खूं पीने की प्यास न हो ॥ तो दुनियां में ० ॥ १ ॥ दमभर का है रंज औ फिर राहत है कयामत तक बाबा। उठाले सिर पर अलम तो देखे लुत्फ इसमें क्या क्या ॥ रंज यही कहता है जो आशक पक्का हो तो इधर को आ। जुलम से मुतलक न डर औ खौफ न अपने दिल में ला ॥ सर को काटकर सरमद ने जिस वक्त हथेलीपर रक्खा। उसी वक्तसे नाम मुतलक न बादशाह का रक्खा

शैर-कर दिया तख्त तबाह देहली की अब उडती है धूल ॥ क्या खता सरमद की थी थी शाह की मुतलक यह भूल ॥ देखये अब इस गुलिस्तां में वह कब आवेंगे फूल। गर करे यह अर्ज आशक तो खुदा को हो कबूल ॥

रंज ने ये फर्माया आशक को मेरे कुछ पास न हो। तो दुनिया में ० ॥ २ ॥ आरे से चिर जांय नहीं घबरांय जो आशक हैं पक्के। सीना सामने करें दिलवर जो चोट मारे तक्के ॥ कभी न निकले मकांसे वह गर लाख बजे के दे धक्के। दरे यार को छोड नहीं जांय वह काबे औ मक्के ॥जैसे जुवारी जोरू हार के हो जाते हैं भव चक्के। तो भी अपनी जवां से कहा करें वह पौ छक्के ॥

शैर-इश्क में बाजी है सर की काम दौलत का नहीं । इससे बेहतर खेल हमने और कोई देखा नहीं ॥ जिसने अपना शिर न बेचा कुछ मजा चक्खा नहीं । आशकों ने जीते ही तन बदन रक्खा नहीं ॥

लाख बने के सदमों में गर दुरुस्त होश हवास न हो । तो दुनिया में ० ॥ ३ ॥ खाक में गर मिलजाय गोरसे गुल हो करके निकलते हैं । अजब हैं आशक मार्ग के बाद भी फूले फलते हैं ॥ रोशनहो कुल आलम में जो खडे इश्क में बलते हैं । उन्हें देखकर जो पत्थर हो वह भी पिघलते हैं ॥ देवीसिंह के सखुन पर शायर हरेक हाथ को मलते हैं । चारों तरफ से वाह वाह करैं औ बहुत उछलते हैं ॥

शैर-ये काल में मारफत हैं रंज से राहत मिले । जो कि डूबा चाहमें फिर उसे चाहत मिले । गम अगर खायें तो उसको रोज फिर न्यामत मिले ॥ दीद उस दिलवरका जीते औ ताक्यामत मिले ॥

रंज ये बोला बनारसी से गर तू मेरा दास न हो । तो दुनिया में आशकी आशक की फिर रास न हो ॥ ४ ॥

बागे बहेश्तमें खुदाके आनेकी तारीफ--बहेर लँगडी ।

बाग बाग हुआ बाग आप जब आये बागे इरमके बीच । फूल फूलके गिर पडे हरयक फूल हर कदमके बीच । जुल्फ मुसलिसल देख पेंचमें आया सम्बुल चमनके बीच ॥ नयन ने तेरे शर्मंदी नरगिस काले हिरन के बीच । फूल रही है फुलवारी वो प्यारे तेरी फबनके बीच ॥ कदपर सदके करूं मैं सर्वसिंह गुलशनके बीच ॥

शैर--करूं लबपर तसद्दुक लाल गुल्लालेके दो टुकडे ।

आ दंदां मोतिआं देखे तो ऐसकी आब सब उतरे ॥
अगर्चे मुस्कराके और करे कुछ बात तू हंसके।
तो होवे बेकली हरएक कली फूट खिले गुंचे ॥
कौन वो है खुशबू जो बसी है नहीं तेरे दम कदमके बीच।
फूल फूलके० ॥ १ ॥ रुखसारोंको देख गले गुल गुलाब तेरी लगनके बीच। सदा सुने तो धुने शिर तूती आगि लगे अगनके बीच ॥ भरा हुआ है चाह हुस्न का आपकी चाहे जकनके बीच। डूब गये हम न दहसत करी जरा इस मनके बीच ॥
शैर-फिदा दिल है गुले राना तेरे ऊपर हरेक गुलका।
दिखावादे बहारी और पिआदे जाम उस मुलका ॥
मचे वो कहकहे और चहचहे गुल हो तज मुलका।
खुलें परवाल कुमरीके कहा ले मान बुलबुलका ॥
शाखशाख हो हरी शजरकी लगे कमल हर कमलके बीच।
फूल फूलके० ॥ २ ॥ नजर पडी जिस वक्त गुलिस्तांकी तेरे परैहनके बीच। चाक गरेबां किया गस खाके गिरे गुलधरनके बीच ॥ वह है नजाकत आपमें यै हैं कहां जुही यास मनके बीच। बनबनके सब फूले फूल हैं तेरे यौवन के बीच ॥
शैर-हुआ मुर्गाने चमन का दिमाग तर बूसे।
महक आने लगी उल्फतकी वो तुझ गुलरूसे ॥
सिफत मैं किस तरह तेरी करूं कौन मुंहसे।
खार की बात न तूने करी कभी मुँहसे ॥
लगी चाटने तलवे तेरे आई तेरी शबनम के बीच। फूल फूलके० ॥ ३ ॥ मुरझाया दिल हरा हुआ हुई गुलजारी गुल बदनके बीच। खिजांका मुतलक नाम नहीं रहा गुलों

के वतनके बीच ॥ झुकझुकके सब करें डालियाँ। सिजदा तेरे चरणके बीच। कहै देवीसिंह ख्याल तौहीद मारफत सखुनके बीच॥

शेर-खिंचा नक्शा मेरे दिल पर है वह तेरी सफाई का।
बसी तस्वीर आंखों में और है जलवा इलाही का॥
किसीको ताज बख्शा और किसीको तख्त शाही का।
गदाई हमको दी जिसदम दिया दावा खुदाई का॥

बनारसी कहै गजब झलक है तेरे कदम के पदम के बीच। फूल फूल के गिर पडे. ॥ ४ ॥

दवा इश्कके बीमारी की किसी ने न लिखी सो हमने लिखी।

नुस्खा इश्क का लिखता हूँ गर किसीको ये आजार भी हो। जहर हलाहल पिये तो जिये औ ताकतदार भी हो॥ जख्म जिगर पर कारी हो और भीतर उसके गार भी हो। गुले धतूरा लगे तो गुलशन बाग बहारभी हो॥ लगें इश्कके तीर और ऊपर से पडती तलवार भी हो। झुकादे सर को सो उस से मौत तलक लाचार भी हो॥

शेर—यार को मिलने को तुझसे जो कुछ इनकार भी हो। तू आंखें बन्द जो करले तो ओ दीदार भी हो॥ बातही बात में उससे कभी तकरारभी हो। जवाब उसका न तू दे तो फिर वो यारभी हो॥ मैं तो यही लिखता हूं इश्क का भला कोई बीमार भी हो। जहर० ॥ बेचैनी हो दिलपै बंधी आंसुओं का हर दंतार भी हो। दवाहै उसीके कुछ इस दिलको सबरो करारभी हो॥ शोरों फिगांहों जबां पर हरदम आहे आतिशबार

भी हो । जिगर जलाये तो दिल हो रोशन उससे प्यारभी हो॥
शैर—मिसले मनसूर जो उल्फत में तुझे दारभी हो । तूही बे खौफ तो फिर दार वो नादारभी हो ॥ किसी के इश्क में दिल तेरा बेकरारभी हो । मिले वो तुझको जो जां उसपै से निसारभी हो ॥ तड़फे मुर्गे विसमिलकी तरह से और जीना दुस्वारभी हो । जहर० ॥ तेरे मारने के खातर वो जुल्फ जो उसकी मारभी हो । बलायें उसकी तू सरपर ले तो दिल हुशियारभी हो ॥ रश्के चमनकी लगन में तू गर सूख के मिसले खार भी हो । गुलों के ऊपर जो गुल खायें तो गुले गुलजार भी हो ॥

शैर—सनमकी चाह में ऐ दिल तू असकेवार भी हो । जो गोता मारके डूबें तो उसके पारभी हो ॥ अश्क गौहर का गले में किसी के हारभी हो । औ मालामाल हो जो उसका खरीदार भी हो ॥ दर्दसरी हो इश्क की औ उलफत का चढ़ा बुखारभी हो । जहर० ॥ मिसले कैस सहरा में तू दीवाना आशकेजार भी हो । खयाले लैला से तेरा वहीं वस्ल दीदार भी हो ॥ इश्कके सौदे में जो किसीका छूटगया घरबारभी हो। लुटादे सब कुछ मालो असबाब तो फिर जरदारभी हो ॥

शैर—कतल करने को जो वोह इश्क सितमगारभी हो । जान देने को तू अपनी वहीं तैयार भी हो ॥ दामे काकुल में तेरा दिल जो गिरफ्तारभी हो । बला से उसकी न तू डर जो मारामारभी हो ॥ देवीसिंह कहैं बनारसी गर इश्क में कोई खुद्दार भी हो । जहर० ॥

ख्याल सूमोंका-कंजूसका बुरा हाल-बहेर लंगडी।

इस दुनियां में आये खुदा के हुए न प्यारे चले गये। किसी को कुछ नहिं दिया तो हाथ पसारे चले गये॥ शिकम में जबतक कैद रहे तो कहा खुदाकी करेंगे याद। बाहर आये तो रोने लगे करी मांसे फरियाद॥ दूध पिया मांका औ छाती मली किया योवन बरबाद। लगे मांगने खिलौने खेल कूद में होरहे शाद॥

शैर–लगी हवा जो जमाने की तो सब भूल गये। पिया जो दूध मुफत का तो उसमें फूल गये॥ कभी सोये जो पालने में पां पसार के वह। तो नींद ऐसी वह आई कि उसमें झूल गये॥ कभी हिंडोले पर जागे बाबा ने उतारे चले गये। किसी को०॥ दौलतवर के घर में पैदा हुए तो गहने सोने के। बहुत दिनों तक उन्होंने बदन में पहने सोने के॥ चांदी के नहिं पहनूंगा अब लगे वह कहने सोने के। हमेशा जेवर लगे वो रहिने सोने के॥

शैर–रहे जबतक सब नादां तो सबने प्यार किया। किसी को बोसा दिया और किसी को यार किया॥ लगे पढ़ने को इलम मौलवी पण्डित के यहां। तो कुछ दिनों में दिलको खूब होशियार किया॥ इधर उधर आंखों को लड़ा मारे नज्जारे चले गये। किसी को०॥ जिस दिन पैदा हुए ओ तोनहिं दिन का हाल सब भूल गये। खुदा से वादा किया उसका खयाल सब भूल गये॥ किसी से जो कुछ लिया तो ओ उस का भी माल सब भूल गये। ये नहीं समझे कभी आवेगा काल सब भूल गये॥

शैर--नशा चढा जो जवानी का तो बदहोश हुये ।
किसीने कुछ भी जो मांगा तो ओ खामोश हुये ॥
कोई कहने लगा अपनी जो वो तकलीफ का हाल ।
खयाल कुछ न किया और न उधर गोश हुये ॥

लालाजी लेने आये देनेके मारे चले गये । किसीको कुछ नहिं दिया तो हाथ पसारे चले गये ॥ खोया लड़कपन खेल कूदमें गई जवानी राँडके साथ । हमेशा सोहबत तो उनकी रही ओ भडवे भांडके साथ ॥ दांत टूट गये तो फिर रोटी लगे ओ खाने खांडके साथ । बैल जो बुड्ढा हुआ तो कहां मिले फिर साँडके साथ ॥

शैर--जमा जोरी जो उन्होंने तो वो आजार हुआ ।
उसीमें मालो मताभी बहुतसा ख्वार हुआ ॥
कभी खैरात न की औ न दिया भूखोंको ।
तो उनके घरमें वह हुकमाओंका दरबार हुआ ।

कोई लाँगर होके मर गये कोई बने करारे चलेगये ॥ किसीको कुछ० ॥ लाखोंमें कोई हुआ सखी और बहुत जहांमें देखे सूम । कहे देवीसिंह तो आखिर सूमोंका फूटा मकसूम ॥ बनारसी कहै मैंने देखा खूब मुझे ये है मालूम । मेरी नसीहत अगर माने तो हो मुल्कोंमें धूम ॥

शैर--ये सखुन मैंने कहा कुछ भी ज्ञानमें आया ।
जरा तो मुखसे कहो हांके ध्यानमें आया ॥
के सिर्फ सुनतेही आये थे न कुछ भी समझे ।
तुम्हें हमारी कसम कुछभी कान में आया ॥

सूमोंसे देनेको कहा तो ओ दइमार चले गये । किसीको कुछ नहिं दिया तो हाथ पसारे चले गये ॥

खुदा की राह में जो चाहे चलता है उसका हाल।

बहेर लंगडी ।

कूंचै जानामें गर कोई धरके जरा कदम निकला । फिर वो न निकला उसी कूंचे में उसका दम निकला ॥ ये है रास्ता सख्त गर कोई इससे नागहां आन पडा । जान बूझके फिर वो देता है इसीमें जान पडा ॥ कहीं तपिसमें तपे कहीं कांटों का नजर मैदान पडा ॥ कदम कदम पर अब हमको लुत्फ इश्क का जान पडा ॥ शैर–हमें गुलशन से भी बहतर हैं इश्क के कांटे । ये फर्श खारके तोफा हैं मुझे मखमल से ॥ कहूं मैं किस्से सुनै कौन इश्क के किस्से । जो देखै हाल हमारा तो कैसे भी रोदे ॥ रहा वहां का वहीं देखने जो अपना हमदम निकला ॥ फिर वो न निकला उसी कूंचेमें उसका दम निकला ॥ १ ॥ मजा चाहका जिसने देखा होगा वह डूबा होगा । बहेर इश्क में जो तेरा होगा वह डूबा होगा ॥ अश्क चश्मसे जिसके बहता होगा वह डूबा होगा । चाहे जकनपर जो शैदा होगा वह डूबा होगा ॥ शैर–बहेर उल्फत का किसी को भी किनारा न मिला ॥ या खुदा नाखुदा का हांपर इशारा न मिला ॥ किश्ती हरगिज न मिली कुछ भी सहारा न मिला । थाह मुतलक न मिली दमभी गुजारा न मिला ॥ लगा न थल बडा उस जांपरसे न कोई आदम निकला। फिर वह न निकला उसी कूंचेमें उसका दम निकला ॥२॥ इश्क को जो देखा तो खडा है मेरे सिर पर दार लिये । हुस्न को देखा तो वह धमकाता है तलवार लिये ॥ जुल्फ यही कहती है कि मैंने कितनेई आशक मार लिये । चश्म इशारे करे हैं जादूके हथियार लिये ॥ कौन इस कत्ल के

मैदां से निकल जावेगा। किस तरह काकुलेपेंचांसे निकल जावेगा॥ कोई न इश्कके तूफां से निकल जावेगा। न निकल जावेगा गर जांते निकल जावेगा॥ तनिक अबरू तू जिस पर वह लेके तेगे दुदम् निकला। फिर वह न निकला उसी कूंचेमें उसका दम निकला॥ ३॥ कत्ल हुआ वह जिसने इस मैदां में आके कदम मारा। गिरा जमींपर न उसने आह करी औ न दम मारा॥ उनके हुस्नके आलम ने एक आलम का आलम मारा। कह देवीसिंह गया मैं भी इसमें उस दम मारा॥ इश्क ने दारपर मन्सूर को चढाया है। हुस्न ने यार के कोहनूर को जलाया है॥ नूर ने जिसके हरयक नूर को बनाया है। शहूर उसमें बेशहूर को बताया है॥ बनारसी कर तर्क जहांको सीधा राहे अदम निकला। फिर वह न निकला उसी कूंचे में उसका दम निकला॥ ४॥

सनम्के जुल्फ से लगाके और सब तारीफ।

बहेरं लँगडी।

जुल्फसिलासे मारसिआ है चश्मसे लाली गुल में है। नकशा कद्का कयामत धूम यह आलम कुल में है॥ सरसे हर सरदार बने पेशानी जल खुरशीद। चीनेदेवी को वह है तहरीर न जिसकी दीदोशुनीद॥ अबरूसे झुकी कमां औ पैदा हुआ फलक पर मोहईद। खंजरेबुर्राने पाई बाढ किया लाखों को शहीद॥

शैर-है कुरां में वह जो बिस्मिल्ला अबरू से बनी॥
औ अली की तेग भी वल्लाह अबरू से बनी॥
और सिफत क्या क्या करूं मैं कुछ कहा जाता नहीं।

जो चला झुकके तो उसकी राह अबरू से हुई ॥
तुझ गुलका चर्चा गुलेराना यही तो हर बुलबुल में है ।
नकशा कदका कयामत धूम यह आलम् कुलमें है ॥ २ ॥
मिजैसे पैका बने औ नशतर चुभे रगेजां पर आकर । खार भी उस दम खटकने लगे मेरे वाँ पर आकर ॥ निगासे वह तलवार चली सो लगी नीमजां पर आकर । आह भी मुतलक न ठहरी मेरी इस जबां पर आकर ॥

शैर-शरारत वह तेरी चितवन में ऐ रश्क कमर ।
होरहा जीसे जहां के बीचमें जादू से हर ॥
लडगई जिस शख्स की वह आँख तेरी आंख से ।
फिर उसे तेरे सिवा कुछ भी नहीं आता नजर ॥

वही जिक्र मयखाने में और यही सदा कुलकुल में है ।
नकशा कदका कयामत धूम यह आलम् कुलमें है ॥ २ ॥ बीनी से बना अलिफ तेरे रुगसे वह पैदा नूर हुआ । जिसकी झलक से गिरा मूसा औ खाक कोहतूर हुआ । लबसे लाल यमन बने याकूत भी वही जरूर हुआ । औ दंदांसे बने गौहर तो क्या ही जहूर हुआ ॥

शैर-है झलक हीरों में ऐ प्यारे तेरे दन्दान से ।
बर्क भी चमकी वही दांतों में तेरी शान से ॥
औ जबाँसे वर्गगुल पैदा हुआ रंगीन वोह ।
हरसखुन शीरीं तेरा निकले है क्या ही आनसे ॥

बादेसबा कहती है यही औ वही जिक्र हरगुल में है ॥
नकशा० ॥ ३ ॥ चाहे जकन से आशक सादकके दिलमें वह चाह हुई । लगा झांकने कुए जिसकी उधर निगाह हुई ॥ गले

से मीना बना सुराही भी उसका हमराह हुई । कहै देवीसिंह सिफत किससे तेरी अल्लाह हुई ॥

शैर-थक गये लाखोंहि शायर करके सब तेरा बयां ।
पर न पाया राज तेरा तू तो है राजेनिहाँ ॥
किसकी ताकत है जो आगाह हो तेरे हुस्न से ।
यक झलक में गिर पडा मूसा भी होकर नातवां ॥

बनारसी ने यही लिखा कावे काशी गोकुलमें है । नकशा कदका कयामत धूम ये आलम् कुल में है ॥ ४ ॥

तथा ।

आशक मैं हूँ उस गुल का जिस गुल पर फिदा हैं सारे गुल । बाहर में भी न जिसके नाम खिजां का है बिलकुल ॥ सदा रहै सर सब्ज वह उसकी महकसे मस्तानापन हो । दीद उस गुलकी करे तो दिलमें दीवानापन हो ॥ अदाँ से उस समशाद की आशक में तो आशकनापन हो । क्यों नहीं गुञ्चे खिलें जब उसमें मुसक्यानापन हो ॥

शैर—बनाये क्यों न उस गुलशन में कुमरी आशिया अपना । गुले गुल्जार गुलरू और जहां हो बागवां अपना॥ नहीं सैयाद का डर कुछ न मुतलक खौफेजां अपना । मकां है लामकां अपना निशां है बे निशां अपना ॥ गुञ्चे भी यही चटक चटकके करें चमन में शोरोगुल । बहार में० ॥ १ ॥ पेंच से जुल्फे सियःफाम के दामें इश्क पेंचां बनजाय । मुश्के-खुतन भी महक जुल्फों से वह परेशां बनजाय ॥ बालसे आये बबाल संबुल पर जो जुल्फों पेंचां बनजाय । नाफे आहू का मुंह काला हो घासरैहां बनजाय ॥

शैर—पड़े झूमर वो उसके रुखपर जुल्फों का जो मुंह खोले। तो अशरत का हिंडोला देखकर खाये वह झकझोले॥ और काकुल सूंघले काला न अपने मुंह से कुछ बोले। यकीं ये है कि पीने के लिए अपने जहर घोले॥ जुल्फ अम्बरी है या सोसनेगुल है तेरी काली काकुल। बहार में० ॥ २ ॥ चश्म से नरगिस शरमिन्दा हो सर को झुकाये खड़ा रहे। आंख उस गुल से कभी मुतलक न मिलाये खड़ा रहे॥ कद से सर्व सनोवर गुलशन में गडजाये खड़ा रहे। दहनसे गुंचा तंग होकर शरमाये खड़ा रहे॥

शैर—सफाई देखकर उसकी समन मैला हो गुलशनमें। वो नाजुकपन न जूही में जो कुछ है यार के तन में॥ हिना देखे हथेली को तो खूं उगला करे मन में। सदा उसकी सुनै तूती तो फिर भागे कोई बन में॥ शाख शाखपै यही चहचहा करती है शैदा बुलबुल। बहार में० ॥ ३ ॥ रश्के चमन गुल बदन को गुल देखें तो गरेबां चाक करें। हरएक गुलिस्तां का वो यक दमभर में दम नाक करें॥ गर्चे कोई मुर्गाने चमन जो उससे मुहब्बत पाक करें। बहेर इश्कका खुदा उस आशक को पैराक करें॥

शैर—सबा आई जो गुलशन में तो उसकी क्या बन आई है। नहीं वाकिफ थी जिस बूसे वो सब उसमें समाई है॥ न मुतलक खार गुलशन में नहीं गुलकी बुराई है। नहीं गिल में लगावो गुल वहां जल्वे खुदाई है॥ बनारसी उस गुलरू ने पिला दिया वो जामे मुल। बहार में भी न जिसके नाम खिजां का है बिलकुल ॥ ४ ॥

लावनी ।

जुल्फ को तेरी मार कहैं तो मार मार से कटवाऊं । सम्बुले पेंचा कहै तो पेंच में मैं उसको लाऊं ॥ कद से सर्व की निस्वत दे तो खोद के उसको गाड़ूं मैं । अगर सनोवर कहै तो चमन से अभी उजाड़ूं मैं ॥ जाल से निस्वत दे जो फ़िल की लात से उसे लताड़ूं मैं । पंजये मिरजां कहै तो दस्त से अभी उखाड़ूं मैं ॥ काकुलके गर दाम कहै तो जाल में उसको उलझाऊं । सम्बुले पेंचा० ॥ १ ॥ चश्म तेरे नरगिस जो कहै तो आंखको उसीको फोड़ूं मैं । दन्दां गौहर कहै तो दांत सब उसके तोड़ूं मैं ॥ दहन को गुंचा कहै तो उसके मुंह को पकड़ मरोड़ूं मैं । जान के निस्वत ये दे तो जान न उसकी छोड़ूं मैं ॥ अगर तेरी काकुल उलझै तो क्योंकर उसको सुलझाऊं । संबुले पेंचा० ॥ २ ॥ जकन को तेरे चाह कहै तो कुएमें उसे डुबाऊं मैं । पेशानी को कहै खुरशैद तो उसे धुमाऊं मैं ॥ गले को मीना कहै तो गर्दन उसकी अभी कटाऊं मैं । बीनी को गर अलिफ कोई लिखे तो उसे भुलाऊं मैं ॥ गेसू को कहै घटा तो उसका घटा के रुतवा मैं आऊं । संबुले पेंचा० ॥ ३ ॥ जवां को तेरी कहै वर्गगुल उसकी जवां निकालूं मैं । हिलाल अबरू कहै उसके टुकड़े करडालूं मैं ॥ सीने को कहै आईना तो उसे न देखूं भालूं मैं । कमर को तेरी अगर मूँ कहै तो उसे छिपालूं मैं ॥ बनारसी कहै तेरे बाल की कहीं भी निस्वत सुन पाऊं । संबुले पेंचा कहै तो पेंचमें मैं उसको लाऊं ॥ ४ ॥

लावनी ।

मेरी नज़र के बीच में तेरे दो रुखसारे फिरते हैं । जिधर

को देखूं उधर तेरे रुखसारे फिरते हैं ॥ तेरे इश्क में फलक के ऊपर लाख सितारे फिरते हैं । शम्शोकमर भी इश्क में मारे मारे फिरते हैं ॥ तेरे इश्क में जिसके सरपर भी वो आरे फिरते हैं । सरपर उसके हुमा गोया पर पसारे फिरते हैं ॥

शैर--इश्क में दरों बहर जो तुम्हारे फिरते हैं । कभी तो उनके भी दिन औ सितारे फिरते हैं ॥ आंख में जिसकी वह तेरे नजारे फिरते हैं । रहम होता है उन्हें हम पुकारे फिरते हैं॥ इधर उधर और जिधर तिधर सब तेरेही प्यारे फिरते हैं । जिधर को० ॥ फंस इश्क की कीचड में जो पैर उधारे फिरते हैं । कदम में उनकी वो तो अक्सीर के गारे फिरते हैं ॥ जो केतने उरियां होकर उस सनम के द्वारे फिरते हैं ॥ उनके जामेंपै कुरबां लिबास सारे फिरते हैं ॥

शैर--जहां में कोई तेरे सहारे फिरते हैं ॥ वो है आलम में पर इससे किनारे फिरते हैं ॥ मौतका खौफ नहीं सर उतारे फिरते हैं । दुई से दूर वो एका बिचारे फिरते हैं ॥ कभी फिरे कावे में कभी जा ठाकुरद्वारे फिरते हैं ॥ जिधरको० ॥ कोई तसौवर में तेरे वो बलख बुखारे फिरते हैं । कोई चाह में आपकी तख्त हजारे फिरते हैं ॥ कोई तो जमना पर कोई गंग किनारे फिरते हैं । मिले तू उनको गरज जो मनको मारे फिरते हैं ॥

शैर--तर्क दुनियां को किये जो बिचारे फिरते हैं । मैं जो देखा ओही तेरे दुलारे फिरते हैं ॥ मिले जो तुस्से जहां से वो न्यारे फिरते हैं ॥ याद में वो तेरी प्यारे हमारे फिरते हैं ॥ कोई करते खैरात फिरें कोई बने पिंडारे फिरते हैं । जिधरको०॥

तेरे इश्क में खाकसार हो हम भी मारे फिरते हैं ॥ सदा अन-लहक जबां से हम ललकारे फिरते हैं ॥ देवीसिंह भी लिबास तनपर खाक का धारे फिरते हैं ॥ जबांको अपनी नाम से तेरे सुधारे फिरते हैं ॥

शैर—जो तुझको भूले वोः दुनियां में हारे फिरते हैं ॥ काम के कुछ ही नहीं वोः नकारे फिरते हैं ॥ तेरी कुदरत से तो हम बेसहारे फिरते हैं ॥ हम अपने दिलही में तुझको निहारे फिरते हैं ॥ बनारसी की आंख में हरदम तेरे इशारे फिरते हैं ॥ जिधर को० ॥

लावनी

लाखों बजह के रंजो अलम गम सनम वो दिखलाये तो क्या ॥ नालां इश्क से न होना जान तलक जाये तो क्या ॥ इश्क में लैला के मजनूने कभी जबां से आह न की ॥ जिस्म को काटा खुशी से तिरछी जरा निगाह न की ॥ चाहमें सीरीं के कोहकलने और बात की चाह न की ॥ सरसे तेगा लगाया किसी से कुछ सल्लाह न की ॥ जो ऐ दिल आशके आंबाज है वोः इश्क करते हैं ॥ वो जां देते हैं उलफत में नहीं मरनेसे डरते हैं ॥ विसाले यार होता है मसीरे बाद मरने के ॥ इसी से आशके सादिक भी जीते जीहि मरते हैं ॥ दर्द इश्क से मिस्ले जरस फुरकत में चिल्लाये सो क्या ॥ नालां इश्क से न होना जान तलक जाये तो क्या ॥ और जेलखाने भी इश्क में बहुत उठाये रंजो मेहन ॥ कुयें झांकती चाह यूसुफने फिरी हेरा बन बन ॥ और इश्कमें शाह बलखमें छोडा तख्त शाही

वो वतन ॥ फ़कीर होकर फिरा सहरा में खुदा से लगी लगन ॥

शेर-खुदा उलफत में मिलता है जो अयदिल इश्क कामिल हो ॥
मिले क्यों कर न वोः दिलवर ये दिल जिसपै माइल हो ॥
तमन्ना है विसाले यारमें जो जान खोते हैं ॥
तो क्यों उस्से न फिर आदीज फनाजन्नतमें वाशीलहो ॥

दिल राम वो मिले ये दिल तकलीफ अगर पाये तो क्या ॥ नालां इश्क से न होना जान तलक जाये तो क्या ॥ और सुनो यक बात मुझे वोःभी इसदम है याद पड़ी ॥ इसी इश्क में उठाई रांझेने तकलीफ बडी ॥ हुई किसीसे तयना आजतक ये मंजिल है बहुत कडी ॥ इसी इश्क में मियां मंशूरके फांसी गले पडी ॥

शेर-हजारों जानसे मारे गये इस इश्क उलफत में ॥
रहा कोई मिजाजोंमें भला कोई हकीकत में ॥
किसीने जिस्म की अपने उतारी खाल सरतापा ॥
किसीने शौक से अपना कटाया सर मुहब्बत में ॥
यादमें उस दिलरुबाकी आफत सरपर गर आये तो क्या ॥

नालां इश्कसे न होना जान तलक जायेतो क्या ॥ फंसा रहा वो हस्र तलक जो दामें इश्क में हुआ असीर ॥ कभी न छूटा कि जिसका इश्क हुआ फिर दामनगीर ॥ बनारसी कहैं कसम मैं इसी इश्क में हुआ फकीर ॥ खाकसार हो फिरा सहरा में हमेशा बेतौकीर ॥

शेर-रँगे कपडे जो उलफत में रंगीनी नजर आई ॥
जो खाकी सतर मली तनपर तो सब कुछ आबरू पाई ॥

पहनके इश्ककी कफनी किया आबाद सहराको ।
फिरा चारों तरफ वहसतमें बनकर मैं तो सौदाई ॥
उसके इश्कमें सरपर गर आरा भी चल जाये तो क्या ।
नालाइश्कसे न होना जान तलक जाये तो क्या ॥

ब्रह्मज्ञान इश्क मार्फत परमेश्वरके दर्शनमें ।

बहेर लंगडी

सूरत उस माहरूकी हरदम आंखमें अपने वस्ती है । लाख इबादतसे ज्यादा दुनियामें हुस्न परस्ती है ॥ क्या होताहै वजु किये और क्या मसजिदमें जानेसे । क्या होताहै नमाज पढके सरको वहां झुकानेसे । किया न जिसने इश्क जहांमें उठा न हाथ जमानेसे ॥ जीते जी वह नहीं मिला तो मिलेगा क्या मरजानेसे । अजब मजा पाया है मैंने आंखमें आंख लडाने से ॥ जिसमें देखा उसीको देखा लगा है तीर निशानेसे । इसी सबबसे दिलमें मेरे आठ पहर यह मस्ती है ॥ लाख इबादतसे० ॥ १ ॥ गया अगर काबेको तो क्या वहां खुदा मिल जावेगा । हैरां होकर फिर उलटा अपने घरको फिर आवेगा ॥ कोई अगर धन लुटाके अपना बुतखाना बनवावेगा । पासकी दौलत खोकर फिर क्या वहांपै पत्थर पावेगा ॥ जब तक उस माहरूसे अपनी आंखको नहीं लडावेगा ॥ इस दुनियाँ में आकर फिर क्या देखेगा दिखलावेगा । यही सुना है जहांमें मैंने जहां तलक यह हस्ती है ॥ लाख इबादतसे० ॥ २ ॥ रँगे अगर कपडे औ मन नाहिं रँगा तो फिर वो रंग है क्या ॥ छोडके वो माहरू बुतोंका संग किया तो संग है क्या । तनसे नंगा रहा जो दिलमें नंग नहीं तो नंग है क्या ॥ नशा चढा

नहीं इश्कका पीली भांग तो फिर वो भंग है क्या ॥ दिलमें आई चली गई तो ऐसी भला तरंग है क्या । तन धोया और मन नहीं धोया उन्हें भला गंग है क्या ॥ चश्म मेरी रोरोके यही कहती जिस वक्त बरस्ती है । लाख इबादत० ॥ ३ ॥ कुरानकी आयतें पढो और इश्कका दिलमें जिक्र न हो । फिर तुमको क्या खुदा मिले चाहे अपना शिर धुना करो ॥ पेटके खातिर पण्डित के घर जाकर वेद पुराण पढो । दो अक्षर नहीं पढे प्रेमके मौतसे फिर किस तरह बचो । आग बालके तपो अगर चाहे उलटे होकर लटको ॥ बिना इश्क दीदार न उसका मिले मुफ्त काहे को जलो ॥ बनारसी के इसी सखुन पर आशके सारी बस्ती है ॥ लाख इबादत से बढकर दुनियां में हुस्न परस्ती है ॥ ४ ॥

तथा

देखलिया आंखों ने नागहां एक दम भर जोवन तेरा ॥ मेरा क्या रहा हुआ खुद बखुद ये तन मन तेरा ॥ जिसको मैं समझा था अपना बनाये अब मसकन् तेरा ॥ आह क्या करूं लुट गया हुआ ये अब सब धन तेरा ॥ देखते ही वो झलक बना मैं आशके जाने मन तेरा ॥ लगा ये कहने रास्ता सख्त है बहुत कठिन तेरा ॥

शैर-तने उरियां है तू और कुछ न पैरहन तेरा ॥
लिबास किसपै करै तू कहां है तन तेरा ॥
जहां न माहो मेहर हैं वहां वतन तेरा ॥
तेरा तो जन्म नहीं और नहीं मरन तेरा ॥

चला न अपना जोर जो देखा तुझे तो हुआ वदन तेरा ॥ मेरा क्या० ॥ जुल्फ तेरी नागिन है या है ये जङ्गल मुष्कके खुतन तेरा ॥ पेच है तेरा या है कुछ इसी में नाजुक पन तेरा ॥ या है ये अबरे नैसां या सम्बुली वो है गुलशन तेरा ॥ जाल है तेरा फँसा है इसी में आशके तन तेरा ॥

शैर--तंग गुंचे को करै क्यों न वो दहन तेरा ॥
वर्क तडपे जो वो देखे कहीं मंजन तेरा ॥
नूर चश्मों का जो देखे कहीं खंजन तेरा ॥
क्यों न अंजन करै आंखों में निरंजन तेरा ॥

आशके बुलबुल कहते हैं गुलजार है तेरा चमन तेरा ॥ मेरा क्या० ॥ चले जिस घडी मैदां में ऐ कातिल तीरो फिगन तेरा ॥ बचे न कोई जो निकले जबां से हुक्म बिजन तेरा ॥ राहु चांद से लडे तो क्या सरकटा है वो दुश्मन तेरा ॥ मेहर मुनौब रोजो सब फलक पै है रौशन तेरा ॥

शैर--कत्ल दुश्मन को करै चक्र सुदर्शन तेरा ॥
मौत भी कुछ न करै जिसपै हो अमन तेरा ॥
पताल पा हैं तेरे और है सर गगन तेरा ॥
तू तो निर्गुण है और गुन हैं ये सब सखुन तेरा ॥

मशरिकसे मगरिब तक देखा बस्ती वीरावन तेरा ॥ मेरा क्या० ॥ कहीं पै मक्का बना है तेरा और कहीं पै बृन्दावन तेरा ॥ कहीं पै काशी कहीं दरिया है गङ्गो जमन तेरा ॥ देवीसिंह कहै दुनियां में है अजब वो चालो चलन तेरा ॥ किसी को मुतलक नहीं मालूम जो कुछ है फन तेरा ॥

शैर--जहांमें है ये जहां तक से अंजुमन तेरा ॥
जो देखें इसको तो बिल्कुल ये है दर्पण तेरा ॥
मेरी आंखों में बना क्याही है रोशन तेरा ॥
ये वो दुर्बीन है करती हैं जो दरशन तेरा ॥
बनारसी कहैं किसी का कुछ नहीं सब नन्दनंदन तेरा ॥
मेरा क्या० ॥

ब्रह्मज्ञान इश्कमार्फत ।

सर है उसी का धड है उसी का मेरा क्या ॥ तू कहै मेरा बताय मुझे भला है तेरा क्या ॥ ज़ुल्फ उसीका उसीकी है यह पेशानी ॥ चीने जबीं हैं उसीकी शान उसीकी लासानी ॥ अबरू है खमदार तेग पर जैसे बाढ़यो बुर्रानी ॥ मिजाती रहैं चश्म खूनी में डोरे तूफानी ॥

शैर--अलिफ अल्लाहकी बीनी और रुखसारे ये हैं उसके ॥
तू अपने क्यों बताये देख रुखसारे ये हैं उसके ॥
वही देखे वो दिखलाये औ नजारे ये हैं उसके ॥
तु अपना यार समझा है जिन्हें प्यारे हैं उसके ॥
गैरकी चीजें बताये अपनी तू अब बना लुटेरा क्या ॥

तू कहै० ॥ लवे लाल याकूत हैं उसके और दंदां गौहर उसके ॥ जबां बर्ग गुलमें देखो हैं क्या क्या जौहर उसके । बात बातमें फूल बरसते लिखे हैं वह दफ्तर उसके ॥ उसीकी सूरत सब हैं जो बशर हैं वो हैं बशर उसके ॥

शैर--अगर तुम चाह में देखो तो है चाहे जकन उसकी ॥
मिलें सब उसकी चीजें उसकी जिसको हो लगन उसकी ॥

बनी गर्दन सुराही सी और है उसमें फबन उसकी ॥
अदा अन्दाज कद उसका और है बाँकी धरन उसकी ॥
उसकी चीज अपनी कर देखे आंखमें हुआ अंधेरा क्या ॥
तू कहै ० ॥ कांधा उसका बाजू उसके हाथ सब उसके हाथ में हैं । पंजे ये मरजां आँगुलियाँ ये अब उसके हाथ में हैं ॥ बनाये नाखूं हिलाल उसने वोः ढब उसके हाथ में हैं ॥ मत कहो अपने अरे ये जब तब उसके हाथ में हैं ॥
शेर–वो सीना साफ है उसका तुझे कुछ है खबर उसकी ॥
शिकम उसकी मुलायम है और हैं नाफे भंवर उसकी ॥
कहां देखी किसने ऐसी तो वोह है कमल उसकी ॥
नजर आये जिसे वो दिलको भी करदे नजर उसकी ॥
ये तन उसका बना अरे नादान तेरा यां डेरा क्या ॥
तू कहै ० ॥ तू कहता है जानूं मेरे उसीके हैं ये दोनों थम् ॥ इसी सबब से जमीं आसमा सब उस पर रहा है थम् ॥ उसी की बनी पिंडलिया और पां झूंठ नहीं मैं करूं रकम् ॥ उसीके तलुवे और एडीको चूमें बाबा आदम् ॥
शेर–जिसे कुछ इश्क हो उसका वो समझे मायने इसके ॥
लिखा तो है कुरां में यों कहां हैं हाथो पां उसके ॥
सखुन यह मेरा रिंदाना समझ में आये है किसके ॥
नूर उसका ही मैं देखूं हूं चहरे पर तो जिस तिसके ॥
बनारसी कहै मत कहो अपना तुझे बहेमने घेरा क्या ॥
तू कहै मेरा बता ये मुझे भला है तेरा क्या ॥

सिफत खुदाके अबरुओंकी ।

हुआ तअज्जुब रुखपर मैंने किया तेरे अबरूका दीद । महे

चार दहपे पैदा हुआ कहांसे माहे ईद ॥ भूल गये हाफिज बिसमिल्लाह देख तेरे अवरुओंकी शान । होश न उनको रहा किस तरह से वो पढसकें कुरान ॥ जुलफिकारभी म्यान फेंक कर गैरतसे बन गई कमान । झुकी इसलिये के जिसमें नजर पड़े कुदरतपे सुभान ॥ खुदाने वोः अवरुवोंमें आयत लिखी जो था मतलब तौहीद । महे चारदहपे० ॥ १ ॥ कभी तो वो तलवार बने और कहींपै वो जमधर बनजा । खाँडा बिछुआ कहीं वो तेगे अजलसर पर बनजा ॥ रोजे हस्रको हिसाब करनेके खातिर दफ्तर बनजा । मौतभी इनसे डरे जिस वक्तके ये खंजर बनजा ॥ तड़पके बोले येही सखुन जो हुये तेरे अवरूके शहीद । महे चारदहपे० ॥ २ ॥ काँप उठे आसमां अगर्चे जरा तेरा अवरू हिलजाय । करे कयामत उधरको जिधर तेरा कातिल जाय ॥ तानके तू जिस वक्त इने क्या जाने किधर जालिम पिलजाय । लाखों बिस्मिल तडपते फिरें जो ये गोशा मिलजाय ॥ कशीद करके दिलमें अपने येही लगा कहने खुरशीद । महे चारदहपे० ॥ ३ ॥ क्यों जायें काबे को भला उस यारके अवरू छोडके हम । अब काबेसे यहां बैठे हैं भवें सिकोडके हम ॥ यारके रुखपर दोका बेदिल उसीसे अपना जोडके हम । करेंगे सिजदा इन मुंह उस काबेसे मोडके हम ॥ पढे ये जिसने दो हरुफ वो हुये तेरे अवरूके मुरीद । महे चारदहपे० ॥ ४ ॥ खुदाने दो खत अर्बीके ये अपने हाथ से लिखे अजीब । ऊपर उनको बनाया नीचे इसके लिखा नसीब ॥ पढे अगर सरनामा ये तो मौला उसका बने हबीब ॥ कहे देवीसिंह फिर उसका बाल न बांका करे रकीब ॥ बनारसी

कहे इसके माया ने कहो करो कुछ गुफ्ते शुनीद ॥ महे चार दहपै पैदा हुआ कहाँ से माहे ईद ॥ ५ ॥

जुल्फ और आंखों की तारीफ।

लगा जंग दिलमें होने जिस वक्त आंख से आंख लडी ॥ मारा जुल्फ से तो वो क्या २ आशक पर मार पड़ी ॥ इधर तो यह ये बरछी भाला ले तीर तुपक तैयार हुई ॥ उधर जुल्फके सामने पडे तो मारामार हुई ॥ बही खून की नदियां वो जिस वक्त चश्म खूँखार हुई ॥ जुल्फ भी उसके साथ खम ठोक कातिले वार हुई ॥

शैर-चश्मने करके इशारा कमाँ चढ़ाई है ॥
जुल्फने बल वो दिखाया के घटा छाई है ॥
देखली हमने के इस वक्त कजा आई है ॥
आंख मैंने जो लड़ाई तो ये लडाई है ॥
चश्मने घायल किया जुल्फ को देखा तो बला बडी ॥

मार जुल्फसे० ॥ चश्म ने ले तलवार किया एकवार तो कुछ बोला न गया ॥ जुल्फके आगे तो मुंह मुझसे मुतलक खोला न गया ॥ चश्मने खंजरसे ऐसा काटाके फेर डोला न गया ॥ जुल्फ देखकर जहेर पीने को तो घोला न गया ॥

शैर-चश्म ने झुकके जो मारा तो न वहां ही रहा ॥
जुल्फके गिर्द जो घुमा तो परेशां ही रहा ॥
निशाने चश्मसे मेरा न कुछ निशां ही रहा ॥
जुल्फ ने ऐसा मरोडा कि नातवां ही रहा ॥
चश्मके जो आया मैं रूबरू वही सांग सीने में गडी ॥

मार जुल्फसे० ।। चश्म ने वो दिखलाके बांकपन् मारा और फिर लाल हुई ॥ जुल्फ यार की तो वो मेरे जीका जञ्जाल हुई ।। चश्म तो गोली भर औ रंजक जमाके गोया दुनाल हुई ॥ जीना मुझको जुल्फ़ बोबाल हुई ॥

शैर--चश्म ने दूर से देखा तो लगाई वो नजर ॥
जुल्फ़ ने पेच ओ मारा के रही कुछ न खबर ॥
चश्म ने मुझपै किया क्या ही वो जादू वो शहर ।।
जुल्फ़ ने ऐसा डसा दिलपै है काले की लहर ।।
लड़ी आंख जिसवक्त यारसे क्या जानेथी कौन घड़ी ॥

मार जुल्फसे० ॥ खूब हुआ जो इन्होंने मारा दुनियां में तो नाम हुआ ।। बिना इश्कके जहांमें कहां कोई सरनाम हुआ ॥ देवीसिंह कहै बनारसी तू अमर दुनियांमें तेरा कलाम हुआ ॥

शैर--जुल्फ़ बखुल्लेल और चश्म हैं यह नूरे खुदा ॥
मुआ जो इस्से वो हरगिज न हुआ उस्से जुदा ।।
किया मेरा तो ये दोनों ने दो जहां में भला ।।
बला से मरगया छुटी तो ये दुनियां की बला ॥
डरे नहीं मुतलक खिलवत सुनतीहै ये मेरे गिर्दखड़ी ।।

मार जुल्फ से तो वो क्या २ आशक पर मार पड़ी ॥

परमेश्वर से मिलने की मस्ती-बहेर लंगड़ी ।

मिला हमें गुलजार वो गुलखाना नहिं चहिये ॥ मैं वहदत में मस्त मैं हूं मैखाना ना चाहिये ॥ दिलको रोशन किया तो फिर तन बदन जलाना नहिं चाहिये ॥ आह की आतश बले वहां आग लगाना नहिं चहिये ।। बहेर इश्क में

बहे उसे दरियामें बहाना नहिं चहिये ॥ डूबा चाहमेंउसें फिर कुयें झकाना नहिं चहिये । इश्कका सौदा हुआ हमें होना दिवाना नहिं चहिये ॥ मैं बहदतमें मस्त मैं हुं मैखाना नहिं चहिये ॥

जो घायल हैं इश्क के उनपर तेग चलाना नहिं चहिये । सरसे परे हैं जो आशक उन्हें सताना नहिं चहिये ॥ जिस जां तबियत लडी वहांसे दिलको हटाना नहिं चहिये । बढाके उल्फत यारसे प्यार घटाना नहिं चहिये ॥ चढी इश्ककी लहर हमें अब जहर पिलाना नहिं चहिये । मैं बहदतमें० ॥

अपनी जानमें जानको पाया और जमाना नहिं चहिये । अलग हुये हम हमें अपना और बेगाना नहिं चहिये दिलमें दरोहरम बनाया अब बुतखाना नहिं चहिये ॥ लामकानको छोड जन्नतमें जाना नहिं चहिये । पी वो मुहब्बतकी मैं मैंने और पैमाना नहिं चहिये । मैं बहदतमें० ॥

हरेक मकां हैंगे आशकों के एक ठिकाना नहिं चहिये । आजाद हैं जो उन्हें जो फिरजादमें अपना नहिं चहिये ॥ इश्कका बाना पहिन कलँगी तुर्रेका बाना नहिं चहिये । पाक इश्क को करो नापाक को गाना नहिं चहिये ॥ देवीसिंह कहे सखुन पर कमती सखुन बनाना नहिं चहिये । मैं बहदतमें० ॥

तथा

फिदा हुआ दिल मेरा जिस दिनसे तुझको दिलवर देखा । कहीं न देखा तुझे अपने दिलके भीतर देखा ॥ तेरे हुस्नके सानी हमने और नहीं सुन्दर देखा । आफताबसे तुझे महताब से भी बहतर देखा ॥ तेरा चमक औ दमक के आगे और न जलवेगर देखा । मैंने प्यारे तुझे अपनी नजरोंमें भर देखा ॥

जैसा देखा तुझको वैसा नहीं परी पैकर देखा । कहीं न० ॥
बयां क्या करूं यार तेरे दंदांका वो जोहर देखा । लाल न
देखा नहीं ऐसा कोई गौहर देखा ॥ गजब है तेरे नैनन ऐसी
तेग नहीं जल धर देखा । खांडा बिछुआ नहीं हमने ऐसा
खंजर देखा ॥ हुआ बहुत हैरान शहेर सहेरा तुझको दरदर
देखा । कहीं न देखा तुझे अपने दिलके भीतर देखा ॥

आशक होकर तुझपर अपने इश्कको हमने कर देखा । जो
कुछ है सो तुही तुझको अपना अफसर देखा ॥ जैसा खुशबू
तुझ में वैसा नहीं मुश्क केसर देखा । दिमाग अपना तेरी खुशबूसे
मवत्तर देखा । तेरे इश्कमें प्यारे मैंने गली गली घर घर देखा ।
कहीं न देखा तुझे अपने दिलके भीतर देखा ॥

देवीसिंह यों कहे के जिसने तुझे एक पलभर देखा । मस्त
रहा वो इश्कका जोर शोर खुशतर देखा ॥ बनारसीने तेरे
इश्कमें खाकका वो बिस्तर देखा । शाल दुशाला छोड मृगछाला
बाघम्बर देखा ॥ कई दफे देखा था तुझे अब मैंने तुझको
फिर देखा । कहीं न देखा तुझे अपने दिलके भीतर देखा ॥

सनमके पान खानेकी तारीफ-बहेर लंगडी ।

पानकी लालीसे जो मेरे वह दिलवरके लब लाल हुये ॥
लाले बदकशां से भी वेहतर पैदा अब लाल हुये ॥ काकुलसे
काले हुये पैदा जुलफसे अफई मार हुये ॥ पेशानीसे नूर टपका
तो फरिश्ते चार हुये ॥ अबरूहसे खम् खाखाके खन्जर बिछुवे
खमदार हुये ॥ और मिजगांसे तीरे पैकां से नशतर
पुरकार हुये ॥

शेर-चश्मसे पैदा हुआ नरगिस हरेक गुलजार में ॥

और वो बीनासे अलिफ खींचा गया हरकार में ॥ है वह कुदरती दोनों तेरे रुखसारमें ॥ जिससे रोशन चांद औ सुरज हैं इस संसार में ॥ पानकी रंगत पाकर दंदां गौहर से जब लाल हुये ॥ लाले बदकशां से भी बेहतर० ॥ जबां से पैदा कुराँ हुआ और अक्लसे इल्म हजार हुये ॥ चाहे जनकन्न से चाह के दिल में खुद बखुद गार हुये ॥ गले से बनी सुराही गुल सब तेरे गले के हार हुये ॥ हुस्नसे परी पैकर बनकर तैयार हुये ॥

शैर-तेरे सीनेकी सफाई से सफाई होगई ॥ ताकते बाजु से अब ताकत् सबाई होगई ॥ हाथसे तेरे सखावत की सखाई होगई ॥ पंज ऐ मरजां से लग लाले हिनाई होगई ॥ देखके रंगी नाखुनों की शरमिन्दा तब लाल हुये ॥ लाले बदकशां से भी बेहतर० ॥ शिकम् से नर्मी बनी कमर से पोशीदा सब हाल हुये ॥ और जानूं से तेरे दो नूर के थम्भ कमाल हुये ॥ कदमसे सिजदा बना और पा छूनेको सात पताल हुये ॥ चाल से तेरी बनगये फील न बोबे चाल हुये ॥

शैर-कद से तेरे अब तलक सर्व चमन आबादहै ॥ और अदा तेरीसे आशकका सदा दिल शाद है ॥ नाजसे तेरे बनी अन्दाजकी बुन्याद है ॥ हर सरापैसे सरापा तेराही ईजादहै ॥ जो पत्थर तलुवोंसे तेरे लगगये वहतो सब लाल हुये ॥ लाले बदकशांसे भी बेहतर० ॥ ठोकर से तुझ जानकी लाखों मुर्दे उठ खडे हुये ॥ आपके पाये नक्श हैं मेरे दिल पर पडे हुये ॥ चंचलाहटसे सदमें बर्कके दिलपर बडे हुये ॥ कदमबोसी से खडे हुये ॥

शैर-शैर इश्क़ फ़ानीका कहना कुछ नहीं आसान है ।। यह सखुन समझे वही जो आशके मस्तान है ।। देवीसिंह की शायरी पर जी वा जां कुर्बान है ।। जिसके हर नुक्तेके ऊपर हर शख्स का ध्यान है ।। बनारसीके खूने अश्क सब टपकके यार बेलाल हुये ।। लाले बदकशां से भी बेहतर० ।।

आपेको भूल जाय परमेश्वर को याद रक्खे ।

बहेर लंगडी ।

भूल गये हम अपने को भूले तेरी तसवीर नहीं ।। तीर इश्कका लगा वोः तीर के कोई तीर नहीं ।। तेरे इश्कमें हुआ गदा मुझसा तो कोई फकीर नहीं । वोः रुतबा है गदाके सानी शाह वजीर नहीं ।। क्या कसूर है मेरा जो मैं तेरा दामनगीर नहीं । ऐसी प्यारे करी हमने तेरी तकसीर नहीं ।। सरको झुकाया मैंने क्यों मारी तूने समशीर नहीं । तीर इश्कका० ।।

तेरे हुस्नके रुतबेको कुछ पाती लैला हीर नहीं । गजब है तेरे बोल ऐसी तो शक्कर शीर नहीं ।। है तो प्याला जहर इश्कका ये कुछ मीठी खीर नहीं । पिये जो इसको रहे फिर उसका दिल दिलगीर नहीं ।। तीर पडे इश्क के जखम मेरे दिलसे जाये यह पीर नहीं । इश्कका लगा ० ।।

जो आकाश होगया तेरा वो कभी हुआ गमगीर नहीं । इश्क न जिसने किया वो कभी पहुंचा तेरे तीर नहीं ।। तेरे दरकी मिले खाक मुझको चहिये अक्सीर नहीं । अब तो प्यारे तेरे बिन दिलको होता धीर नहीं । हाथ मलै जराह कर सकैं कुछ तेरी तदबीर नहीं । तीर इश्कका० ।।

सौदाई होगया जहांमें कहीं रही तौकीर नहीं । कहे

देबीसिंह तेरे आगे तो मैं फकीर नहीं ॥ कहीं पर ओढे शाल दुशाले कहीं बदन पर चीर नहीं ॥ बनारसी यों कहे तुझको पाये वे पीर नहीं ॥ तुही एक है अमीर प्यारे तुझसा कोई मीर नहीं ॥ तीर इश्क का लगा वोः तीरके कोई तीर नहीं ॥

खुदाकी जुल्फ और रुख दोनों की तारीफ ।

बहेर लँगड़ी ।

काकुल पुरखम आरिज रोशन दोनोंको क्या यार लिखूं ॥ मार जुल्फ को और रूख को हरदम शोले मार लिखूं ॥ निस्बत् है ये बेजा गरचे मूजी पूरे शरार लिखूं ॥ दाम हुमाकाम जुल्फ को रुखको हुमा इजहार लिखूं ॥ अच्छी नहीं है येभी तशभी क्या तायर परदार लिखूं ॥ समुबुले तर मैं जुल्फको बरगे समन रुख सार लिखूं ॥ ये सबजे हैं जमींके इनको होके क्या लाचार लिखूं ॥ मार जुल्फ को० ॥

काकुल को मैं काली घटा औ रुख के बर्क आसार लिखूं ॥ घटा के निस्बत न इनसे दूं न बर्क बेकार लिखूं ॥ उसको तो जुलेमात लिखूं और हैवां उसे हरबार लिखूं ॥ वो तो पुरखम् वहीं आरवां नये जिन हार लिखूं ॥ काकुल को मैं लैल लिखूं आरिजके तईं निहार लिखूं ॥ मार जुल्फको० ॥

गरदिश में लैला निहारहै कहां तलक दिलदार लिखूं ॥ उसको रहां और उसको सुनिये लाले जार लिखूं ॥ तसभी सब उस्से हैरां पुर दाग हैं वो क्या खार लिखूं ॥ रुख को कुरआं बिरह मन काकुल को जुन्नार लिखूं ॥ इसमें झगड़ा हिन्दु मुसलमां हैगा क्या इसरार लिखूं ॥ मार जुल्फ को० ॥

रुख को हरदम शमये रौशन काकुल को धुआंधार लिखूं ॥ ये भी गलत है और तशभी इसको यकबार लिखूं ॥ इसको मौजे बहर लिखूं उसे आईना बेदार लिखूं ॥ मौज न यकजा आईना हैरां ये क्या शार लिखूं ॥ जुल्फ सुबेदा बनारसी रुख नूरे हक गुलजार लिखूं ॥ मारजुल्फको० ॥

सनमके जुल्फकी तारीफ-बहेर लगड़ी ।

नाजो अदा से चली नाजनी दो जुल्फें लटका लटका ॥ लटका आलम दिखाया जब उसने लटका लटका ॥ देख तमाशा उन जुल्फोंका फँसा दाम में कुल आलम् ॥ पेच में उसके पडा है यारो ये बिलकुल आलम् ॥ ऐसा बांधा खैंच जुल्फ में मचा रहा है गुल आलम् ॥ उसके फन्द से कहो अब क्यों कर जाये खुल आलम् ॥ नशे में है शरशार पीके गेसुये जहर का मुल आलम् ॥ हुआ दिवाना देखकर उसकी वो काकुल आलम् ॥ फेर में जुलफों के फिरता है कुल जहान भटका भटका ॥ लटका आलम् दिखाया जब उसने० ॥

गदा अम्बिआ शाह औलीया और जो जुल्फ देखे गरदूं ॥ महक से उसकी होवे सबामस्त और आये दिल में जुनूं ॥ जुल्फ मो अम्बरी देखके आलम् आशक होगया गूनागूं लाम ॥ कहूं मैं ये इनको लॉमें कान का अलिफ लिखूं ॥ जिस दम उसने बाल मरोडे लाखों अफई का हुआ लिखूं ॥ सबके जहर को निचोडा क्या ताकत करै कोई चूं ॥ काले ने सरको पटका जिस दम उसने लटको झटका ॥ लटका आलम् दिखाया जब उसने० ॥

हिला हिला के जुल्फ दुती कितनोंके तई हलाल किया ॥

मार मारके मार सदहा को हाल बेहाल किया ॥ मशरक से मगरिब तक उसने अजब जुल्फ का जाल किया ॥ उसके बीच में डाल कर कितनों को पैमाल किया ॥ जिसदम उसने जुल्फ बनाके टेढा बांका बाल किया ॥ कालभी उसको देख कर डरा औ अपना काल किया ॥ फटकारा जब जुल्फको उसने कोई सामने नहीं फटका ॥ लटका आलम दिखाया जब उसने० ॥

दोनों रुखसारों के ऊपर लट लटका घूंघर वाली ॥ गोया माह के गिर्द घिर आई घटा काली काली ॥ छिटका के जब जुल्फ सनम ने इधर उधर रुख पर डाली । बयां क्या करूं बनाई अजब वो कुदरत की जाली ॥ देवीसिंह के छन्द रंगीले और सदा भोली भाली ॥ सुनेसे जिसके हुई हरएक शायरको खुशियाली ॥ मतलब है तौहीद जुल्फ में और मारफत का खटका ॥ लटका आलम दिखाया जब उसने० ॥

दरख्त जवाहिरातका मतलब तौहीद ।

बहेर खड़ी ।

तुख्म लाल याकूत कि टहनी बर्ग जमुर्रद मोती गुल ॥ फल लटके मणियोंके जिसमें जो देखे लेले बिलकुल ॥ शबनम है इलमास कि उसके बर्गबर्ग पर पड़ी हुई ॥ हरेक शाख कुन्दन और नीलमसे हैं उसकी जड़ी हुई ॥ जिसके हाथमें उस दरख्त की एकभी यारब छड़ी हुई ॥ सात बादशाहत से भी वो कीमत उसकी बढ़ी हुई ॥ उस दरख्तके मेवेसे हरदम टपके तौहीद कि मुल ॥ फल लटके मणियों के जिसमें० ॥

बनी मुरस्से की जमीन और फौवारे बिल्लूरके हैं ॥ उस

दरख्तके ऊपर बैठे हरेक जानवर नूरके हैं ॥ फुनगी है पारसकी उसमें रखवाले सब हूरके हैं ।। वो दरख्त नजदीक है उसके खरीदार सब दूरके हैं ॥ सौदा उनसे बने वहां पर करे न जो कोई शोरोगुल ॥ फल लटके मणियों के जिसमें० ॥

उस दरख्तको हमने तो आबेहयात से सींचा है ॥ बडी मशक्कत् करी है अपनी करामात से सींचा है ॥ किसी से कुछ नहिं काम लिया अपनी ही जात से सींचा है ॥ क्या कोई जानेगा इश्कोंके कौन घातसे सींचा है ॥ हुआ वो जब तैयार तो शैदा बना मेरा ये दिल बुल बुल ॥ फल लटके मणियों के जिसमें० ॥

उस दरख्तकी सायामें हम टांग पसारे सोते हैं ॥ अगरचे जायें कहीं तो फिर हम उसी तुख्म को बोते हैं ॥ जहां पर अपना दिल चाहे वैसे ही शरज सब होते हैं ॥ बनारसी ये कहे के उस पर कुरान पढ़ते तोते हैं ॥ उस दरख्त की हवा लगे तो जिगर की आंखें जायें खुल ॥ फल लटके मणियों के जिसमें० ॥

हाल फकीरीका सच्चा बहेर डेवढी-राग सोरठा।

फकीरी खुदाको प्यारी है । अमीरी कौन बिचारी है ॥ बदनपर खाक है अकसीर । फकीरों की यही जागीर ॥ हाथ बांधे खडे रहें अमीर । बादशा हो या होय वजीर ॥ सदा ये सच्च हमारी है । गदाकी खुदासे यारी है ॥ फकीरी खुदाको प्यारी है ॥

है इनका नाम सुनो दुरवेश । कोई नहीं पाये इनसे पेश ॥

खुदासे मिले ये रहें हमेश। कोई नहिं जाने इनका भेस ॥
कभी गिरिया ओ जारी है। कभी चश्मोंमें खुमारी है ॥
फकीरी खुदाको प्यारी है ॥

है इनका रुतबा बहुत बलन्द। खुदाके तईं ये हुआ पसन्द ॥
वादशासे भी ये बने दुचन्द। इन्हें मत बुरा कहो हरचन्द ॥
इनकी दिलपर असवारी है। ऐसी नाहिं कहीं तयारी है॥फकीरी०॥

चिथडे शालसे हैं आला। चश्म हरतालसे हैं आला ॥ चनेभी दालसें हैं आला। चलन हरचालसे है आला ॥ जख्म जो जिगर पर कारी है। वही दिलपर गुजारी है। फकीरी खुदाको०॥

पांवमें पड़ा जो है छाला ॥ वोः भी मोतियोंसे है आला ॥ हाथ में फूटासा प्याला। जामजमशैदसे भीवाला ॥ अगर कोई हफ्त हजारी है। वोहभी इनकाही भिखारी है। फकीरी खुदाको०॥

मकाँ लामकाँ फकीरोंका। निशांकहां फकीरोंका ॥ फक्र है निहां फकीरोंका। खुदा है हमा फकीरोंका। ताकते सब वोः भारी है। मौत तक जिनसे हारी है। फकीरी खुदाको० ॥

बढ गये बाल तो क्या परवा। उतर गई खाल तो क्या परवा ॥
आगया माल तो क्या परवा ॥ हुये कङ्गाल तो क्या परवा।
खुदा तू जनावे बारी है। काशीगिरि को यादगारी है।
फकीरी खुदाको प्यारी है० ॥

तीनों अवस्था का हाल अव्वल दोयम सोयम।

बहेर लंगडी।

वहशतने लाखों बातें बेहूदा बकवाई मुझको। माशूकों में वही अब नजर पडा सांई मुझको ॥ अव्वल तो मैं उस गम

में जारजार रोया यकबार । अश्ककी लडियां देखकर शरमाया गौहर का हार ॥ बेतावीने किया मुझे बेचैन करी मैं बहुत पुकार । या इकताला देखिये किस दिन यह टूटेगा तार ॥ आंखें भरभरके कहतीं ये दाई और बाई मुझको ॥ माशूकों में वही० ॥

दोयम मुझको हुआ इश्क दिल में सोचा मैं आशक हूं । अजब है मेरा वही माशूक बना जो गूंनागूं ॥ हरएक से पूछा मैंने जो इश्क में थे आशक बेचूं । कोई न बाकी रहा अब क्या लैला और क्या मजनूं ॥ जो आशक थे पाक उन्होंने बातें सुनवाईं मुझको । माशूकों में वही० ॥

सेयुम हमने अपने दिलको समझाया करके हुशियार । तू क्यों गाफिल हुआ चल देख तेरा वह कहां है यार ॥ दिलने मुझसे कहा मुझे क्या देर है तू हो जल्द तयार । मेरा तेरा संग है चलो देखिये वो गुलजार ॥ देख पडी उस जांपर यार अपने की परछांई मुझको । माशूकों में वही० ॥

आखिर को गफलत का परदा खुला मिला अपना महबूब । कहै देवीसिंह मेरा वोः खूबां है खूबों में खूब ॥ बनारसी ये कहै इश्क के दरिया में गये लाखों डूब । मैंने उसमें तैरकर पाया वह अपना असलूब ॥ होकर के लाचार छोडगई गफलत की झांई मुझको । माशूकों में वही० ॥

शतरंज इश्ककी—बहेर खडी ।

बाजी खेली इश्ककी हमने जरा किया शशपञ्ज नहीं । खेल ले हर कोई जिसको यह वोः बाजी शतरंज नहीं ॥ अक़्लका तो कुछ जोर नहीं जो घोडोंसे चलकर जीते । फीलकी क्या

ताकत है जो इस बाजीको बलकर जीते ॥ यह तो इश्कका दक है इसको क्या पैदल दलकर जीते । रुखका रुख फिर जाय न वह इस बाजीको छलकर जीते । मेरे सिवा कोई और जहांमें उठा सके यह रञ्ज नहीं । खेल ले हर कोई० ॥

वजीरका क्या जिकर इश्कमें बादशाह तक हुये गदा । जो कि चाल चूका वह मारा गया मेरी है यही सदा ॥ हमने अपने सरकी बाजी लगाके इसमें दांव बदा । जान बेचकर जो खेला वह जीता उसको मिला खुदा ॥ वो क्या करेगा मातके जिसके काबूमें है पञ्ज नहीं । खेल ले हर कोई० ॥

औरदावमें नहीं आय। बादशाहकी अपने ली चोट बचा । उसीने तोडा किला जहांमें कोई न उससे कोट बचा ॥ तिरछे होकर चलोगे तो क्यों करके सकोगे गोट बचा । उसका माल लुटा गया रखी थी जिसने जरकी पोट बचा ॥ मुझे किस्त नहिं लगीकि मैंने जमा किया कोई गञ्ज नहीं । खेल ले० ॥

ये शतरंज इश्ककी इसको खेले वही सयाना है । बडे बडे हो गये जिव नाहिं भेद किसीने जाना है ॥ ये है इश्कका ख्याल सदा आशकोंके मनने माना है । बनारसी जीतेजी अब तो निर्गुण बीच समाना है ॥ रामकृष्ण के शीरीं सखुनको पाये शीव विरञ्ज नहीं । खेल ले हर कोई जिसको० ॥

ख्याल-खुदा हममें और हम खुदामें--बेहर लँगडी ।

दिलमें दिलबर दिलबरमें दिल सनम में हम और हममें सनम् । दम हमदम में मेरा इस दममें है मेरा हमदम ॥ जान मेरी जानामें है ॥

जानां मेरी जानमें है । प्राण हैं उसमें मेरे वोः प्यारा मेरे प्राणमें है ॥ तनो बदन सब उसमें है वोः इस तनके दरम्यान में है । हरेक आन है यारमें यार मेरा हर आनमें है ॥ मैं उसमें हूं रमा वो मेरे रूमरूम में रहा है रम । दमहम दम० ॥

गुल गुलशन सब उसीमें है वोः गुलहर गुल गुलशन में है । फबन है ऐसी फबी उसमें के वोः हर फबनमें है ॥ गुनचेदहन सब उंसीमें हैं वोः हरएक गुनचेदहनमें है । चमन हुस्नका है उसमें औ वोः हुस्न के चमनमें है ॥ मेरे मनमें बसा है वोः उसके मनमें बस रहे हैं हम । दम हम दममें० ॥

कुल जहान रोशन उसमें वोः रौशन आलम कुलमें है । मरी मुहब्बत की मुल उसमें और वोः उस मुलमें है ॥ काकुल लटकी दिलमें मेरे ये दिल उसकी काकुलमें है । आशके बुलबुल हैं उस गुलमें वोः गुल बुलबुलमें है ॥ कुल आलम में नूर उसीका उसके नूरमें कुल आलम् । दम हम दममें० ॥

नूरमें उसकी पेशानी नूर उसकी पेशानीमें है । जिगरमें जानी मेरी ये जिगर मेरा जानीमें है ॥ जिन्दगानी उसमें मेरी वोः मेरी जिन्दगानीमें है । नूरानी है सब उसमें वोः हर नूरानीमें है ॥ बनारसी कहे इसमें फर्क नाहिं मुझको अपने सरकी कसम । दम हम दममें मेरा इस दममें है मेरा हमदम् ॥

खुदाकी तस्वीर अपने दिल आईनेमें खींचना ।

बहर खड़ा ।

करे अगर मन मुसौवरी तो यारकी अब तस्वीरको खैंच । सानी उसकी तू बनजा दिलदार की अब तस्वीर को खैंच ॥ जैसे आबसे हबाब बनजाय पानीकी तस्वीरको खैंच । फिर

पानी पानी करले उस जानीकी तस्वीरको खेंच ॥ नूर वही बनता है जो ले नूरानीकी तस्वीरको खेंच । हकमी होता है आशके हक्कानीकी तस्वीरको खेंच ॥ बागबाग हो दिलतेरा गुलजारकी अब तस्वीरको खेंच ॥ सानी उसकी तू बनजा० ॥

शमयसे हुई शमय रौशन जब उस लौकी तसवीरको खेंच॥ लौमी रौशन खुदासे हो अब उस लौकी तसवीरको खेंच ॥ फिर पावेगा ओ नादां कब उस लौकी तसवीरको खेंच ॥ इस जामें से खिचेगी जब तब उस लौकी तसवीर को खेंच ॥ शोलय नार हुआ रौशन उस नार की अब तस्वीर को खेंच ॥ उसकी सानी तू बनजा० ॥

बनी मूर्तें गिलकी गुल हुई उस गिलकी तसवीरको खेंच ॥ टूटी तो मिट्टी होगई गिलके दिलकी तसवीर को खेंच ॥ पत्थर शिल होजाय जो लेवे उस शिल की तसवीरको खेंच ॥ कतल होके मिलजा उसमें उस कातिल की तसवीर को खेंच ॥ देखले तू इस पारसे और उस पारकी अब तसवीर को खेंच ॥ सानी उसकी तू बनजा० ॥

कर दिलको आइना और इसमें से उसकी तसवीर को खेंच ॥ बताओ इसके सिवाय किसमें उसकी तस्वीरको खेंच ॥ जिस्मसे मत रख काम तू जिसमें ले उसकी तसवीर को खेंच ॥ बनारसी अब तू जिस तिसमें उसकी तसवीर को खेंच ॥ फार में गम होजा ऐ दिल गफ्फारकी अब तसवीरको खेंच ॥ सानी उसकी तू बनजा० ॥

नसीहत बन्देको समझानेकी बहेर छोटी ।

तू जिस्म जिगर औ जान नहीं जाना ॥ फिर क्यों

नहीं कहता खुदा जो है तू दाना ॥ किसने तुझको बांधा है बना जो बंदा ॥ और कौन पेच का पडा है तुझपर फंदा ॥ तू अपने आपको देख न हो मत मंदा । है कौनसी वोः बदबू जो हुआ तु गंदा ॥ गर तूने अपने तंई जिस्म नहीं जाना ॥ फिर क्यों नहीं कहता खुदा ॥०

ये हाथ पाँव औसर भी नहीं कुछ तू है ॥ सीना औ बाजू पर भी नहीं कुछ तू है ॥ जनखा औरत और नर भी नहीं कुछ तु है ॥ जिन्न देव परी पैकर भी नहीं कुछ तू है ॥ तू अपने बीच में आपी आप समाना ॥ फिर क्यों नहिं कहता खुदा० ॥

रोना ओ तड़पना आह नहीं कुछ तू है ॥ मुंह जबां चश्म बल्लाह नहीं कुछ तू है ॥ काबा किब्ला दर्गाह नहीं कुछ तू है ॥ और हराम की भी राह नहीं कुछ तू है ॥ मसाजिद भी नहीं तू बना न है बुतखाना । फिर क्यों नहीं कहता खुदा ॥

तकदीर और पेशानी भी तू नहीं है ॥ आतिश औ हवा गिल पानी भी तू नहीं है ॥ अरवाह औ गिलमानी भी तू नहीं है ॥ इस जिस्म की जरा निशानी भी तू नहीं है ॥ ये बनारसी का समझ सखुन. मस्ताना ॥ फिर क्यों नहीं कहता खुदा० ॥

ख्याल होलीका इश्कमार्फत-बहेर छोटी ।

आते ही इश्क ने यहां मचा दी होली ॥ वोः आतिश और तन फूस जला दी होली ॥ चश्मों से बरसने लगा खुने रंग पानी ॥ और इश्कभी करने लगा बोः ऐंचातानी ॥ मैं हँसूं

तो गाली दे मुझे दिलजानी ॥ ओ लोग बजावें ताली सुनों कहानी ॥ नहिं देखी थी सो मुझे दिखा दी होली ॥ वोः आतिश औ तन फूस जलादी होली ॥

गमके गुलालने ऐसी धूल उडाई ॥ अब सिवा खुदा के कुछ नहिं देय दिखाई ॥ तन बदनमें जीतेही जी आग लगाई॥ जो होनी थी सो होली मेरे भाई ॥ शाबाश इश्कने खूब लगा दी होली ॥ वोः आतिश औ तन फूस० ॥

जिस वक्त वोः आया दिल में इश्क रंगीला ॥ था चेहरे का रंग लाल सो पड गया पीला ॥ औ जामा जो था खिंचा वोः होगया ढीला ॥ तिस पर भी दोस्तों ने कर दिया येः गीला ॥ हजरते इश्क ने मुझे खिलादी होली ॥ वोः आतिश औ तन फूस० ॥

दिल तडफ तडफ के अपना नाच दिखाये ॥ वोः इश्क न अपने कुछ खातिर में लाये ॥ दिल आह कर शोर औ धूम मचाये ॥ पर इश्क न इसकी मुतलक सुने सुनाये ॥ लो सुनों दोस्तो तुम्हें सुनादी होली ॥ वोः आतिश औ तन फूस० ॥

थक गये इश्कको कबीर गाते गाते ॥ जिसको देखा वोः आये ढोल बजाते ॥ कोई सरपर डाले खाक कोई चिल्लाते ॥ कहैं बनारसी हम इश्कमें हैं मदमाते ॥ जो हक कुल्ह थी मैंने गा दी होली ॥वोः आतश औ तनफूस जला दी होली ॥

मतलब तौहीद । खुदाका सरापा-खरी रंगत ।

जितने दिन हैं इस दुनियामें किसीका नहिं मजहब है

वो ॥ सबमें है और अलग है सबसे देखा मैंने अजब है वो ॥ बुतखाना बनवाया किसीने मसजिदको भी चुनवाया ॥ अपने अपने दीनका देहेरा सबने सबको दिखलाया । उस मालिकको भूलगये जिससे ये नरजामा पाया ॥ इसमें उसको नहिं देखा है जिसकी ये कंचन काया ॥ मैं अपने तनमें देखों हर घडी किमिश रब है वो ॥ सबमें है और अलग है सबसे देखा मैंने अजब है वो ॥ हिन्दू तो बुतखाने में पत्थर से टकराते सरको ॥ मुसलमान मस्जिद में गिरके सिजदा करते हैदर को ॥ और सुनो अंगरेज बडा कहते अपने गिरजा घरको ॥ इसी तरहसे हरेक भूले पर नहिं पाया उस हरको ॥ मुझे इसीमें मिला और जो मिले किसीको कब है वो ॥ सबमें है और अलग है सबसे देखा मैंने अजब है वो ॥ कोई ढूंढता पोथीमें और कोई देखता किताब में ॥ लाख तरहसे देखा पर वो आता है कब हिसाब में ॥ उसे जो देखा चाहे तो वो है इसे जाम नयाब में ॥ इसीके भीतर देखे तो फिर पहुंचे आली जनाब में ॥ बहुत सख्त पै मंजल ये और राह बडी बेढब है वो ॥ सबमें है और अलग है सबसे देखा मैंने अजब है वो ॥ बे समझी इस कदर जहां में है कि खुदा को समझे गैर ॥ सरेने बांधी मुश्कें और तौहीद से रखते बिल्कुल बैर ॥ करें फकीरों से झगडा किस तरहसे उनकी होगी खैर ॥ अपना आपा नहीं देखे हैं जिसमें चौदा तबक की सैर ॥ जैसा देखो वैसा दीखै दिल आईना हलब है वो ॥ सबमें है और अलग है सबसे देखा मैंने अजब है वो ॥ सुनो सरापा

उसका तो वह जुल्फ में उसके खमभी है ॥ नागिनं भी है सांप भी है अमृत भी है और शम्र भी है ॥ माथे पर है मेहर तसद्दुक चश्म में जामें जम भी है ॥ अबरू में जुल्फिकार है शमशीर और तेगे दुदम् वो है ॥ रहम करै तो राहिम हैं और कहेर करै तो गजब है वो ॥ सब में है और अलग है सबसे देखा मैंने अजब है वो ॥ मिजे में उसके तीर भरे हैं और कारी नस्तर भी हैं ॥ चितवन में है चोट दूरकी जादू भी और सहर भी है ॥ बीनी में अल्लाह अलिफ है इल्म भी है और हुनर भी है ॥ तडफ न बिजुली में ऐसी नथुनों की फडक इस कदर भी है ॥ दहनमें गुंचा लाल लबे शीरीं भी और वेलब है वो ॥ सबमें है और अलग है सबमें देखा मैंने अजब है वो ॥ दंदां में मोती है बेबहा और हीरों की कनी भी है ॥ कहूं मैं अपनी जबां से क्या क्या जो जो उसमें नमी भी हैं ॥ उन्ही में है स्नान ये खुदा और कहीं कहीं पर अनीभी है ॥ अगर्चे पीसे दांत तो वो इस दुनियां ऊपरें गनी भी है ॥ नाम मेरे दिलवर के लाखों इसी से तो वे लबक है वो ॥ सबमें है और अलग है सबसे देखा मैंने अजब है वो ॥ जबां से उसकी जो निकले वो सच है ऐसी जबां है वो ॥ जकन में उसकी चाहसे डूबा यूसुफ ऐसा कुआं है वो ॥ सीने में आईना साफ बाजुओं में ताकत तमा है वो ॥ पंजे में पंज ये अली है और पंजे मरजां है वो ॥ नाखूनों में हिलाल है और सिकम में नर्मी सब है वो ॥ सब में है और अलग है सबसे देखा मैंने अजब

है वो ।। लफ्ज़ में है वो भमर के चक्कर में आये आशक का दिल ।। कमर में तो है राजे निहां दो राज हुआ किसको हासिल ।। जानूमें बिल्लूरकी शांखें नूर पिण्डलियोंमें कामिल ।। कदम कदम पर नाजो करशामां आशकोंको करता बिस्मिल ।। जिस्म भी है बे जिस्म भी है क्या लिखूं कि कैसी छब है वो ।। सबमें है और अलग है सबसे देखा मैंने अजब है वो ।। हुये हजारों बली जहांमें लिखी किताबें वह तौहीद ।। कह कहके थक गये सभी पर खतम हुई नहीं गुफ्ते शुनीद ।। कटाके सरको लिखीं मसनवी जानि बेचकर पाया दीद ।। बनारसी रोरोके हुआ खुश तब हासिल हुई उसको ईद ।। कहना सुनना कुछ नहीं बनता मुझको तो यक सबब है वो ।। सबमें है और अलग है सबसे देखा मैने अजब है वो ।।

ख्याल मार्फत तौहीद-अपनेको पहिचानना ।

बहेर शिकस्ता ।

हुआ जो आपेसे अपने वाकिफ तो मैं अनल हक यों कह पुकारा ।। तुम्हें जो मालूम हो कहो तुम किसी का इसमें है क्या इजारा ।। अजब तमाशा ये देखा मैंने कि पारा पारा हुआ जो पारा ।। मिलाया उसको तो एक होकर मिला वो आपी से अपना प्यारा ।। इसी तरह से जुदा मैं उससे हुआ मिला उसका फिर सहारा ।। तो बस्ल होकर हुआ मैं एकता दुई से मैंने लिया किनारा ।।

शैर--लड़गई आंख वो मारा जो नजारा उससे ।। दमब दम साफ अब होता है इशारा उससे ।। छिपा के आंख में

चुरा लिया उसको ॥ हुआ रोशन मेरी पुतली का ये तारा उस्से ॥ समझ तुम्हें गर हो तो समझलो ये मन खुदा है सखुन हमारा ॥ तुम्हें जो मालूम हो कहो तुम किसी का इस में है क्या इजारा ॥ ये जिस्ममें दम दमा है दमका के एक दम है यहां गुजारा ॥ हुआ जो कोई वहांसे वाकिफ न उसको हरगिज किसीने मारा ॥ यहां तो मरगये मुफ्त में कितने हुये सिकंदर वो शाह दारा ॥ रहा वो कायम मरा न हरगिज कि जिसने छोडा बलख बुखारा ॥

शेर--किसीने उसके लिये तख्त इजारा छोडा ॥ किसीने मालो महेल मुल्क ये सारा छोडा ॥ मैं तुमसे पूंछता हूं तुमने यहां क्या छोडा ॥ ये सुनके मर गये इश्कों का तरारा छोडा ॥ कई मर्तबा कहके अनल हक ये सरको मैंने दिया खोदारा ॥ तुम्हें जो मालूम हो कहो तुम किसी का इसमें है क्या इजारा ॥ जो समझ आई कुछ अपने ताईं तो मैंने फिर ऐसा ही विचारा ॥ ये जिस्म में तो नहीं हो मुतलक ओ नूर हूं जिसका कुल पसारा ॥ किया ये दिलके तईं आइना और नकशा उसका यहां उतारा ॥ लगा वो कहनेकी मैं खुदा हूं कहो फिर इसमें क्या मेरा चारा ॥

शेर--जामें वहेदत जो दिया उसने दुबारा मुझको ॥ दिखाया आलमें मस्ती का शरारा मुझको ॥ शराब वस्ल की पीतेही वेहोश हुआ ॥ सरेहकी बात नहीं शख गवारा मुझको ॥ मैं गमसे दूर और जहां में एकता और लामकां में रहूँ वि-चारा ॥ तुम्हें जो मालूम हो कहो तुम किसीका इसमें है क्या [illegible] ॥ ये पेट भर भरके तुमने अपना बनाया है दुनियां में

पेटारा ॥ अगर्चे भूखे रहो तो पाओ अजीब लज्जत का वो छोहारा ॥ न उसमें गुठली न इसमें छिल्का न वो मुलायम न वो करारा ॥ भरा सरासर है उसमें अमृत वो खाये जो है खुदा का प्यारा ॥

शैर--शिकमको तुमने जहांमें न जो मारा होगा ॥ किस तरह से वो खुदा यार तुम्हारा होगा ॥ हाले तौहीद न समझे तो खिसारा होगा ॥ मौतके बादभी मरमरके तू हारा होगा ॥ बनारसी कहता मैं वही हूं ये जिस्म मैंने उसीपै वारा ॥ तुम्हें जो मालूम हो कहो तुम किसी का इसमें है क्या इजारा ॥

ख्याल खुदासे जुदा न होनेका-बहेर शिकस्ता ।

जुदा न तुझसे हुआ मैं हरगिज न मुझसे तेरी जुदाई होगी ॥ किया जो तूने खुदासे बाहर तो मेरे हां अब खुदाई होगी ॥ ओ फौज मौजे बहेर जो उलफत की लहेर इस दिल-पर आई होगी ॥ तो चश्मके चश्मसे वो दरिया बहाके दुनियां बहाई होगी ॥ जो अश्क गौहर की माला मैंने गले में अपने पिनहाई होगी ॥ सदफ की तो आगे मेरे ही आंखोंके वो कैसी बुराई होगी ॥

शैर--दीदये तरसे मेरे ऐसी तराई होगी ॥ चर्ख पर बारिषे मौसम की चढ़ाई होगी ॥ जिक्र रोनेका जो आये तो मैं तूफां करदूं ॥ न रोऊं इतना तो फिर मेरी हंसाई होगी ॥ न अब तकब्बुर रहा दुईका दुई भी देती दोहाई होगी ॥ किया जो तूने खुदी से बाहिर तो मेरे हां अब खुदाई होगी ॥ जो दस्त में मेरे उस सनमकी ओ पहुंची आकर कलाई होगी ॥ तो

हाथ गलते ओ होंगे दुश्मन कहां फिर उनको कलआई होगी।। औ हाथ डाले गले में मेरे अदा जो उसने दिखाई होगी।। तो बाजू टूटेंगे वो रकीबोंके और न उनकी दवाई होगी॥

शैर-आंख तुझसे जो किसीने भी लडाई होगी। तो फतेयाब यहां उसकी लडाई होगी॥ देख तो उसको जरा खोल चश्में दिलको॥ आँख फिर तुझसे किसीने न मिलाई होगी। नै दीनो मजहबका अब घमंड है तो क्यों न मेरी सफाई होगी॥ किया जो तूने खुदीसे बाहर तो मेरे हां अब खुदाई होगी। अगर्चे उस शमये नूरसे हां किसीने भी लौ लगाई होगी॥ तो नाम रौशन उसीका होगा औ बात उसकी बनाई होगी। औ कूंचये जाना कि किसीने करी अगर्चे गदाई होगी। तो बादशाहतसे भी सल्तनत जहांमें उसकी सवाई होगी॥

शैर-- पास जबतकके खुदासे न रसाई होगी। रूबरू मौतके फिर उसकी हंसाई होगी॥ अब कमां हाथ कजाके हैं निशाने से बचो। गोशये यारमें छिपनेसे रिहाई होगी। कहां यहां जिस्मका गुरूर है ये मैंने शोहरत मचाई होगी॥ किया जो तूने खुदीसे बाहर तो मेरे हां अब खुदाई होगी। है राह उल्फतकी सख्त मुश्किल भला किसीने जो पाई होगी॥ तो [illegible] जाना पर पहुँचके उतारी उसने थकाई होगी। ऐ [illegible]ह अब ये रूह जिसकी खुदामें जाकर समाई होगी॥ [illegible]ना जाना न होगा वांसे वोः बात उसकी बनाई होगी। [illegible]र--बे बजह लावनी जिसने कहीं गाई होगी। अपनी [illegible] पही खाक उसने उडाई होगी॥ हाल तौहीदसे वाकिफ

जो हुआ एक हुआ । बात उसको न इक्की कभी भाई होगी ॥
बनारसीने सदा अनल हक खुदा या तुझको सुनाई होगी ।
किया जो तूने खुदासे बाहर तो मेरे ह्यां अब खुदाई होगी ॥

बागे बहिश्त और बागे दुनियाँ दानाकी सिफत ।

बहेर शिकस्ता ।

ओ बागे जिन्नत ये बागे दुनिया है दोनों बागोंका एक माली ॥ अजब करश्मेके तुख्म बोये कि सब गुलोंमें है बू निराली ॥ वहां वो हूरें यहां पै पारयां वहां मलक यां बशर जलाली ॥ वहां वोः रिजवां यहां ये गुलचा खुशी कहां है वहां बहाली ॥ वहां है तूबां यहां सनोवर झुकाई जिसने गुलोंकी डाली ॥ वहां अजायब है मुर्ग नगमां सरा इहां बुल बुले हैं आली ॥ किसी की रंगत सफेद हैगी किसी की जर्द और किसी की काली ॥ अजब करश्में के तुख्म बोये कि सब गुलों में है बू निराली ॥ वहां जो सनीम सुल सबील है बनाई उम्मांकी ह्यां पनाली ॥ वहां मोहै है जामें कौसर यहां है लालेकी भी पयाली ॥ वहां जो गुंचा शिगुलफा ताजा भरी शिगुलफोंसे ह्यां लवाली ॥ जो सर सब्ज हैं शजर सब हरे यहाँ नख्ल हैं न खाली ॥ कोई शिगुलफा तरी किसीपर कुबूद कोई किसी पै लाली ॥ अजब करश्मेके तुख्म बोये कि सब गुलोंमें है बू निराली ॥ वहां जो मेवे अजायब हैंखे तो फल यहां हैं लगे जमाली ॥ जो खास बातें वहाँ तो आली है सखुन यहां कुछ नहीं है जाली ॥ वहां जो शक्लें हैं रूस्त की नादिर तो सूरते हैं ह्यां भोली भाली ॥ वहां के न तो

खिजल जो लाल तो सांवलीसे यहां कलाली ॥ खिजां न उसके बाहरको है न उसके गुलको है पायमाली ॥ अजब करश्मके तुरुम बोये कि सब गुलोंमें है बू निराली ॥ हैं ऐसे पानीसे बाग सींचे हरे हुये गुलशने जवाली ॥ ये कहते हैं देवीसिंह कुल से वही है दोनों जहां का माली ॥ जो अपनी दिखलाये शाने गुलको तो वो उठे बुलबुले नेहारी ॥ हरेक अदा है अजायब उसकी हरेक तरा है नई निकाली ॥ बनारसी का सखुन ये सच्चा ओ मार्फत की है बोला चाली । अजब करश्मे के तुरुम बोये के सब गुलों में है बू निराली ॥

सिफत खुदाके चहरेकी जिसमें कुल कुरान ।

बहेर खडी ।

कुरान की आयतें हम उसके रुखे नायावसे लिखते हैं ॥ लाजबाब उसको हम अपने इस जवाबसे लिखते हैं ॥ अलिफको हम नहीं लिखेंगे बीनी उस गुलरूकी लिखते हैं । बिसमिल्लाको छोड़ सिफत उसके अबरूकी लिखते हैं ॥ लामसे कुछ नहिं काम झलक उसके गेसू की लिखते हैं ॥ ऐनको करके अलग आंख हम उस महरूकी लिखते हैं ॥ तेको तर्ककर चीने जबीं दिलकी किताबसे लिखते हैं ॥ लाजवाब उसको० ॥

नुक्तोंको कर अलग हम उसके रुखे खालको लिखते हैं ॥ कोई हरेक इसमेंसे बेहतर उसके हरएक बालको लिखते हैं ॥ कोई लिखते जीम हे खे कोई दाल जालको लिखते हैं ॥ हम इनको गये भूल सिर्फ उसके जमालको लिखते हैं ॥ अरबी फारसी हिन्दी तुरकी सब सितावसे लिखते हैं ॥ लाजवाब उसको० ॥

कुल कमाल सुल्ला: हम उसके सारे खतको लिखते हैं ॥ और मायने कुरान के उसकी उलफत को लिखते हैं ॥ जेर जबर से जबरदस्त उसकी ताकत को लिखते हैं ॥ पेशासे बेहतर पेशासी उसकी किसमत को लिखते हैं ॥ रुखे रोशन आला हम उसका महताब से लिखते हैं ॥ लाजवाब उसको० ॥

कलमे से बढ़कर अपने दिलबर की बातको लिखते हैं ॥ मुसलमान हिन्दुओं से आला उसकी जात को लिखते हैं ॥ वो हैंगे नादार जो उसकी तायदाद को लिखते हैं ॥ देवीसिंह दिलपर उसकी हर करामात को लिखते हैं ॥ बनारसी तो हिसाब उसका बे हिसाब से लिखते हैं ॥ लाजवाब उसको० ॥

जीव ब्रह्मको एकतायी-बहेर खडी ।

हमदमहम्में हम् हम् दममें दममें जलवा आलम का ॥ आलमूमें है सनम् सनमूमें आलम् है उस जालमका ॥ दिलमें दिलवर दिलवर में दिल दिल में उसकी याद रहे ॥ याद में अशरत अशरतमें मैं मैं में नशा ईजाद रहे ॥ नशे में मस्ती मस्तीमें बहदत वहदतमें दिल शाद रहे ॥ शादमें शोर औ शोर में शोहरत शोहरतमें आबाद रहे ॥ आबादीमें आदम् आदमूमें दमूदममें दम् दमका ॥ आलममें है सनम्० ॥

आशकमें है इश्क इश्कमें नूर नूरमें हकताला ॥ हकताला में रहम् रहममें करम् करमूमें उजियाला ॥ उजियाला में ताब ताबमें माह माहमें है हाला ॥ हाले में अखतर अखतर में चमक चमकमें छबि आला ॥ आलामें वो खूब खूबमें रूप रूपमें रंग चमका ॥ आलम में है सनम्० ॥

शोकमें उसके जौंक जौंकमें रूह रूह में रूहाना ॥ रूहा-नाम उन्स उन्समें प्यार प्यारमें जिन्दगानी ॥ जिन्दगानीमें जान जानमें जाना जाना में जानी ॥ जानीमें वोः हुस्न हुस्नमें जेब जेबमें लासानी ॥ लासानी में सिफत सिफत में लामकान घर हाकम् का ॥ आलममें है सनम्० ॥

चाहमें मन और मनमें चरचा चरचे में उसकी कुदरत ॥ कुदरतमें है बाग बागमें चमन चमनमें गुल खिलकत ॥ खिल-कतमें खुशबू खुशबू में खिला खिलेमें है रङ्गत ॥ रसमें रस रसमें अमृत अमृतमें पाई लज्जत ॥ लज्जतमें तौहीद देवीसिंह कहे ख्याल सुन हमदम्का ॥ आलममें है सनम्० ॥

ख्याल तौहीद शिकस्ता ।

साबाभी चलनेमें थर थराये न दिलको ताकत नताब दमको ॥ भला वहां किस तरहसे जायें और आन पाँये मेरे सनमको ॥ जहां फरिस्ता भी दम न मारे वहां कोई क्या धरे कदमको ॥ गुजर न माहो मेहरकी मुतलक न बार है साहब हसमको ॥ बुलंदी पस्ती दिखाई उसने बनाया हस्तीको और अदमको ॥ सबोंसे रुतबा है उसका अफजल कहूँ मैं क्या फजल औ करम को ॥ हजार बुलबुल करें इरादा गुलों से फेर अपने चश्मे नमको ॥ भला वहां किस तरह से जायें और कौनपाये मेरे सनमको ॥ वोही हुआ मौजूदे परिस्ता तेरी उसीसे गुले इरमको ॥ न जुल्फ हूरो परी कि पहुँचे हैं उसके काकुलके पें च खम ो ॥ कहीं पै खाक और बादे आतिश कहीं पै जारी कियाहै जमको ॥ उसीसे अर्बा अनासर हैं गे वहम भूल हरगमो अलमको ॥

हरेक फरदे वसर खुदा है गवाह कहता हूं खा कसमको ।। भला वहाँ किस तरहसे जाये और कौन पाये मेरे सनमको ।। इसी तमन्नामें हाथ मलते हैं जिनके कोई पहुँचादे हमको ।। बराये अल्लाह उसीके दरतक करेंगे क्या हम दरो दिरमको ।। बरहम और शेख उसीकी उल्फतमें भूले बुतख.नये हरमको ।। और रब्बे है बेचूं औ चरावसन दख्ल कुछ वां है बेशकमको ।। हो सुस्त जबरीलका भी शहरपर हजार उडे वो जताये हमको ।। भला वहां किस तरहसे जाये और कौन पाये मेरे सनमको ।। शरावे वहदतमें मस्त हैंगे जो उसके समझे न जामे जमको ।। जहां कि कैफियत उनको हासिल उसी के देखे से भूले गमको ।। समझते अमृत से भी हैं बढके जो सादिक आशिक हैं उसके समको ।। रहीम है वो करीम है वो बनारसी रोकले कलम को ।। मकान है लामकां उसीका तू याद रख दिलमें इस रकम को ।। भला वहां किस तरहसे जाये और कौन पाये मेरे सनम को ।।

तकलीफमें घबराना नहीं चाहिये यह सच्चे आशकका काम है--बहेर लँगडी ।

जरा आह न करी इश्कमें सब आफत भाई मुझको ।। कहीं चाहमें गिरा कहीं नजर पडी खाई मुझको ।। किसीने अपना संग दिया नहिं हमतो आप हैं अकेले ।। जहां न कोई मिला उस जांपे किये हमने मेले ।। लाख बजह के सदमे औ गम सब अपने दिलपर झेले ।। सरको काटके हथेली पर रखके सरपर खेले ।। बिन मुर्शिदके नहीं है हम और नहीं किसीके हैं चेले ।। जिसे इश्क का मजा लेना हो वो हमसे लेले ।।

इश्क बहुत मुश्किल है फिर आता ये नंगे पाई मुझको ॥ कहा चाह में गिरा० ॥

और सुनों अहवाल इश्कमें कहीं पहने बैठे जंजीर ॥ ऐसा फंसाया यादमें उसकी ये दिल किया असीर ॥ देखके मेरा हाल शर्ममें आई शीरीं लैला हार ॥ मजनूं रांझा हुआ फरहाद बहुत सुनके गमगीर ॥ और भी जो आशिक थे उनको लगा मेरे वो गमका तीर ॥ लगे मचाने शोर ऐ आशक है कोई अजब फकीर ॥ जो आशिक थे पाक उन्होंने बातें बतलाई मुझको ॥ कहीं चाहमें गिरा० ॥

एक वक्त हुआ ऐसा इश्कमें यारो हम बीमार हुये ॥ बेताबीसे बात करने को भी दुशवार हुये ॥ गया तन वदन सूख जिगर पर लाख बजहके गार हुये ॥ मरहम लगाया तो उससे और जख्म पुरकार हुये ॥ बहुत दवाई करी मेरी वोः तबीब-सब लाचार हुये ॥ मेरी सूरत देखकर जिन्दे भी मुर्दार हुये ॥ मैं तो बिस्मिल रहा लगी नहीं लाखों वो दवाई मुझको ॥ कहीं चाहमें गिरा० ॥

यहां तलक होगया हाल तिसपर नाहिं मैंने आह करी ॥ अपने दिलको किया मजबूत औ यह सल्लाह करी ॥ उस दिलबर को दिदार करने की इस दिल से चाह करी ॥ और रास्ते छोडकर पाक इश्कको राह करी ॥ देवीसिंहने उसके सिवा नहिं किसी की कुछ परवाह करी ॥ खुशी हुआ वोः तो उसने रहम की भला निगाह करी ॥ बनारसीये कहे इश्कने कराहिया गोसांई मुझको ॥ कहीं चाह में गिरा कहीं नजर पडी खाई मुझको ॥

पानके खानेकी सिफत--बहेर लँगडी।

पानके खातेही उस सनमके दहनमें क्या क्या रंग हुये ॥ हीरे मोती लाल मरजां और जमुर्रद संग हुये ॥ एक रंगमें चार रंग जब हुये तो क्या क्या रंग खिला ॥ जिसने देखा उसीने कहा इन्हें क्या रंग मिला ॥ वो है जिलत दांतोंमें दिये तो जिला को भी देती हैं जिला ॥ चमक दमक से तो जिसकी हरदम ये तडपै है दिला ॥

शेर-किसी जां पर तो उजली सी है वोः कुछ इनमें तैयारी ॥ किसी जांपर तो सुर्खी ने करी है क्या गुलेनारी ॥ किसी जांपर तो सब्जीने वो है सब्जेकी जांमारी ॥ कहीं रंगत गुलाबी है गोया यारोंकी वां यारी ॥ देखके चारों रंग जवाहर लड लडके बेरंग हुये ॥ हीरे मोती लाल मरजां औ जमुर्रद संग हुये ॥ पहले पिया पानोंका लहू और पीछे किया आशकों का खूं ॥ गजब लिखे कोई क्या ताकत इनका मजमूं ॥ चश्म को सब कहते हैं खूनी मैं इनको खूंखार लिखूं ॥ क्या घाट है खून करने में यही हैं आफता तूं ॥

शेर--अगर देखा जो तुम चाहोतो कोई तोफा गिलौरीलो॥ हो जिस्म नूर मौलाका कहो उस्से कि तुम खाओ ॥ जो ओ खाये तो फिर उसके दहनको तुम जरा देखो ॥ करो टुकडे जिगर अपना व आशक हो तो आशक हो ॥ देखके इन दंदांका जौहर आशके जौहरी दंग हुये ॥ हीरे मोती लाल मरजां औ जमुर्रद संग हुए । अजब तरहका तिलिस्म देखो उसके उस दन्दानमें है ॥ ये तो सफाई कहां हीरे मोतीकी खानमें है ॥ लाले बद-

कशां में क्या कीमत जो कुछ इनकी शानमें है ॥ कहां बिके ये बताओ बात ये किसके ध्यान में है ॥

शैर--इन्हें परखे वही जौहरी हो जिसकी पाक बीनाई ॥ नज़र नापाक करने से तो हो फिर उसकी रुसवाई ॥ खुदा के घरसे तो इज्जत उन्होंने इस कदर पाई ॥ इन्हींसे देखलो बिल्कुल है इस चेहरे की जेबाई ॥ किया सितम् पर सितम् ये मुसक्या करके जिस दम नंग हुए ॥ हीरे मोती लाल मरजां औ जमुर्रद संग हुये ॥ ये दंदां हैं उसके जिसके माहो मेहर अखतर हैं बने ॥ आमाल अपने हुये बाला तो मेरे दिलवर हैं बने ॥ अब मुझको क्या कमी रही ये पास मेरे गौहर हैं बने ॥ लाल भी अपने पास इल्मास के भी जेवर हैं बने ॥

शैर-ये वो नग हैं हकीकत इनके आगे क्या नगीनेकी ॥ ये वो मीना हैं जिस्से जेब हो दुनियांमें मीनेकी ॥ खुदाने इनको तो रंगत वो दी है इस करीनेकी ॥ मिले लज्जत इन्हींसे तो भलाखाने औ पीनेकी ॥ बनारसीको खुदाने बख्से कभी नजरसे तंग हुये ॥ हीरे मोती लाल मरजां औ जमुर्रद संग हुये ॥

खुदाकी तारीफ जिसतरह कुरानमें लिखी है ।

बहेर छोटी ।

कायम है खुदा एकजा वो न आये जाये ॥ पर कुदरत उसकी हरजा झलक दिखाये ॥ नहिं चले फिरे नाहिं खाय नपीवे पानी ॥ नाहिं घटे बढे ज्योंकी त्यों रब्बा नी ॥ मैं ने देखा आंखोंसे वह मेरा जानी ओ वहाँ है और मैं उसकी यहाँ निशानी ॥ जो बगैर देखे कहे वो बात कहानी ॥ देखे तो नूरमें मिले नूर नूरानी ॥ नाहिं हिले

न डोले बोले नाहिं मतलाये ॥ पर कुदरत उसकी हरजा झलक दिखाये ॥ शोलये नूर कुछ उसके नहीं बदन है ॥ दिलजासे मेरी उसकी लगी लगन है ॥ मैंने भी यही समझा कि मेरे तन है ॥ कुछ सहे नहीं ये समझ भी बहुत कठिन है ॥ नहिं मिलता उसका किसीको भी दर्शन है ॥ औ आपी आप अपना देखे जोबन है ॥ एकता है दुई की बात न सुने सुनाए । पर कुदरत० ॥ वो आपी हाकिम आपी वही गवाह है । आपी है बन्दा आपी वह अल्लाह है ॥ आपी है बना वो मेहर और आपी माह है । है सब में सब से अलग ये उसकी राह है ॥ बे गम है उसको किसी की भी नहीं चाह है । बे चश्म है देखे सबको अजब निगाह है ॥ लामकां है वोह नाहिं हटे किसी के हटाये । पर कुदरत० ॥ मशरक से मगरिब तक सबमें शामिल है । पर अलग है मेरा खुदा बड़ा कामिल है ॥ नहिं अकल है पर वो अकलसे भी आकिल है । नहीं अदल है पर वो अदल का भी आदिल है ॥ नहीं आबो हवा आतश और नहीं वो गिल है । कहै देवीसिंह बस उसी में मेरा दिल है ॥ और बनारसी कुछ गाये नहीं बजाये । पर कुदरत उसकी हर जां झलक दिखाये ॥

माशूक और आशिक पैरहन की तारीफ-बहेर लँ०

तुझको तो ऐ गुल गुलशन में फर्श इतर से तर चहिये । मुझको प्यारे खाक का उस जां पर बिसतर चहिये ॥ गिर्द तेरे चेहरे के हरदम उस महका हाला चहिये । तेरे दर की खाक मेरे मुँह पर आला चहिये ॥ तेरे गले में गजमुक्ता और लालों की माला चहिये । मेरे गलेमें वो लपटा चौतरफा काला चहिये ॥

तुझे तख्त सल्तनत का चहिये ॥ मुझको मृगछाला चहिये ॥ तेरे कदममें पदम पांवोंमें मेरे छाला चहिये ॥ तुझे सोनेको पलंग हमें पडनेको तेरा दर चहिये ॥ मुझको प्यारे खाकका० ॥

तेरे दस्त में छडी फूलकी चढने को घोडा चहिये ॥ मेरे हाथ में आज देहका उस दम कोडा चहिये ॥ तुझको तो एजान हमेशा करना नकतोडा चहिये ॥ मुझको जालिम कभी नहीं तुझसे मुंह मोडा चहिये ॥ तेरे वास्ते शाल दुशालेका तोफा जोडा चहिये ॥ मेरे वास्ते फटासा कम्बल भी थोडा चहिये ॥ तुझे चाहिये रंगमहल हमें तेराही कूंचा घर चहिये ॥ मुझको प्यारे० ॥

तेरे तो खाने को खूब तोफा मेवा हरदम चहिये ॥ मेरी गिजा है मुझे खानेको हरदम गम चहिये ॥ तुझको तो ए नाच रंग यक आलमका आलम चहिये ॥ मेरे दिलको हमेशा तुही एक जालिम चहिये ॥ तेरे वास्ते परी हूर महेताव और शबनम चहिये ॥ मेरी सदा है मुझे अब तुही फक्त हरदम चहिये ॥ अब तो आरजू यही तेरे कदमों में मेरा सर चहिये मुझको प्यारे० ॥

तू तो है सरदार तुझे करने को सरदारी चहिये ॥ हमें हमेशा तेरी करना तावेदारी चहिये ॥ तुझको तो अपने जोबनकी करना तैयारी चहिये ॥ हमको अपने बदनकी जरा न हुशियारी चहिये ॥ तुझको निशान और हाथी पर अम्बारी चहिये ॥ मुझको करना तेरी सब फरमा बरदारी चहिये ॥ जलेब में हरदम तेरे सब फौजों का लश्कर चहिये ॥ मुझको प्यारे० ॥

तेरे बदनपर यार सुनहरी गीनेका गहना चहिये ॥ अपने तनपर हमें सेली कफनी पहना चहिये ॥ तू चाहे झटककर मुझे दामन तेरा गहना चहिये ॥ जहां रहे तू तेरी खिदमतमें मुझे रहना चहिये ॥ देवीसिंह यों कहें तेरे सब जोर जुलम सहना चहिये ॥ बहेर इश्क में गर्क हो विना आब बहना चहिये ॥ बनारसी ये कहैं मेरे अब दिलको तुही दिलवर चहिये ॥ मुझ को प्यारे खाक का उस जांपर विस्तर चहिये ॥

रंज औ राहत दोनोंको एक समझना चाहिये ।

बहेर लंगड़ी ।

ऐ गुल तेरी उलफतमें गुलजार भी है और खार भी है॥बडा लुत्फ है इश्क में मार भी है और प्यार भी है॥कभी इशारा अबरूका है और कभी तलवार भी है॥कभी वस्लका हमसे एकरार भी है इनकार भी है॥कभी गालियां झिडकी हैं और कभी शीरीं गुफतार भी है। कभी खिजां है कभी गुलशन है बाग बहार भी है॥ बोला ये मंसूर दारपर दार है पर दीदार भी है॥ बडा लुत्फ है० ॥

कभी तौक गर्दनमें पडा और कभी फूलोंका हार भी है॥ कभी बरहना बदन है कभी तनपै शृंगार भी है॥ कभी सैर सहराकी है और कभी कूंचा बाजार भी है॥ कभी है राहत कभी रञ्जीदा दिल बीमार भी है॥ कहा लैलासे मजनू ने कभी सुलःभी है तकरार भी है॥बडा लुत्फ है० ॥

कभी हँसी दिल्लगी कभी रोना अशकोंका तार भी है॥ कभी नजर का छिपाना कभी निगाहें चार भी है॥ कभी गले

से लगे कभी वो करता दारोमदार भी है ॥ कभी जिलाये कभी यक अदासे डाले मार भी है ॥ कभी करे ऐयारी वो औ कभी वोः बनता यार भी है ॥ बडा लुत्फ है० ॥

कभी जख्म पुर होंय जिगरके कभी बदनपर गार भी है ॥ कभी करै खुश कभी वोःकरता दिल बेजार भी है । देवीसिंह ये कहैं मेरा वो: शोख सितमगर यार भी है ॥ जो चाहै सो करै अब वही दिलका मुखतार भी है ॥ बनारसी कहैं नेकी बदी दोनोंका उसे अखत्यार भी है ॥ बडा लुत्फ है० ॥

होली जिस्मकी मतलब तौहीद-बहेर लँगडी।

बनी मेरे इस जिस्मकी होली लगी इश्ककी आग भला ॥ लगा गलेसे सनमको तनमें खेलूँ फाग भला ॥ भर भरके चश्मोंमें अश्क करदूँ आंखें रंगीन भला ॥ सुर्ख गुलाबी और केसरिया रंगत तीन भला ॥ रो रो के जामें को मवत्तर करूं बजाऊं बीन भला ॥ लौमें शोले नूरके रहूं सदा लवलीन भला ॥

शैर--बनाया उसने मुझे वो: फकीर होलीमें ॥ के आये वेनवाँ लेके अबीर होलीमें ॥ उन्हींमें मिलगये मुझको कबीर होलीमें ॥ सुनाये मैंने उन्हें वो कबीर होलीमें ॥ लडूं भिडूं गालियाँ खाऊं नाहिं रक्खूँ दिलमें लाग भला ॥ लगा गलेसे सनमको तनमें खेलूं फाग भला ॥ प्यार की पिचकारीसे उसने किया मुझे रंगलाल भला ॥ खुशी हुई वो: तो उडगया गमका सभी गुलाल भला ॥ अनहद बाजे बजें मगजमें कई:वजहकी ताल भला ॥ राग वोः दीपक सुने जो हो साहबे कमाल भला ॥

शैर--लिया है अबके भला मैंने योग होली में ॥ मैं

अपने योगसे करता हूं भोग होलीमें ॥ लगा ये इश्कका ऐसा ही रोग होलीमें ॥ जिगर भी जल गया करके वियोग होलीमें ॥ नींद कहां आती है मुझे मैं रहूं रातो दिन जाग भला ॥ लगा गलेसे सनमको तनमें खेलूं फाग भला ॥ मैं अपने दिलमें देखुं है इसीमें उसका नूर भला ॥ उसीसे खेलूं मैं होली उडाऊं तनकी धूर भला ॥ हाथ पांव लकटिया हैं इनका मुझको नहीं गुरूर भला ॥ ये मैं नहीं हूं और हूं इनमें पर इनसे दूर भला ॥

शैर--ये मैंने पीरसे सीखा है खेल होलीमें ॥ अब अपने यारसे रखताहूं मेल होलीमें ॥ मलूं मैं यारका इतरो फुलेल होलीमें ॥ कि जिसकी बूसे मिटे कुल झमेल होलीमें ॥ गिरे नहीं मेरे सरसे इज्जत हुरमतकी पाग भला ॥ लगा गलेसे सनमको तनमें खेलूं फाग भला ॥ ऐसी होली ओ खेलो हो जिस्को कुछ फहमीद भला ॥ कहै देवीसिंह ये है होली भी और तौहीद भला ॥ इसीमें देखूं नाचरंग है इसीमें उसका दीद भला ॥ इसी जिस्ममें करूं मैं खुदासे गुफ्त शुनीद भला ॥

शैर--उडादे दिलसे खुदीकी तू खाक होलीमें ॥ तो होवे दम्मे तेरा जिस्म पाक होलीमें ॥ ये अबकी मानले मेरी तू साक होलीमें ॥ तर्क दुनियाँको तू करता हो यार होलीमें ॥ बनारसी तेरी होलीमें है इश्क ज्ञान वैराग्य भला ॥ लगा गलेसे सनमको तनमें खेलूं फाग भला ॥

परमेश्वर के यादमें रोनेकी तारीफ बहेर छोटी।

अश्कोंसे मेरी गौहर लगी है ॥ ये दुकान अब मोतियोंकी बडी लगी है ॥ कभी मीजयकी नोकों पर यों अश्क

खुलते हैं ॥ इलमास के टुकडे कांटों पर तुलते हैं ॥ जिस वक्त ये आंसू सीनेपर ढुलते हैं ॥ तो दाग जिगरके साफ मेरे धुलते हैं ॥ इस धारसे दुरदानेकी छडी लगी है ॥ ये दुकान अब मोतियोंकी बडी लगी है ॥ कभी खूने अश्क अश्कोंसे मिल बहता है ॥ तो लालका दिल भी गौहर में रहता है ॥ बेबहा हैं इनका मोल न कोई कहता है । जो आशके जौहरी है वोः इन्हें चहता है ॥ इस कदर मेरे चश्मोंसे झडी लगी है ॥ ये दुकान अब मोतियोंकी बडी लगी है ॥ फुरकते यारमें दिलको बेकरारी है । सब इसीसे रातो दिन गिरिया जारी है ॥ अश्कों से मेरे गौहरने जो की यारी है ॥ बस इसीसे उसने पाई आब दारी है ॥ दोनों आंखोंसे मेरे दुलडी लगी है ॥ ये दुकान अब मोतियोंकी बडी लगी है ॥ वो देवीसिंहने तुख्म मुहब्बत बोया तो रोजे हश्रको बडी चैनसे सोया ॥ और बनारसी उस यादे खुदामें रोया ॥ अश्कोंसे गौहर बे बिंधेका हार पिरोया ॥ आंखोंसे मेरे बारिश हर घडी लगी है ॥ ये दुकान अब मोति-योंकी बडी लगी है ॥

ख्याल इश्कके दर्दका-बहेर छोटी ।

आशकके दर्दको आशक हो सोइ जाने ॥ हीरेकी खान को कोई जौहरी पहचाने ॥ जिसके पांवोंमें कभी न फटी बेवाई ॥ वो क्या जाने दुनियाँमें पीर पराई ॥ ये मसल है मैंने सुनी सो तुम्हें सुनाई ॥ आशक मरीजकी कहाँ है लिखी दवाई ॥ मजनूंकी तबीबोंने जो फस्त कराई ॥ लैलाके निकला खून तो ओ घबराई ॥ आशकका दुखडा जानें आशक स्याने ॥ हीरेकी खानको कोई जौहरी पहचाने ॥ फरहादने अपने सरपर

तेगा मारा ॥ ये सदमा शीरीं को नहिं हुआ गवारा ॥ वो मरा वोभी मरगई हाल सुन सारा ॥ वो उसकी प्यारी हुई वो उसका प्यारा ॥ रांझेने इश्कमें छोडा तख्त हजारा ॥ तो हीरने उस पर तन मन धन सब वारा ॥ हो खाकसार सेहराकी खाक जो छाने ॥ हीरेकी खानको कोई जौहरी पहचाने ॥ जिस आशकने है अपना जिगर जलाया ॥ तो इश्कने उसका रोशन नाम कराया ॥ आशिकने रंजमें तो राहतको पाया ॥ यह गैरसे सदमा कभी न जाय उठाया ॥ जिसके दिलमें है खुदा का इश्क समाया ॥ वो खुशी हुआ गर किसीने उसे सताया ॥ ये इश्क कोई पूरा दुनियामें ठाने ॥ हीरेकी खानको कोई जौहरी पहचाने ॥ जिसके दिलमें है दर्द वही है दाना ॥ ये दर्दका तो दुनियांमें नहीं ठिकाना ॥ बेरहम हैं जो आशकको कहैं दीवाना ॥ इस जहांमें उनका बेहतर है मरजाना ॥ जिसके दिलमें दिलवर का इश्क समाना ॥ वोः खुदाको देखे देखे नहीं जमाना ॥ देवीसिंहकी बातें सब रुस्तमजी माने ॥ हीरेकी खानको कोई जौहरी पहचाने ॥

ख्याल खुदाके फजलका-बहेर खडी ।

महर जो उसकी होवे तो वह मार मारसे डरे नहीं ॥ चींटी पर हाथी चढबैठे तो ओ चींटी मरे नहीं ॥ वह चाहे तो शराबको आबेहयातका जमा करे ॥ खुशी जो उसकी होवे तो वोः कुफ्रको भी इस्लाम करे ॥ नवाजियोंसे खफा रहे रिन्दोंके साथ कलाम करे ॥ बुतखाने मस्जिदको तोडकर मैखाना सनाम करे ॥ ऐसे ऐसे काम तो उसके सिवाय और कोई करे नहीं ॥ चींटी पर हाथी चढ बैठे तो वोः चींटी

मरे नहीं ॥ डाले कोई बारूदमें आतिश औ वो दारू जले नहीं ॥ हजार मनकी चक्की हो पर एक मूंगको दले नहीं ॥ पानी पर तैरे वो बतासा लाख वर्ष तक गले नहीं ॥ उसकी कुदरतके आगे कुछ जोर किसीका चले नहीं ॥ सब उसके नजदीक हैं और कोई बात तो उससे परे नहीं ॥ चींटी पर हाथी चढ बैठे तो वोः चींटी मरे नहीं ॥ बांधे कच्चे सूतसे जिसको वोः कैदी क्यों कर छूटे ॥ मदद जो उस्की हो तो आहनकी संकल दममें टूटे ॥ बडे बडे रुस्तम को कायर मारके सरतापा लूटे ॥ पत्थर पर राई दे मारे तो पहाड दममें फूटे ॥ सब कुछ वोः करता है पर अपने जिम्में कुछ धरे नहीं ॥ चींटी पर हाथी चढ बैठे तो वो चींटी मरे नहीं ॥ गलियोंके पत्थरको वोः चाहे हीरे मोती लाल करे ॥ बना दे वो कोयलोंकी मोहर एक दममें मालामाल करे ॥ देवीसिंह कहे बनारसी के ख्यालैप कोई खयाल करे ॥ क्या ताकत है कालकी जो फिर उसका बांका बाल करे ॥ ऐसा सखुन सुननेसे दिल हरचन्द किसीका भरे नहीं ॥ चींटी पर हाथी चढ बैठे तो वोः चींटी मरे नहीं ॥

तथा ।

खुदा फजल जो करे बन्दा तो किसीसे मुतलक डरे नहीं ॥ मौत भी उसका कुछ न कर सके कभी वो हरगिज मरे नहीं ॥ अदनाको आला कर दे वो अपनी जबाँ हिलानेसे ॥ लिखा हुआ तकदीरका भी मिट जाये उसके मिटानेसे ॥ बुतखाना काबा है बना अब उसीके देख बनानेसे ॥ उसके काम हैं अलाहिदा इस दुनियाँ और जमाने से ॥ कुल उसका अख्ति

यार जहांमें और कोई कुछ करे नहीं ॥ मौतभी उसका कुछ न कर सके कभी वो हरगिज मरे नहीं ॥ राईका पर्वत कर दे औ पर्वतसे राई करदे ॥ दुई हो जिस्के दिलमें वोः चाहै तो यकताई कर दे ॥ दोस्तको वोः दुश्मन करदे औ दुश्मनको भाई करदे ॥ बेवकूफको अकल दे और स्यानेको सौदाई कर दे ॥ मेरा दम तो सिवा खुदाके किसीका भी दम भरे नहीं ॥ मौत भी उसका कुछ न कर सके कभी वोः हरगिज मरे नहीं॥ क्या जाने क्या लिखा है इस तकदीरमें और क्या लिखेगा वोः ॥ रोजे अज्लका किसे हाल मालूम इसे तुम बतला दो ॥ जो तुम इससे नहीं हो वाकिफ तो इस पर कायम न रहो ॥ जो चाहै सो करें वही हर वक्त उसीकी याद करो ॥ वोः सबके नजदीक भी है और कोई तो उससे परे नहीं ॥ मौत भी उसका कुछ न कर सके वोः हरगिज मरे नहीं ॥ खाक को वोः अकसीर करे और आबको वो गौहर कर दे ॥ पत्थरको पारस कर दे और लोहे पर जौहर कर दे ॥ देवीसिंह ये कहै वोः कँघुयेको सबका अफसर कर दे ॥ बनारसी चेपदा है उसकी जबां पै कुल दफ्तर कर दे ॥ अकल और तकदीरका भी बिन खुदा काम कोई सरे नहीं ॥ मौत भी उसका कुछ न करसके कभी वोः हरगिज मरे नहीं ॥

ख्याल खुदाके ढूंढनेका-बहेर छोटी।

हम तेरे इश्कमें यार बहुत दिन भटके ॥ अब मिला सनम तू हमैं खुले पट घटके ॥ कई बार गया सर तेरे इश्क में कटके ॥ फिर पाया हमने नाम तुम्हारा रटके ॥ किये रंज

अलम मंजुर जरा नाहिं ठटके ॥ दिलकी दहसत सब निकल गई छट छटके ॥ कई लाख वजहके दिये हैं तूने झटके ॥ अब मिला सनम तू हमें खुले पट घटके ॥ जिसवक्त तेरी वह जुल्फ नागनी लटके ॥ कोई इधरसे हो जाय उधर उधरसे सटके ॥ गर देखे कालानाग तो सरको पटके ॥ चढ जाय जहर जुल्फोंका वा घरको सटके ॥ हम आशिक हैं मजबूत कहां जाँय हटके ॥ अब मिला सनम तू हमें खुले पट घटके ॥ लैलासे लगाया दिल मजनूने डटके ॥ तन बदन दिया सब काट उसीसे अटके ॥ शूलीपै चढा मंशूर उसी पर मटके ॥ नहीं जरा नोक सूलीकी जिगर में खटके ॥ देखा जो मुझे दिल गया जहांसे फटके ॥ अब मिला सनम तू हमें खुले पट घटके ॥ जब खुले किवाडे यार कपटके पटके ॥ दिल में पाये दीदार वो बंशीवटके ॥ शिर मोरमुकुट कटि कसे जरीके हटके ॥ कहे देवीसिंह हैं अजब खेल नटखटके ॥ कहैं बनारसी हम आशक नागरनटके ॥ अब मिला सनम तू हमें खुले पट घटके ॥

ख्याल खुदाकी यादका बहेर छोटी।

हर जगे पै देखा कहीं नहीं तू देखा ॥ जहां याद है तेरी वहीं वहीं तू देखा ॥ गये बिहिश्तमें हम वहां न तुझको पाया ॥ बुतखानेमें भी नहीं नजर तू आया ॥ काबा किबला मक्का मस्जिद ढुंढवाया ॥ काशी मथुरामें बहुत दिनों भरमाया ॥ जाजाकर गंगासागर सिंधु नहाया ॥ मैं तेरे इश्कमें चारों तरफ उठ धाया ॥ नहिं मैंने प्यारे और कहीं तू देखा ॥ जहां याद है तेरी वहीं वहीं तू देखा ॥ जंगल बस्ती सब उजाड़ हमने छाना ॥ नहीं

देखा तुझको देखा सभी जमाना ॥ कोई मतवाला कहता है कोई मस्ताना ॥ जो जो कुछ जिसने कहा वो हमने माना ॥ कूबकू फिरा दर दरका हुआ दिवाना ॥ नहिंपाया प्यारे तेरा कहीं ठिकाना ॥ अब याद करी तो दिलमें यहीं तू देखा ॥ जहां याद है तेरी वहीं वहीं तू देखा ॥ सर पटक पटककर पहाडपर दे मारा ॥ और आह आह कर करके बहुत पुकारा ॥ देखा देवल देहरा और ठाकुर द्वारा ॥ सरतापा सबको देख देख कर हारा ॥ घर बार तजा आलमसे किया किनारा ॥ जैसी कुछ गुजरी वैसे किया गुजारा । ये बातें हमको याद रहीं तू देखा । जहां याद है तेरी वहीं वहीं तू देखा ॥ सब देखा हमने गुलशन और गुल्लाला ॥ बन फकीर बन बन फिरा पहन बनमाला ॥ देखा पत्ता पत्ता औ डाली डाला ॥ है सबमें तू औ सबसे रहै निराला ॥ यह बनारसीका कलाम है रसका ढाला ॥ है अरज मेरी यह सुनों नंदके लाला ॥ तुझ दिलवर पर आशिक हूं नहीं तू देखा ॥ जहां याद है तेरी वहीं वहीं तू देखा ॥

इश्ककी दावत-बहेर डेवढी राग सारंग ।

इश्क हजरतनीकी हम पै मेहेबानी ॥ करूं मैं क्या क्या मेहमानी ॥ नजर देनेको दिल मैं अपना लाया ॥ इसके बहुत पसंद आया ॥ इश्कने मेरा जब लख्ते जिगर खाया ॥ तो मैंने और भी बतलाया ॥ खून आशिकका ये है ताजा पानी ॥ पीजिये इश्क मेरे जानी ॥ अश्क गौहरका जब गले हार डाला ॥ इश्कने कहा ये है आला । चश्ममें भर भर कर वो मैं गुल्लाला ॥ इश्कके तईं दिया प्याला ॥ बन पडी

मुझसे जो कुछ करी कदरदानी ॥ इश्ककी सभी बातमानी ॥ जिगर पर मेरे जो थे उल्फतके गार ॥ दिखाया इश्कको वोः गुलजार ॥ और सीने पर गुल खाये कई हजार ॥ दिखाई इश्कके तईं बहार ॥ माल जर सारा दे करके यही ठानी ॥ किया तन अपना उरयानी ॥ और एक तोफा जो था सबमें भारी ॥ जान होती सबको प्यारी ॥ इश्कके ऊपर वोः भी मैंने वारी ॥ न जी देने से हुआ आरी ॥ कहूँ मैं इसके आगे अब क्या वानी ॥ इश्कके हाथ है जिंदगानी ॥ कि मैं हूं आशिक है इश्क मेरा सरदार॥ हम हैं उसके फरमा बरदार ॥ बजुज आशकी के कुछ और न मेरा कार ॥ इश्क के सिवा न कोई यार ॥ कहैं देवीसिंह हैं बनारसी ज्ञानी ॥ हरेक छंद जिसका हक्कानी ॥

इश्क आनेकी खातिर और दाहत ।

बहेर मेरी जानकी ।

आवो आवोजी मेरे महाराज इश्क आवोजी मेरी जान ॥ आज तुमैं यहीं करो आराम ॥ आज तुम्हें देखा है बहुत दिन से था नाम सरनाम ॥ देखा तो लिबासे नंग बदन नाजुक है मेरी जान ॥ तेरा जामा है तने उरियां ॥ यही तोर मेरा है हमेशा रहूँ लबे बिरियां ॥ गरदीद ये तर हैं आप तो मैं रोता हूँ मेरी जान ॥ रहैं हरवक्त चश्म गिरियां ॥ आप देखें हूरों को मेरी आंखों में बसें परियां ॥

तोडा-मेरा तेरा दो नाहिं एकही दिल है ॥ जख्मी है जिगर तेरा तो मेरा घायल है ॥ मेरी जान दुईका मेरा न तेरा कलाम ॥ आज तुम्हें देखा है बहुत दिन से था नाम सरनाम ॥

तू जखम जिगर खा खा के खून पीता है ॥ मेरी जान तो मैं गम खायके जीऊँ जानी ॥ प्यास अगर्चे लगे तो फिर रोरो के पीऊँ पानी ॥ तू बियाबान सहेराकी सैर करता है मेरी जान । तुझे भाता है बीरानी ॥ मुझ में तुझ में कुछ भी फर्क नहीं है मेरे दिलजानी ॥

तोडा—तू राजे नेहा है तो मैं छिपाहुं तन में ॥ तू मेरे दिलमें बसा मैं तेरे मनमें ॥ मेरी जान न भूलूं तुझे मैं आठों जाम ॥ आज तुम्हें देखा है बहुत दिनसे था नाम सरनाम ॥

मालूम हुआ गर्दिश तुझको भाती है मेरी जान तो मैं खुश हूं हैरानी में॥तूने गुलखाये तो दाग मुझे दिये निशानी में ॥ तू मजनू की सूरत है आशके लैला मेरी जान लिखा तेरी पेशानी में ॥ मैं भी बहुत लागा रहूं इश्क लग गया जवानी में ॥

तोडा—तू गदा हुआ दुनियां की खाक उड़ाई ॥ मैंने भी खाक सारी में धूम मचाई ॥ मेरी जान हुए हम तुम दोनों बदनाम ॥ आज तुम्हें० ॥

बे खौफ है तुझको नहीं किसी का डर है मेरी जान ॥ तो मुझको भी है नहिं खटका॥ मेरा तेरा दोनों का दिल उसी से है अटका ॥ मंसूर है तू तो मैं भी शम्स तब्रेज हूं मेरी जान ॥ आशकीका है यही लटका ॥ खाल उतारी दार चढे ये प्यार का है झटका ॥

तोडा—कहैं बनारसी नहिं मरे किसी के मारे ॥ के लाख दफा गर्दन पर फिर गये आरे ॥ मेरी जान जिस्म से मुझे तुझ नहिं काम ॥ आज तुम्हें० ॥

इश्क में सब्र करना तकलीफ में घबराना नहीं।

मार्फत बहेर।

मेरी जान की।

अय दिल तू अब लग गया तो क्यों घबराता मेरी जान ॥ सब्र कर मिलेगा तेरा यार ॥ जिसका झलक है फलक मलक और खलक तलक गुलजार ॥ फिर दिलने मुझसे कहा कि मैं हूं आशिक मेरी जान ॥ जरा नहिं होय सब्र हमसे ॥ बेताब हुआ सीमाब से ज्यादा जालिम के गम से !! कोई लगादे मेरे पर तो उड़ूं इस खातर मेरी जान । मिलूं मैं अपने हम दमसे ॥ बेचैन हुआ इस कदर मेरा दम घबराया दमसे ।

तोडा—जलदी से मुझे कोई वहां तलक पहुंचादे ॥ यक नजर रहम की जरा मुझे दिखलादे ॥ मेरी जान मुझे दीदार सिर्फ दरकार ॥ जिसकी झलक है फलक मलक और खलक तलक गुलजार॥फिर मैंने दिलसे कहा अरे बे सब्रे मेरी जान । सब्र है बडी चीज प्यारे ॥ उसीको दिलवर मिले जो कि अपने दिलको मारे ॥ जो आशिक हैं वोह जरा आह नहिं करते मेरी जान ॥ चलें चाहे गर्दन पर आरे ॥ इश्क किया मंसूर मारे सूली पर नज्जारे ।

तोडा—फिर ओही शम्स तबरेज हुआ मस्ताना ॥ है जिसके इश्क को कुल आलम ने जाना । मेरी जान किया अपने दिलको हुशियार । जिसकी झलकहै फलक मलक और खलक तलक गुलजार ॥ फिर दिलने मुझसे कहा बहुत बेकल हूं मेरी

जान ॥ याद उस दिलवर की आये ॥ रह रहके रोता हूं रातों दिन यह दिल घबराये ॥ किस तरह ताम्बुल करूं सब्र नहिं आता मेरी जान ॥ बात नहीं किसी की अब भाये ॥ इश्क आग लगी तन में गमसे जिगर जला जाये ॥

तोड-दिल खाकसार कर दिया खाक में मिलके ॥ अब जरा चैन नहिं पडता बिन कातिलके ॥ मेरी जान मिलेगा कब हमको दिलदार ॥ जिसकी झलक है फलक मलक और खलक तलक गुलजार ॥ फिर मैंने दिलसे कहा बात यक सुन तू मेरी जान ॥ सब्र है आशिकका खाना ॥ जो चाहे सो होवे इश्कमें गमपर गम खाना ॥ कई लाख बजेह से बहुत तरह समझाया मेरी जान । कहा सब आशकोंका माना ॥ सुनके इश्कका हाल मेरा कहना दिलने माना ॥

तोडा-फिर इसे सब्र होगया मिला वोः हरदम । ये कहे देवीसिंह दूर हुआ दिल का गम ॥ मेरी जान कहे छंद बनारसी ललकार ॥ जिसकी झलक० ॥

खुदाके नूरको अपने दिलमें देखना । मतलब तौहीद-बहेर मेरी जानकी ।

वोः झलक तेरी है फलक मलक नहिं पाये मेरी जान ॥ मेहर तकसे शरमाया जी ॥ नहीं देखाई देता है नजरों में समायाजी ॥ क्या गजब है तेरी शान जान कुरबान मेरी जान ॥ ठानकर दिलपर अपने जी ॥ सभी काम दिये छोड लगे अब तुझको जपने जी ॥ भरपूर नूर जहूर हूरके वेहतर

मेरी जान ॥ मुझे वो आये सपने जी ॥ तुझे ख्वाबमें देख गये हम बनको तपने जी ॥

तोडा-कुछ दिनों तलक तप किया किये बहुतेरा ॥ पर वहां ठेकाना हमें लगा नहिं तेरा ॥ मेरी जान मुल्क दर मुल्क फिर आयाजी ॥ नहीं दिखाई देता है नजरों में समायाजी ॥ है अजब चारकी आह दाह नहिं बुझत मेरी जान ॥ राह जो इश्ककी आते जी ॥ लाखों वजहके रंजो आलम गम सितम उठातेजी ॥ हैरां वारा मैंदांमें बहुत फिरते हैं मेरी जान ॥ पास गैरोंके जातेजी ॥ उन्हें नहीं तू मिले कोई घर बैठे पातेजी ॥

तोडा-हरदम दम रह रहके घबराता है ॥ बल्लाह तेरा गम मुझे रोज खाता है ॥ मेरी जान इश्कने खूब सतायाजी ॥ नहीं देखाई देता है नजरोंमें समायाजी ॥ हर दम तेरा गम आलम रहा करता है मेरी जान ॥ हुआ दिल पारे पारेजी ॥ तेरे इश्कमें मरा मुझे अब कोई न मारे जी ॥ कुशवार यार दीदार तेरा हरवार मेरी जान ॥ मिलें नहिं सदा नजारेजी ॥ आह बडा अफसोसके तेरे जुलम इशारेजी ॥

तोडा-क्या कसूर मेरा है तू मुझे बतलादे ॥ यक नजर रहमकी जरा हमें दिखलादे ॥ मेरी जान मेरा अब दम घबराया जी ॥ जहर नहीं दिखाई देता है नजरोंमें समाया जी ॥ है कहेर इश्ककी लहेर नाहिं उतरे मेरी जान ॥ ठहरते इसमें पूरे जी ॥ वोः आशिक नाहिं मिले तुझे जो रहें अधूरे जी ॥ एक आनमें तेरी आन आन मिलती है मेरी जान ॥ तुझे

जाने मनसूरे जी ।। कहे देबीसिंह मस्त मेरा दिल तुझको घूरेजी ।।

तोडा—कहे बनारसी मैं बहुत हुआ हैरान ।। पर और न देखा कहीं तेरा मक्कान ।। मेरी जान तुझे इस दिलमें पाया जी ।। नहीं देखाई देता है नजरों में समाया जी ।।

इश्कके खानेकी दावत । बेहर डेवढी-राग सारंग ।

इश्क आवोजी मैं सरपर बिठलाउं ।। कहो सो खातिरको लाऊं ।। जो निमकीं चाहो तो पियो हमारा खूं ।। चरपरा कहो तो दिल सेकूँ ।। अगर मैं मांगों तो अभी अश्क भरदूं ।। जो तुम लैला हो तो मैं मजनूं ।। काटदूँ बोटी दिल अपना परखाऊं ।। कहो सो खातिर को लाऊं ।। मगर शीरीं कुछ चाहे तबियत अब ।। तो मेरे मिलादो लबसे लब ।। आज आये हो फिर आओगे तुम कब ।। ये जी चाहता है लुटादूँ सब ।। भला मैं ढूंढूं तो कहाँ तुम्हें पाऊं । कहो सो खातिर को लाऊं ।। बनादूं कपडे सब उतार तनकी खाल ।। तुम इनको पहेर रहो रंगलाल ।। तुम्हें ख्वाहिस होगर कुछ दुनियां का माल ।। तो दंदां बनादूँ गौहर लाल ।। मुझे गर बेचौ तो अभी मैं बिकजाऊं ।। कहो सो खातिर को लाऊं ।। जो जेवर पहरो तो मेरी उतारो खाल ।। मकां हाजिर है लामकां का ।। शौक गर तुमको कुछ होवे गुलिस्तां का मेरा तन बना बोस्तां का ।। मैं इसके ऊपर अब लाखों गुल खाऊं ।। कहो सो खातिर को लाऊं ।। सुनो गर गाना तो ऐसी हिचकियां लूँ ।। मैं इसमें सभी राग कह दूँ ।। जानतक मागो तो कभी करूँ नहिं चूं ।। तसद्दुक तनो बदनसे हूं ।। मैं तुम परवारी हर तौरसे

हो जाऊं ॥ कहो सो खातिर को लाऊं ॥ कहा ये मैंने तो इश्क भी यों बोला तू आशिक है बाला भोला ॥ भेद सब उसने अपना मुझसे खोला ॥ तो दो का एक हुआ चोला ॥ कहे काशीगिरि अब आगे क्या गाऊँ ॥ कहो सो खातिर को लाऊँ ॥

जहरकोआबेहयात समझना इश्कमेंमतलबतौहीद

बहेर छोटी ।

इस कदर इश्कमें हुई मुझे तलमलियां ॥ खा गया समझ के कंद जहरकी डलियां ॥ कौसरके धोके दिया जहरका प्याला ॥ मसनद को समझ खारोंपर बिस्तर डाला ॥ काकुल पै हाथ पहुँचा तो निकला काला । मन को मारके मैंने भरा आहका नाला ॥ दिल धडका तो दरियामें तपीं मछलियां ॥ खागया समझके कंद जहर की डलियां ॥ इस्लाम समझके दीनो मजहबको छोडा । और ईमां समझके कुफरसे नाता जोडा ॥ समझा था जिसको बहुत वो निकला थोडा ॥ इस लिये ये मुँहको कुल जहानसे मोडा ॥ मालूम हुआ जो इश्कमें थी छलबलियां ॥ खा गया समझके कंद जहरकी डलियां ॥ अब खुदा समझ कर नजर बुतों पर डाली ॥ औ अजाँ समझके दिलने आह निकली ॥ समझे थे जिसको भरा वो निकला खाली ॥ जाहर करनेको हुआ तो बात छिपाली ॥ हैं मेरे इश्ककी अर्श तलक झल झलियां ॥ खागया समझके कंद जहरकी डलियां ॥ दो समझके पाया एक एक खो बैठे ॥ लौलगा सनमकी यादमें जो जो बैठे ॥ हम इईसे इस दुनिया में हाथ धो बैठे ॥ अब तनहाईमें आपी आप हो बैठे ॥ कहे

बनारसी उलफतकी बातें सखियां ॥ खागया समझके कंद जहरकी डलियां ॥

सबकाम छोड़केपाकइश्ककोकरोतोजदखुदामिले

बेहर लँगडी ।

नेम धर्म औ कर्म दीन ईमान को दूर करो बाबा ॥ आशिके सादिक बनो दिल इश्क में चूर करो बाबा ॥ तसबी को तोडो माल्लाको छोडो हाथ प्यारेका गहो ॥ गले सनमके लगो कुछ हाले दिल दिलवरसे कहो ॥ टीका तुन मन क्या करना मत पढ नमाज रोजे न रहो ॥ गमके भोजन करो जो गुजरे वो इस दिल पै सहो ॥ तीरथ बरत सभी छोडो दरिया में इश्कके बीच बहो ॥ इसीमें गंगा और यमुना काशी मक्का तुरत लहो ॥ मिला चाहो उस यारसे तो तुम इश्क जरूर करो बाबा ॥ आशिके सादिक बनो दिल इश्कमें चूर करो बाबा ॥ आचारका डालो अचार इस बातका जरा बिचार करो ॥ पाक मुहब्बत करो और जहांमें कोई यार करो ॥ दिलसे दिल औ मिला जिगर से जिगर खूबसा प्यार करो ॥ लडा नजरसे नजर उस दिलवर का दीदार करो ॥ पिवो मुहब्बत की शराब दिलका कवाब तय्यार करो ॥ बनो वैष्णव जो तुम यह मेरा कहा अखत्यार करो ॥ घोटके भंग छानो औ नशेका खूब सुरूर करो बाबा ॥ आशिके सादिक बनो दिल इश्कमें चूर करो बाबा ॥ वेद पुरान कुरान किताबोंसे है इश्ककी बात बड़ी ॥ ब्राह्मण सैयदकी जातोंसे है इश्क की जात बडी ॥ और जहांके फन हैं जितने सबसे इश्ककी घात बडी ॥ आफतें जाह इस्ककी राह में है आफत बडी ॥ जितने

घाट है जहांमें सबसे इश्ककी है बिसरात बडी ॥ बारिश मौशर से तो है रोनेकी बरसात बडी ॥ लडो इश्के मैदांमें यह मन मनसूर करो बाबा ॥ आशिके सादिक बन दिल इश्कमें चूर करो बाबा ॥ कथाको क्या कथते हो छोड दीवानोंको दीवाना हो ॥ गाने बजाने का है वोः मज़ा जो कोई गाये रोरो ॥ हमने इश्कमें धरा कदम सर दिया जान अपनी दीखो ॥ लुत्फ उठाया इश्कका रंजको राहत समझा जो ॥ बनारसी ये कहे इश्क करते हैं इस जहांमें जो जो ॥ मिलें वो हकसे रहें लामकांमें उसके साथमें सो सो ॥ इश्क किया चाहो तो यारसे नहीं गुरूर करो बाबा ॥ आशिके सादिक बनो दिल इश्कमें चूर करो बाबा ॥

तकलीफमें बहुत आराम है आशिकके वास्ते।

मार्फत मेरी जानकी।

आफत है इश्क आफत है इश्क आफत है मेरी जान ॥ पर है इस आफत में आराम ॥ आशिक हो सोई जाने फासिक क्या जाने यह काम ॥ अव्वल है इसमें जानो माल का खोना मेरी जान ॥ कि दोयम जिगर जलाना है ॥ सेयुं अपने सरपै कोहगम अलम उठाना है ॥ जो जो इसमें तकलीफ है मुझसे सुनलो मेरी जान ॥ मुझे यह सभी सुनाना है ॥ कोई कहै वहशी और कोई कहता दीवाना है ॥ जंजीर तौक यह सब इसका जेवर है मेरी जान ॥ आशिकोंका यही बाना है ॥ और कहांतक कहूं इसमें जीतेजी मरजाना है ॥

तोड़ा—जो इसे करे मंजूर तो फिर क्या डर है ॥ आशक

को मरने का कहां खौफ खतर है ॥ मेरी जान वो तो चाहता है जहां में नाम ॥ आशिक हो सोई जाने फासिक क्या जाने यह काम ॥ जिसे जिसके पीछे पड़ा इश्क यह आकर मेरी जान ॥ उसे मिट्टी में मिलाया है ॥ किसीको सूली दिया किसी का शिर कटवाया है ॥ और किसीकी इसने तनमें खाल उतारी मेरी जान ॥ फिर उसमें भुस भर वाया है ॥ उसी खाल को उसने फिर कोडों से उडवाया है ॥ लिया तख्त ताज सब लूट बादशाहों का मेरी जान ॥ फिर उनको गदा बनाया है ॥ बियावान सेहरा में उन्हें कांटों पे घुमाया है ॥

तोडा--जिसको ये रंज सहना हो वो इसमें आये ॥ आये तो नहीं इस आफत से घबराये ॥ मेरी जान तो फिर हो दुनियां में सरनाम ॥ आशिक हो सोई जाने फासिक क्या जाने यह काम ॥ जालिम है इश्क के और जुल्म लाखों हैं मेरी जान ॥ सरपे आरे भी चलते हैं ॥ बहेर इश्क में जो डूबे वो नहीं उछलते हैं ॥ हिंदू या मुसल्मां शेख बरहमन सारे मेरी जान अपने हाथों को मलते हैं ॥ इसकी राहमें जो आये वो नहीं निकलते हैं ॥ यह वो आतिश है जिससे आग पैदा हो मेरी जान ॥ जिगरमें शोले बलते हैं ॥ जैसे आपसे जले सती आशिक भी जलते हैं ॥

तोड़ा--जो जलें तो उनकी हुई रोशनी आला ॥ मशरिके ता मगरिब उनका उजियाला मेरी जान ॥ पिये वो मैं वहदत का जाम ॥ आशिक हो सोई जाने फासिक क्या जाने यह काम ॥ कह चुके अब हम अपना भी हाल कहते हैं मेरी जान ॥

इश्क में गया मेरा सब दीन ॥ मुफ्तमें उस माशूकने जबरनूसे ये लिया दिल छीन ।। नहिं इधर के हम नहीं उधर के कहो किधरके मेरी जान ॥ रहे जंगलके तिनके बीन ॥ दोनों जहां में इश्क ने मुझको कर दिया तेरह तीन ॥ सोलहो कला जब उसने मुझे दिखाई मेरी जान ॥ हुआ फिर उसी में म ल्वलीन ।। रंज को हम राहत समझे ये दिलसे हुआ यकीन ।।

तोड़ा--कहे बनारसी राहत है रंज राहत है ॥ मुझको तो हमेशा इसीकी कुछ चाहत है ॥ मेरी जान इश्क में मिला मुझे गुलफाम ॥ आशिक हो सोई जाने फासिक क्या जाने यह काम ॥

दवा इश्ककी जिससे मुर्दा जीता है बहेर लँगडी।

मिलाके लबसे लब उसने कितनोंही की लाश जिलाई है ॥ लबे यारको लिखो मुर्दों की यही दवाई है ॥ मैं हूँ मरीजे इश्क मुझे ईसा किस तरह आराम करे ।। जुबाँ यारकी जुबां से मिले तो ओः कुछ काम करे ॥ गुंचे दहन गर बोसा मेरा ले तो काम तमाम करे ।। मुझ मरीजको जिलाये जहांमें अपना नाम करे ॥

शैर--बजुज इसके कहां जीनेकी अब उम्मेद है मुझको ॥ लबे शीरीं में बिल्कुल लज्जते तौहीद है मुझको ।। येही मेरी दवा और इतनीही फहमीद है मुझको ॥ मिला दे लब से लब मेरे बोही फिर ईद है मुझको ॥ ये इलाज मेरा है और कुछ इसी में सफाई है ॥ लबे यारको लिखो मुर्दों की यही

दवाई है ।। न कुछ कीमियेमें कीमत और न ये बात अकसीर में है ।। नहीं हिक्मत में नहीं कुछ हुक्मा की तदबीरमें है ।। अगर जिलाये मुझको तो ये ताकत कहां फकीर में है ।। जीस्त हमारी उस लबे यारकी ओः तासिर में है ।।

शैर--मिले उसके दहन से जब दहन मेरा तो जी जाऊँ ।। तमाशा इश्कका तुमने न देखा हो तो दिखलाऊं ।। दहाने यारकी लज्जत अगर्चे कुछ भी मैं पाऊँ ।। तो उठे लाश मेरी कब्रसे जिंदा मैं कहलाऊँ ।। यही आशकोंकी है दवा उस इश्कने मुझे बताई है ।। लबे यारको लिखो मुर्दों की यही दवाई है ।। मिलाके मुँहसे मुँह मेरे और हँसके वोः कुछ बात करे ।। मुझ मरीजको जिलाये मौतको भी फिर मात करे ।। क्या ताकत है कजा कि जो फिर मेरे ऊपर घात करे ।। अगर सामने आये बेजा अपनी औकात करे ।

शैर--वोः उसके होठमें अमृत है पी मुर्दा भी जी जाये ।। जो कुश्ता इश्कका होवे तो उसमें जान फिर आये ।। सदा ये कुम्बैजनी जब वोः अपने मुँहसे फरमाये ।। तो उसके हुक्मसे उठ्ठ वही जांबख्श कहलाये ।। वही खुदा है मेरा औ कुछ उसीके यहां खुदाई है ।। लबे यारको लिखो मुर्दों की यही दवाई है ।। जिसके इश्कमें मरा हूँ मैं वोः चाहे तो फिर जिला सके ।। खुशी जो उसकी होवे तो जामें बस्ल भी पिलासके ।। क्या ताकत यह लाश मेरी कोई बगैर उसके हिलासके ।। उसी में कुदरत ये है कि दिलसे दिलको मिला सके ।।

शैर--बुलाओ उस मसीहाको मेरी अब जान जाती है ।।

जिलाये जल्द मुझको वोः नहीं तो शान जाती है ॥ मैं आशिक हूं उसीका इश्ककी अब जान जाती है ॥ मिलादे लब नहीं तो जान और पहेचान जाती है ॥ बनारसीने दवा आशिकोंकी यह अजब बनाई है ॥ लबे यारको लिखो मुर्दोकी यही दवाई है ॥

ख्याल मय वहेदतका जो वलियोंने पी है ।

बहेर छोटी ।

बिन पिये जहांके बीच जिऊँ मैं कैसे ॥ भरदे प्याला लबरेज साकिया मै से ॥ मैं वहेदतका मुश्ताक हूँ यक मुद्दत से ॥ वाकिफ हूँ मैं कुछ मस्तानोंकी आदत से ॥ जिस वक्त नशा शरसार हुआ शिद्दतसे ॥ बेहोश हुआ इस दुनियाँकी बिद्दतसे ॥ हरवक्त जबांसे कहा करूँ मैं ऐसे ॥ भरदे प्याला लबरेज साकिया मैसे ॥ शोलये नूर दिलमें मेरे भबके है ॥ इशरत की मय हरदम उसमें टपके है ॥ लौ लगी है और दिल उस लौमें लपके है ॥ इस नशे से अब कब आंख मेरी झपके है ॥ आती है यही आवाज हर जगह नैसे ॥ भरदे प्याला लबरेज साकिया मैसे ॥ मालूम हुआ मैं मौत कि ये दारू है ॥ हर गुलोंकी रूह है खिंची ये वोः गुलरू है ॥ रिन्दानों महफिल में यही महरू है ॥ और इससे बेहतर नहीं कोई खुशबू है ॥ तू पिलादे मुझको यार बन पडे जैसे ॥ भरदे प्याला लबरेज साकिया मैसे ॥ यक रोज सामने मेरे मुहतासिब आये ॥ बोले मय पीना कौन तुझे सिखलाये ॥ औ देख करावे मैके बोः घबराये ॥ बोला मैं येः क्या खुदा ने नहीं बनाये ॥ फिर कहने

लगे सुहतसिब भी मुझसे ऐसे ॥ भरदे प्याला लबरेज साकिया मैसे ॥ कीनो रबाब मिर दंग की तैयारी हो ॥ मीनेमें मीनेकी मीनाकारी हो ॥ गुल पास में बैठे हों और गुलजारी हो ॥ कहे बनारसी उस वक्त वोः मैं जारी हो ॥ हर वक्त राग फिर बजा करै इस लैसे ॥ भरदे प्याला लबरेज साकिया मैसे ॥

ख्याल शराब अतहूरा जो हम पीते हैं बहेर छोटी।

मैं वोह है इसे क्या पियेंगे ऐसे वैसे ॥ वोः पियेंगे जो मैं होके मिले हैं मैसे ॥ मिल गया जब उसके रंगमें रंग गुलाबी ॥ आगया नशा वहदतका मुझे शितावी ॥ है जिगर यह मेरा जला औ भुना कबाबी ॥ हुई दिलको सेरी गई वो सब बेताबी ॥ क्या जाने शेख मस्तीके हैं प्याले कैसे ॥ वो पियेंगे जो मैं होके मिले हैं मैसे ॥ यह सफेद भी और सुर्ख जाफरानी है ॥ हो रुखपे आब पीनेसे येः वोः पानी है ॥ मजहब इसका रिन्दाना लासानी है ॥ टपके है नूर चेहरे पै वोः पेशानी है ॥ जो बेताले हैं वाकिफ नहीं इस लैसे ॥ वो पियेंगे जो मैं होके मिले हैं मैसे ॥ यह फकीर इसकी लौ सबसे दूनी है ॥ मैं खानेमें जगती जिसकी धूनी है ॥ लडनेमें शूरमां है और येः खूनी है ॥ है बगैर इसके जो बस्ती सूनी है ॥ यही सदा कन्हैयाने भी बजाई नैसे ॥ वोः पियेंगे जो मैं होके मिले हैं मैसे ॥ दारुये शफा है इसीसे हम पीते हैं ॥ पीते हैं बहुत पर ऐसी कम पीते हैं ॥ रम रहे हैं उसमें हम वोः रम पीते हैं ॥ और देवीसिंह भी दमपर दम पीते हैं ॥ गाये बनारसी इसीकी ध्वनिमें लैसे ॥ वोः पियेंगे जो मैं होके मिले हैं मैसे

ख्याल शराबकेपीनेमें जो लुत्फ है वोः मुझे मिला ।

बहेर छोटी ।

वोः मजा मिला मुझको इस मै नोशीमें ।। छुट गई ये दुनियाँ आपसे बेहोशी में ।। मैंने कुछ इरादा किया न मै पीनेका ।। वोः काम जो देखा मीनेमें मीनेका ।। था नकशा उसमें खिंचा सदा जीनेका ।। औ रंगभी उसमें भरा था रंगीनेका ।। पीतेही जबां आई खुद खामोशीमें ।। छुटगई ये दुनियां आपसे बेहोशी में ।। केतेही जमा अंजाम वोः उसका पाया ।। गफलतने होशियारीका मजा दिखाया ।। जिसवक्त नशा वो मेरी आंखमें आया ।। बन्देसे खुदाने मुझको खुदा बनाया ।। आगया जमाना मुझे फरामोशी में ।। छुटगई ये दुनियाँ आपसे बेहोशी में ।। मौसम तो गुलाबीसे न कोई आला है ।। दिल इसी इश्कमें मेरा मतवाला है ।। चश्मोंने रंग अब लालीपर डाला है ।। जामें जमसे बढकर मैका प्याला है ।। ये सखुन जुबांसे कहा गर्म जोशीमें ।। छुट गई ये दुनियाँ आपसे बेहोशीमें ।। आबे हैवाँमें कहां भला यह आब है ।। दो जहांमें आला सबसे बनी शराब है ।। वेद औ पुरान कुरानकायहीजवाब है ।। आजाब न इसको कहो ये बडा सवाब है ।। पी बनासाने सनमकी आगोशीमें ।। छुटगई ये दुनियाँ आपसे बेहोशी में ।।

ख्याल खुदा के दीदार की शराब मैं पीता हूं

बहेर छोटी ।

साकिया पिला सागरे दीद उस मुलका ।। वहेदत हो

जिस्में भरा वस्ल तुझ गुलका ॥ अब मये मुहब्बत आकर मुझे पिलादे ॥ और जाम तू अपने दीद का मुझे दिला दे ॥ दिलसे दिल अपने जिगरसे जिगर मिलादे ॥ दीदार की दारू से तू मुझे जिलादे ॥ गुलहो गुलशन में मचे शोर कुल कुल का ॥ वहेदत हो जिस्में भरा वस्ल तुझ गुलका ॥ शौके शराब का भरके पैमानाला ॥ इश्ककी सुराही हाथ में जाना-नाला ॥ मय पिला मुझे उस नूर का मैं खानाला ॥ गुलशन में गुलाबी रंग तुशाहानाला ॥ मालूम हालहो नशेमें आलम कुलका ॥ वहेदत हो जिस्में भरा वस्ल तुझ गुलका ॥ मैं तुझे पिलाऊं तू मैं मुझे पिलाये ॥ जब लुत्फ इश्क का खुब दूबदूआये ॥ मैं कहूं और दे तुमी यही फर्माये ॥ वोः बात हो जिसकी बात न कोई पाये ॥ कुदरतका करावा मेरे जमा में दुलका ॥ वहेदतहो जिस्में भरा वस्ल तुझ गुलका ॥ शीशे दिल में भरदे तू मेरे अंगूरी ॥ इस लिये कि होवे दिल की दूर कदूरी ॥ वोः जलवा अपना दिखादे मुझको नूरी ॥ कहे बनारसी कर दिलकी मुरादको पूरी ॥ मैं पीके चाहकता रहे येः दिल बुलबुल का ॥ वहेदतहो जिस्में भरा वस्ल तुझ गुलका ।

ख्याल जो मेरी आंखोंसे शराब टपकती है मस्तीमें वोः मैं पीता हूँ-बहेर छोटी ।

चश्मों में भरा है रंग गुलाबी गुलका ॥ आश्कों को पियेंगे काम नहीं कुछ मुलका ॥ ये आंख मेरी वहेदतका पैमाना है ॥ अब इसीको हमने समझा मैखाना है ॥ चश्मों

से ज्यादा कोई न मस्ताना है ॥ देखो तो सई में क्या रंग शाहाना है ॥ है भरा नशा आंखों में आलम कुलका ॥ अश्कों को पियेंगे काम नहीं कुछ मुलका ॥ जब चुयेंगे आंसू मेरी चश्म गिरियां से ॥ मै समझ के पीयेंगे इन्हें जी जां से ॥ मै खोरी का नाहिं लेंगे न नाम जबां से ॥ रो रोके पियेंगे अश्क तबे विरियां से॥ हिचकियों से मेरे होगा शोर कुल कुलका ॥ अश्कों को पियेंगे० ॥ बादाम भी ये हैं नरगिस के प्याले हैं ॥ देखा हमने ये पुरे मतवाले हैं ॥ ये नैन हमारे गुलशन गुल्ला-के हैं ॥ मैके इनमें भर रहे नदी नाले हैं ॥ जब चाहे छुमक छुमदम्मेद ढुलका ॥ अश्कों को पियेंगे० ॥ उस परीका आलम आंखों में छाया है इस बादेकशी से अब दिल घबराया है ॥ मैसे ज्यादा अश्कों में मजा पाया है ॥ मजमून ये देवीसिंह ने नया गाया है ॥ है यही सखुन आशिक सादिक बुल बुल का ॥ अश्कों को पियेंगे० ॥

ख्यालशराबकामुझकोअपनेहाथसेखुदापिलाताहै

बहेर लँगडी ।

मेरा जाम हर वक्त हरघडी दमपर दम साकी भरदे ॥ मै खाने में जो कुछ अब रहा है वोः बाकी भरदे ॥ इसी का मैं प्यासा हूं मेरे सागर में कुल सागर भरदे ॥ और जहां में जहां कुछ मिले वो तू लाकर भरदे ॥ मैं तो नहीं दिल खोलके तू दिलवर भरदे ॥ प्यारे अपने मेरे प्याले में परी पैकर भरदे ॥

शैर--करूं मैं इसके तईं जिस घड़ी खाली भरदे ॥ प्यार से अपने मेरी आके तू प्याली भरदे ॥ जहां तक होवे तेरे

पास कलाली भरदे ॥ सफेद जर्द गुलाबी में भी लाली भरदे ॥ रहूं सुर्खरू तेरे रूबरू अपनी सुरताकी भरदे ॥ मैं खाने में जो कुछ अब रहा है वोः बाकी भरदे ॥ अब तो दौर आया है मेरा तू जा ये बिल्लूरी भरदे ॥ भरदे केतकीकी में और इसीमें अंगूरी भरदे ॥ शीशे दिल है साफ मेरा तू इसीमें मय नूरी भरदे ॥ कशबा सुराही भी मेरी पूरी भरदे ॥

शैर--मरीजे इश्क हूँ प्यारे मुझे दारू भरदे ॥ जिऊं मैं जिसके पिये से मुझे वह तू भरदे ॥ खिंचे हों जिस्में हर एक गुल वोः तू गुलरू भरदे ॥ रूहहो जिस्में तेरी मुझको वोः हमरू भरदे ॥ करूं धूम कुल आलममें बोः शोर ये आफाकी भरदे ॥ मय खाने में जो कुछ अब रहा है वह बाकी भरदे ॥ रंगू मैं अपना दिल मयसे तू इसीकी रङ्गीनी भरदे ॥ तलखभी भरदे तुर्श और तोफा शीरीनी भरदे ॥ लगाके दस्तरखान तू उसमें गिजा वोः नमकीनी भरदे ॥ शौक हो दिलमें मेरे तू इसी की शौकीनी भरदे ॥

शैर--मैं तुस्से कुछ नहीं मांगू शराब तू भरदे ॥ मिलाके उसमें वोः थोड़ा गुलाब तू भरदे ॥ आब जिस आबमें होवे वोः आब तू भर दे ॥ झलक हो दिलमें मेरे आफताब तू भरदे ॥ बनी रह लाली दुनियांमें अपनी असफाकी भरदे ॥ मयखानेमें जो कुछ अब रहा है वो बाकी भरदे ॥ पास न आये गैरे मेरी महफिल तू रिंदानी भरदे ॥ मस्त रहूँ मैं सौहबते यारब मस्तानी भरदे ॥ बनारसीकी जुबांमें बातें हक्क तू हक्कानी भरदे ॥ चश्म में उसकी नूर तू अपना नूरानी भरदे ॥

शैर--मय वहेदत जो तेरे पास है मुझको भरदे ॥ जो मांगूं एक मैं प्याला तो मुझे दो भरदे ॥ फिर तीसरा जो मैं मांगूं वो खुशी हो भरदे ॥ न देना तुझे गैरको प्यारे ये मुझे तो भरदे ॥ जो कुछ मेरा निकले वो आज तू सबका बेबाकी भरदे ॥ मयखाने में० ॥

ख्याल तौहीद मयका आफताब मुझे पिलाता है--बहेर खडी ।

जिधर को देखूँ उधर रोशनी आफताब कर दमाम है ॥ पिऊं न मय मैं क्योंकर जिन्दा रहूँ मेरा यह कलाम है ॥ चश्म नहीं है हमें खुदाने आप गुलाबी जाम दिये ॥ मये दीदके प्याले भर भर मुझे बरसरे आम दिये ॥ चली वह बादे सबा इसकदर हाथ हमारे थाम दिये ॥ तोभी परी पैकर ने मेरे मुंह लगा वो आठों याम दिये ॥ कहे जो इसको हराम उसका खाना पीना हराम है ॥ पिऊं न मय में० ॥ एक तरफ आतिश भडके और एक तरफ बारिस आब है ॥ मेरे दिल के मय खानेमें दोनों तरह का हिसाब है ॥ जिगरमें शोला उठे और चश्मोंसे टपके शराब है ॥ जुबां यही कहती है मेरी लज्जत उसकी लाजवाब है ॥ कुल जहान में सुना हो तुमने मस्ताना मेरा नाम है ॥ पिऊं न मय में०॥ दिल में गौर कर देखा तो फिर दौर हमारा आया है ॥ आज हमें साकी ने दुबारा सागर आप पिलाया है ॥ देख मेरी बदमस्ती को मोहतासि बन यह फर्माया है ॥ यह जोशे वहशत कहाँ से तेरी नजरों बीच समाया है॥ कहा ये मैंने आँख हमारी मय

वहेदतका सुदाम है ॥ पिऊं न मय में ०॥ सुना सखुन मोहत सिबने यह तब उसके दिलमें होश हुआ ॥ वो तो मने करता था मुझे या आपी वोः मयनोश हुआ ॥ चढा नशा जब इश्क का उसको जहांसे वोः बेहोश हुआ ॥ कहा पिऊंगा मैं हरदम इतना कहकर खामोश हुआ ॥ बनारसी कहे हमें तो इस दारू का पीना सुदाम है ॥ पिऊं न मय में० ॥

मैं आशक हूं रंजोअलम का गर ये मेरे पास न हो। मुझमरीज को तो फिर यकदम् जीने की आस न हो। बेचैनी से उल्फत है बेकली से याराना अपना। हिज्र है अपना दोस्त औ वतन् है बीराना अपना। आह की नकदी पासमें है खानाहै गम खाना अपना। जीना यही है किसीके ऊपर जीजाना अपना।

शैर-फुरकते यार वह क्या क्या मजे दिखाती है।
बेकरारीही मेरे दिलको बहुत भाती है ॥
वस्ल होता है जो वो बात चली जाती है।
इन्तजारीसे यह तबिअत नहीं घबराती है ॥

रंगजर्द नहीं हो अपना औ चेहरा मेरा उदास न हो। मुझमरीजको फिर यकदम जीनेकी आस न हो ॥ जो आशक सादिकहैं उनकी जीस्तजान को खोना है। यही खुशी है जो उस दिलबरकी यादमें रोना है। खाकके सोने से बत्तर पन्ना औ चांदी सोना है ॥ वजूसे बहतर हमें अश्कों से मुंह का धोना है ॥

शैर-टपक के आंसू जो रुखसार पर ढलकते हैं।
तो मेरी आंखमें जौहर हरएक चमकते हैं ॥
ये मस्त दोनों हैं और दोजहांको तकते हैं।

दीहोनाछीदके हैं अब ये कब झपकते हैं ॥

जोरजुल्म और जफामें अपना दुरुस्त होश हवास न हो। मुझ मरीज को तो फिर यकदम जीने की आस न हो॥ प्यास हमारी बुझती है इस खूने जिगर के पीने से। वाकिफ हुआ हूं मैं अपनी चाहके जरा करीने से। काम नहीं काशी से मुझे नहीं मक्के और मदीने से। और न आरजु हमें मरने की न मतलब जीने से॥

शैर-आतिशे इश्कसे जलके जिगर तर होता है।
जेरसाये से शवनम के ये जबर होता है॥
औ बेखबरीसे दिल हर्गिज न खबर होता है।
नफा है इश्क से येही जो जरर होता है॥

गर्चे कत्ल नहीं होवें हमतो काम इश्क का रास न हो। मुझ मरीज को तो फिर यक दम जीने की आस न हो॥ दर्द हमारा दिल्वर है हर वक्त इसी से यारी है॥ बे दर्दों से भी अपनी कुछ नहीं गिल्ले गुजारी है। सूली पर मंसूर ने वो अनल्हक सदा पुकारी है॥ जान गई तो बला से नाम तो उसका जारी है॥

शैर-इश्कबाजी में अगर जानकी बाजी होजाय।
तो तबीयत यह मेरी खूबसी राजी होजाय॥
चाह हमपर हो जफा या दगाबाजी होजाय।
रजामें राजी हैं उसके जो वह राजी होजाय॥

बनारसी कह अगर्चे मेरा मुरशद देवीदास न हो। मुझ मरीजको तो फिर यकदम जीनेकी आस न हो॥ कहा ये मु-

इस रंजने गर्चे आशक मेरे पास न हो ॥ तो दुनियामें आश-को आशककी फिर रास न हो॥ इश्क है मेरामकां औ में रहता हूं उसीके खाने में । वह नहीं आशक कि जिसके दर्द न होवें शानेमें । तारसें क्या है लुत्फ मजा मिलजाय जो रहो निशाने में। नस्तीमें नहीं गुजर आशक हैं मस्त वीराने में ॥ सूख गया मजनू औ वह ताकत बनी रही मस्ताने में ॥ अबतक जिसका नाम रोशन है सुनो जमाने में ॥

शैर–है कहां तकलीफ व तलवों में जो चुभते हैं खार ।
हंस पडा मंसूर तो शरमा गई उस जांपै दार ॥
रंज ये कहता है आशक वह करै जो जां निसार ।
हर कदमपर तीर हो पर दिलमें हो वह जिक्रयार ॥

अपने जिस्मका मयखाना मये तौहीद वह मुझे पिलाता है–बहेर खडी ।

आतिश इश्ककी भडक रही है इस दिलके मयखाने में ॥ मये मुहब्बत पिला दे साकी उल्फतके पैमानेमें ॥ यक-ताईका आलम हो और वेहदतका हो रंग भरा ॥ तुझ गुल की हो खशबू जिस्में वोः शराब तू पिला जरा ॥ गमकी होवे मिजा साथ में वह खासा हो पास धरा ॥ और मार्फतका हो मीना करामातका काम करा ॥ आफ्ताबकी होवे रोशनी मेरे दिल दीवानेमें ॥ मये मोहब्बत पिलादे साकी उल्फतके पैमाने में ॥ मस्तीका हो सुरूर हरदम बादे सबामी चलती हो ॥ और गुलाबी मौसम हो हर गुल से महेक निकलती हो ॥

आरबाब वो काफूरी शमां भी बलती हो ॥ जिस को देखके हर मोहतसि सबकी छाती जलती हो ॥ उठे शोलये नूर पहेलुमें मेरे शाने में ॥ मये मुहब्बत पिलादे साकी उल्फतके पैमाने में ॥ पास हमारे दिलवर हो और सदा ये कुलकुल हो ॥ जोशे दिल में हो कहकहा भी हो शोरो गुल हो ॥ शीशा सागर सुराहीहो और गुलि-गुंचे गुलहो ॥ हाथ में हो दिलबर का हाथ हर बातमें वोः जिकरे मुल हो ॥ कबाबकी लज्जत हुई हासिल अपना जिगर जलाने में ॥ मये मोहब्बत पिला दे साकी उल्फतके पैमानेमें ॥ दीदार तेरा दारू शफा है जिसे मिला वोः मस्त हुआ ॥ बद-मस्तीमें बैठ बैठ कर बनारसी अलमस्त हुआ ॥ चांदसा चेहरा देखतेही तेरा वोः सूरज अस्त हुआ ॥ दस्तगीर वोः हुआ कि जिसका तेरे दस्तमें दस्त हुआ ॥ कहा ख्याल तौहिद मजा है इश्क मार्फत गानेमें ॥ मये मोहब्बत पिला दे साकी उल्फतके पैमानेमें ॥

मुझेकुलजहानमेंअपनेसिवाऔरनहींदिखाईदेताहै

बहेर लँगडी ।

कहो किसे मैं देखुं देखा आलममें कुल हमीं तो हैं ॥ कहीं पे गुल हैं कहीं पर आशिके बुलबुल हमीं तो हैं ॥ कहीं अनलहक बने कहीं मंसूर कहीं परदार हैं हम ॥ कहीं पे सरमद कहीं सरलेने को तलवार हैं हम ॥ कहीं शम्स तबरेज कहीं खुशेंद उसीके यार हैं हम । कहीं एक हैं पर देखो बिना शुमार हैं हम ॥

शेर-कहीं लैला बने हम और कहीं मजनूं की सूरत हैं कहीं फरहाद बन बैठे कहीं शीरीं की सूरत हैं ॥ कहीं मस्जिद कहीं मंदिर कहीं काबा कहीं किबला हैं ॥ कहीं हम हैं नजूमी और कहीं ज्योतिष मुहूरत हैं ॥ कहीं बने खामोश किसी जांपर शोरो गुल हमीं तो हैं ॥ कहीं पे गुल हैं कहीं पर आशिक बुलबुल हमीं तो हैं ॥ किसी जगह पर शायर कहीं बेशायर में बोले हमीं तो हैं ॥ कहीं पे स्याने कहीं पर भोले भाले हमीं तो हैं ॥ कहीं पे आतिश और कहीं पर पड़े फफोले हमीं तो हैं ॥ कहीं पे रत्ती कहीं पर माशे तोले हमीं तो हैं ॥

शेर-कहीं हम हैं अख्तर कहीं पर अब नैसां हैं ॥ कहीं हिन्दू हो बुत पूजें कहीं पर मुसल्मा हैं ॥ गरज जितनेही दीन हैं कुल जहांमें अपनेही समझो ॥ मकां हैं लामकां हैं हम तो जाहर भी और पिनहाँ हैं ॥ कहीं बने मयखोर किसी जांपर साकी गुल हमीं तो हैं ॥ कहीं पे गुल कहीं पर आशिके बुलबुल हमीं तो हैं ॥ कहीं पे बन्दे बने कहीं पर खुदा खुदाका नूर हैं हम ॥ कहीं पे मूसा कहीं पर जलवा और कहीं कोहनूर हैं हम ॥ कहीं पे किसीके पास रहे और कहीं किसीसे दूर हैं हम ॥ कहीं मलायक कहीं परिस्तान और हूर हैं हम ॥

शेर-कहीं तन पर रमाये खाक हम बन बनमें फिरते हैं ॥ कहीं सुमरण हैं हम और हम कहीं सुमरण में फिरते हैं ॥ तुम अपने दिलमें मुझको गौर कर देखो तो मैं क्या

॥ हमीं दम हैं हमीं हम दम हमीं हर मनमें फिरते हैं ॥ कहीं बने बेशानी कहीं उस रुख पर काकुल हमीं तो हैं ॥ कहीं पे गुल हैं कहीं पर आशिके बुलबुल हमीं तो हैं ॥ कहीं बादशाह बने कहीं पर आकर हुए फकीर हैं हम ॥ मुरीदमी हैं किसी जा और कहीं पीर हैं हम ॥ कहीं निशाना बने कहीं पर कमां कमां के तीर हैं हम ॥ कहीं शमा हैं कहीं पर परवाना गुलगीर हैं हम ॥

शैर-जिधर देखो उधर हमको हमीं हर जा पे रहते ॥कहीं दरिया हैं हम औ हम कहीं दरिया में बहते हैं ॥ तबक चौदाके ऊपर यक मकां है लामकां अपना ॥ वहीं कायम हैं और हम यह सखुन इस जापे कहते हैं ॥ बनारसी कहे मुझे अगर देखो तुम बिल्कुल हमीं तो हैं ॥ कहीं पे गुल हैं कहीं पर आशके बुलबुल हमीं तो हैं ॥

जो सच्चा आशिक है उसका मकां लामकां है।

बहेर छोटी

लामकां आशकोंका नहीं कहीं मकां है ॥ जहाँ खुदा है मस्तोंका दिल सदा वहां है ॥ मालूम है मुझको जोके चीज निहां है ॥ वाकिफ हूं और कहता हूँ वोः यार कहां है ॥ हूं जईफ पर दिल मेरा बडा जवां है ॥ नाताकत हूँ पर मुझमें बडी तवां है ॥ जहां फना है मेरे लेखे वोही जहाँ है ॥ जहाँ खुदा है मस्तोंका दिल सदा वहां है ॥ जहां खामोशी है वहीं पे शीरो फिगां है ॥ जहां सर्द है नारा वहीं आतिश सोजाँ है ॥ जहां हिज्र है उल्फतकाभी वहीं सामा है ॥ जहां

लहर बहर है वहीं बडा तूफां है ॥ क्या कहूं मैं कहती मेरी यही जुबां है ॥ जहां खुदा है मस्तोंका दिल सदा वहां है ॥ हूं लिबास पहले पर यह तने उरियां है ॥ बस्तीको समझता हूँ मै ये वीरां है ॥ जहाँ मुसल्मीन हैं वहीं पे हिन्दुस्तां है ॥ मस्जिदमें मेरे उस बुतका बना निशां है ॥ आशिककी आह है यही तो एक अजां है ॥ जहां खुदा है मस्तोंका दिल सदा वहां है ॥ जिन्दा है वही जो जानसे भी हेजां है ॥ करता है सैर वोः इश्कमें जो हैरां है ॥ नादानको भी कहता हूँ मैं वो इंसां है ॥ येः अक्ल है मेरी और यह फहम कहाँ है ॥ कहे बनारसी हर मिसरा मेरी कुरां है ॥ जहां खुदा है मस्तोंका दिल सदा वहां है ॥

सिफत खुदाके फक्त चेहरे की बहेर शिकस्ता ।

वोः नूर रोशन कमरसे बेहतर तबक तबक पर खिला उजाला ॥ क्या तावो ताकत गर उसको देखे वोः मेरा दिलवर है सप्पेवाला ॥ वो जुल्फ उसकी अगचें देखे तो पेंच खाये चमनसे सम्बुल ॥ हरेक बलमें उसके छल बल वोः दामे उल्फत है उसकी काकुल ॥ वो गेसू उसके तो मुश्के ची हैं गोया गुलिस्तां में सोसने गुल ॥ या हैं वोः अबरे सिया फलक पर या हैं आयते कुराने बिल्कुल ॥ फँसा है उसमें यह तायरे दिल अजीब फंदा है मुझपे डाला ॥ क्या तावो ताकत गर उसको देखे वोः मेरा दिलबर है सप्पे वाला ॥ है नौजवानी में वोः पेशानी और उसका माथा मेहरसे रोशन ॥ वोः चीने उसकी किरन हैं सुबकी चमक दमकसे कमरसे रोशन ॥ और वोः सफाई हुस्न खुदाई

हरेक जिन और बशर से रोशन ॥ और वोः पसीना गोया नगीना हरेक आबे गौहरसे रोशन ॥ सुना है उसकी सिफत ये जिसने झुकाके माथा जमीं पै डाला ॥ क्या ताबो ताकत गर उसको देखे वोः मेरा दिलबर है सप्पेवाला ॥ वोः अबरू दोनों झुके हैं उसके गोया कमां यकता है खिंचीसी ॥ और तीरे मिजगां चढे हैं जिसपर नजर ये किसपर है अब कहेरकी ॥ अगर खफा होकर उस सनम ने जरा भी अपनी वोः भौं सिकोड़ी ॥ तो गिर पड़े लाखों सर जमीं पर लगी न यक पल भी उसमें देरी ॥ या हैं वोः तेगे दुदम चमकते या खंजरे बुरां है निकाला ॥ क्या तावो ताकत गर उसको देखे वोः मेरा दिलवर है सप्पेवाला ॥ वोः चश्म आहूं अगचें देखे तो आंख हरगिज न हो मुकाबिल ॥ औसर झुकाकर खडा हो नर्गिस उसी कि आंखों पै होके माइल ॥ वोः खूनी नैना और टेढी चितवन पडे जिधर को तो क्या हो हांसिल ॥ कोई हो मुर्दा कोई तडफता कोई सिसिक्ता और कोई बिस्मिल ॥ ओ मस्त दोनों पिये हुये मय मेरे नशे में लिये हैं प्याला ॥ क्या तावो ताकत० ॥ वो बीनी उसकी अलिफ की सूरत जो उसको देखे कहे वोः अल्ला ॥ फडक वोः नथुनों की इस कदर है कि दिल तडफता है मेरा बल्ला ॥ लुभाये शीरी में है वोः लज्जत के ओठ चाटे हरेक शैदा ॥ वो बातें उसकी हैं भोली भाली न ऐसी बोली कहीं हो पैदा ॥ सुने अगरचे जो गोश करके औ उसके बातों की फेरमाला ॥ क्या ताबो ताकत० ॥ कभी अगचें वोः हँसके बोले तो चमकें उस गुलके ऐसे दंदां ॥ जिगर गौहर

का छिदे जो देखे औ दांत पीसे लाले बदकशां ॥ ये सिफत सुनते खून सूखा बिका बेकदर जहां में जमां ॥ औ वर्क ऐसी गिरी तडपकर कि होश उसका हुआ परेशां ॥ बयां क्या करूं दहनका उसके हुआ तंग दिल न बोला चाला ॥ क्या तावो ताकत० ॥ ये फकत चेहरे की यह सिफत है जो अक्ल अपनी में कुछ था आया ॥ बयां वोः मैंने किया जुबांसे पर भेद उसका जरा न पाया ॥ कोई किताबें बनाके थक गये किसीने सीखा किसीने गाया ॥ हजारों मुल्ला करोड़ों स्याने कोई इमतहां न उसका लाया ॥ फजल उसीका हुआ तो देखा बनारसी ने वोः भारी ताला ॥ क्या तावो ताकत गर उसको देखे वोः मेरा दिलवर है सप्पेवाला ॥

ख्याल उलटा मतलब सीधा मुश्किल-बहेर लँगडी।

बुतांसे मैंने कुरान सीखा काबेमें पोथियोंकी बात ॥ दीनसे मैं हुआ बेदीन बना फिर खुदाकी जात ॥ जब मुस्से आ पडी लडाई भाग गये तो जीता जंग ॥ जख्म जिगरके हुये आराम लगे जब तीरो तुफंग ॥ बेहोशी हुई दूर लगा मय पीने मयखोरोंके संग ॥ अजब इश्कका रास्ता उलटा और सीधा है ढंग ॥ जोरू खसम मरगये तो शादी हुई खुशीसे चढी बरात ॥ दीन से जब मैं बना बेदीन हुआ फिर खुदा की जात ॥ गदा हुआ तो भीख न मांगी लुटाया सबी खजाने को ॥ बादशाह जो बना मुहताज रहा हरदानेको ॥ जहांको जिसने तर्क किया तो पाया असल ठेकानेको ॥ जीते जी जो मरा वह जीता सबी जमाने को ॥ मिली ऐश अशरत मुझको जबसे अपनी खोई औ-

फात ॥ दीन से जब मैं० ॥ मस्जिद में नाकूस बजाऊं मंदिर में देता हूं अजां ॥ बुतखानेमें करूं सिजदा तो हो दंडवत वहां ॥ जिसकी कुछ सूरत ही नहीं देखा तो वही है नूरे जहां ॥ इसके मायने कहूं किससे यह तो है राजे नेहां ॥ हुआ मुझे आराम उठाली सरपर जबसे कुल आफात ॥ दीन से जब मैं० ॥ सर को अपने बेचके उस आफते इश्कको मोल लिया ॥ सौदाई मैं बना तो वोः सौदा अनमोल लिया ॥ देवीसिंह कहे बनारसी ने भेद इश्कका खोल लिया ॥ यक राइ से कोह दर कोह को बिल्कुल तोल लिया ॥ हुये जमाने से जो जिज्जतों की बाजी शतरंज की मात ॥ दीन से जब मैं० ॥

इश्क जो है सो दुःखका घर है परंतु इस दुःखमें सुख वडा है-बहेर लँगडी ।

इश्क है खानमें रंजपर इस खान ये रंजमें राहत है ॥ लुत्फ उसीको हो हासिल जिसे इश्क की चाहत है ॥ इश्क में जी जाना मैंने समझा है यही जी जाना है ॥ जाना जानाके दर पर जाना बेच कर जाना है ॥ उल्फतमें रुसवा होना बस यही आबरू पाना है ॥ नादांको दिल दिया जिसे जिसने वोः आशक के दाना है ॥

शेर—फँसे जो इश्कके फंदेमें वो दुनियांसे कुल छूटे ॥ मजे लूटे उन्होंने जिनके सब घर दर गये लूटे ॥ हमें वो खार देते हैं जो गुलशन में हैं गुलबूटे ॥ खटकते हैं मेरे दिलपर वो कांटे लगते जो टूटे ॥ इश्कके बीमारों की रोशन आलम बीच शबायत है ॥

लुत्फ उसीको हो हासिल जिसे इश्क की चाहत है ॥ जिगर जलाना आशकके हकमें यह बड़ी तरावट है ॥ आतशे गमसे अब अपनी आठों पहर लगावट है ॥ तनकी उरियानीको हम समझे ये खूब सजावट है ॥ इश्क में बिगडे जो आशक उन्हीं की बनी बनावट है ॥

शैर--हुआ जो इश्कमें मुफलिस वही जरदार होता है ॥ कटाये सर जो उल्फत में वही सरदार होता है ॥ जो दिलको छीनले दिलवर वही दिलदार होता है ॥ और आंखें बंदकर देखे उसे दीदार होता है ॥ जोराबर है वही इश्कमें जो कि हुआ नकाहत है ॥ लुत्फ उसीको हो हांसिल जिसे इश्ककी चा-हत है ॥ कैद जहांसे छूटे वही जो दाम मुहब्बतमें फंसजाय ॥ निकले दोजखसे वोः जो इश्ककी आतिशमें धंसजाय ॥ किसी के बशमें कभी न हो गर वो दिलवर दिलमें बस जाय ॥ कर उसीसे रसाई कभी न जिस गुलका रस जाय ॥

शैर--मुहब्बत में जो दिल दागे वही बेदाग होता है ॥ नफा होता है उसको जोके जर उल्फतमें खोता है ॥ वो हंसता है सदा जो उस सनमके गम में रोता है । मिलाये तनको मिट्टी में वो अपने मनको धोता है ॥ मजा इश्कका यही कभी राहत है कभी कराहत है ॥ लुत्फ उसीको हो हांसिल जिसे इश्क की चाहत है ॥ गमखाना आशकके हकमें ये न्यामत से बेहतर है ॥ हरयक मकां हैं उसीके जिसका कहीं न घर दर है ॥ उसे खौफ नहीं किसीका है जिसको उस दिलवर का डर है ॥ अपने आपको जो पहचाने वह अल्ला अकबर है ॥

शैर--पढे नहीं इल्म का दफ़तर अलिफ़ बे ते न हम सीखे न तख्ती हाथ से पकड़ी न कुछ छूना कलम सीखे ॥ फ़कत इस इश्कके मकतबमें हम नामे सनम सीखे ॥ सिवा उल्फ़त के और हम कुछ नहीं अपनी कसम सीखे ॥ देवीसिंह कहें बनारसी तेरी जबांमें बडी फ़साहत है ॥ लुत्फ़ उसीको हो हासिल जिसे इश्क की चाहत है ॥

मैं यह कहता हूं कि तुम आपको पहचानो तो तुम्हीं सब कुछ हो-बहेर लँगड़ी ।

मैंने ये पूछाके बताओ मियांजी आप कहांके हो ॥ किस बस्तीके और किस गाँव के कौन मकांके हो ॥ नाम आपका क्या है कौनसे दीन और किस ईमांके हो ॥ जरा तो बोलो आप दीवाने किस दीवांके हो ॥ हिन्दू हो या मुसलमीन देहली या तुरकिस्तांके हो ॥ पण्डित हो या मौलवी या तुम हाफिज कुरांके हो ॥ चीनके हो या महाचीनके या ईरां तूरांके हो ॥ किस बस्तीके और किस गाँव के कौन मकां के हो ॥ इस दुनियाँमें आये कहांसे जमीं के या आसमां के हो ॥ चश्मके-घायल या मायल तुम जुल्फ़ पेचांके हो ॥ किसपर दिल है फ़िदा तुम आशक हूर के या गिलमां के हो ॥ सच्च तो कह दो के जख्मी तुम तीरे मिजगां के हो ॥ आपने कुछ नहिं किया बयां तुम जुबां के या बे जुबां के हो ॥ किस बस्तीके और किस गांवके कौन मकांके हो ॥ फ़िक्र आपको क्या है बयां कुछ करो या तुम बे बयांके हो ॥ किस गुलसनके हो

गुल या खार कोई बीरांके हो ॥ सरसे पैर तक देखा तो तुम अजब सेरा सामांके हो ॥ शक्लभी आदम की हो फरजंद कोई इन्साँके हो ॥ ये मैं पूछता हूं तुम से कुछ वाकिफ राजेनिहांके हो ॥ किस बस्तीके और किस गाँवके कौन मकांके हो ॥ खुदा है तुमसे तिसपर भी तुम वाकिफ नहीं दो जहाँके हो ॥ मिलो जो उससे तो फिर तुम मालिक कौनो मकांके हो ॥ ऐसी करनी मत करना जो यहांके हो ना वहां के हो ॥ देवीसिंहका कहा मानो तो नामो शिशां के हो ॥ जवाब इसका दो जो लडनेवाले उस मैदाँके हो ॥ बस्तीके और किस गाँवके कौन मकांके हो ॥

जिसके दिलपर हर वक्त खुदाकी याद रहती है उसका रास्ता दुनियाँसे अलग है-बहर छोटी ।

जिसके दिल पर दिलवरका नाम बसता है ॥ उन मस्तोंका देखो उलटा रस्ता है ॥ सर्दीमें आशक पीते हैं सरदाई ॥ गर्मीमें शंखिया खाय रहे गर्माई ॥ बारिशमें सूखे धूप में हो हरियाई ॥ ऐसे मस्तोंसे सभी बात बनिआई ॥ वो दाग को समझें दिलपर गुलदस्ता है ॥ उन मस्तोंका देखो उलटा रस्ता है ॥ वो दिनको सोवें सारी रात भर जागें ॥ शूरों से लड़ें गिर्दोको देखकर भागें ॥ नहिं मिले तो मांगे भीख मिले तो त्यागे ॥ ऐसे शाहोंसे हरेक बादशाह मांगे ॥ अनमोल है सौदा वो भी उन्हें सस्ता है ॥ उन मस्तोंका देखो उलटा रास्ता है ॥ मंदिर को तोडकर मस्जिद को चुनवावें ॥ मस्जिद को

मयखाना बनवावें ॥ खेतको सुखा ऊषर में अन्न ॥ आशिक सादिक जो चाहे कर दिखलावें ॥ ऐसे मस्तोंको कोई नहीं हँसता है ॥ उन मस्तोंका ० ॥ जब पेट भरें तब खानेको मगवाते ॥ और भूख लगे तो कुछ भोजन नहिं खाते ॥ मूरखसे सीखें पण्डितको समझाते ॥ कहे बनारसी हम नई नई बातें गाते ॥ इस कदरसे जो कोई अपना दिल कस्ता है ॥ उन मस्तोंका ० ॥

जो खुदाका आशिक हो और उसपर खुदाभी आशिक हो तो बंदा खुदा एक है बहेर छोटी।

आशिक पर आशिक जब वो सनम होता है ॥ दोनों का रुतबा एक रकम होता है ॥ वोः नूर है तो आशिक भी जलवेगर है ॥ वोः दीद है तो दिल अपना उसकी नजर है ॥ लामकां है वोः तो मेरा कहीं न घर है ॥ वोः दिल है तो ये दिल उसका दिलबर है ॥ जिस वक्त कयामतमें वोः बहम होता है ॥ दोनोंका रुतबा ० ॥ वो गुलशन है तो आशिक उसका गुल है ॥ वोः हरजा है तो आशिक भी बिलकुल है ॥ वोः सुरूरहै तो आशिक वहदतकी मुल है ॥ वोः धूम है तो आशिक भी शोरो गुल है ॥ जिस वक्त यह दम उसको हम दम होता है ॥ दोनोंका रुतबा ० ॥ वो जहां है तो आशिक भी जहां तहां है ॥ वो कलमा है तो आशिक भी कुरआं है ॥ जहां जिक्र है आशिक का भी वहीं बयां है ॥ वो निहां है तो आशिक हरजां पिनहां है ॥ आशिक का

दम जब उसमें दम होता है ॥ दोनों का रुतबा ० ॥ वो बे ख्वाहिश है तो आशिक बे परवा है ॥ वोः मिला है तो कुछ आशिक नहीं जुदा है ॥ वोः हुई नहीं तो आशिक भी यकता है ॥ ये देवीसिंह का सखुन बडा सच्चा है ॥ कहे बनारसी जब उसका करम होता है ॥ दोनो का रुतबा० ॥

कलियुगकी स्तुति जो जैसा करै वह वैसा पावै ।

बहेर छोटी ।

इस कलियुग में कल देगा कल पावेगा । कल पावेगा वोः क्योंकर कल पावेगा ।। नरदेही पाकर ध्यान साईका धरना ।। दो दिनका जीना देख अंत में मरना ॥ तज बुरे काम भवसागर पार उतरना ।। दुःख देगा तुझको भी होगा दुःख भरना नेकों को मजा नेकी का नेकी करना ॥ मत करे बदी की बात खुदी से डरना ।। करनी का फल संसार सकल पावेगा ।। कल पावेगा वोः० ॥

जो कुआं किसी के खातर खोदे भाई ॥ हो उसके लिये तैय्यार फलकसे खाई ॥ गुल न कर पराया चिराग अरे सौदाई॥ रही उसकी रोशनी जिसने उधर लौ लाई ॥ कर साधु संतकी टहेल तो मिले भलाई ॥ की जिसने खिदमत उसने अजमत पाई ॥ जो सेवा करेगा मेवा तू कल पावेगा ॥ कल पावेगा वोः क्यों ० ॥

क्यों गफलतमें रहे भूल उसे पहिचानों ॥ मत बुरा किसी का करना दिलमें ठानो ॥ मैं कहूं बात नसीहत की भौंहें क्यों तानों ॥ अब करो भला आगे खाक मत छानो ॥ यह कलियुग

नहीं इसको कर युग कर जानो ॥ यहां मिले हाथका हाथ सत्यकर मानो ॥ जो आज करेगा वैसा कल पावैगा ॥ कल पावेगा वोः क्यों० ॥

जो करै किसी की मुश्किल को आसान ॥ उनकी मुश्किल आसान करै भगवान ॥ नुक्सान पराया करके करैं गुमान ॥ उनका नहीं रहता जगमें नाम निशान ॥ जो मिला चाहो साहबसे छोड़ अभिमान ॥ पांचों इन्द्री वश करके लगावो ध्यान ॥ उस मारग की जब तू अटकल पावेगा ॥ कल पावेगा वो क्यों० ॥

तप कलियुगका है बड़ा यह राज कमाया ॥ किया ऐसा अदल ज़ुलमी नहीं रहने पाया ॥ वोः तुर्त मिटा है जिसने जिसे सताया ॥ मनशा फलती है जबते कलियुग आया ॥ है श्रीकृष्ण की देवीसिंह पर साया ॥ यह कलियुग नहीं करजुग का ख्याल है गाया ॥ इन नुकतोंको क्या वे अक्कल पावेगा ॥ कल पावेगा वोः क्यों० ॥

हरघडीपरमेश्वरकोभजनाइसीमेंभलाहै-बहेरछोटी

दम पर दम हर भज नहीं भरोसा दमका ॥ एक दममें निकल जावेगा दम आदम का ॥ है जब तक दम में दम भज हर हर तू ॥ दम आवै ना आवै इसकी आस मत कर तू ॥ एक नाम प्रभू का जप हिरदे में धर तू ॥ नर इसी नाम से तरजा भवसागर तू ॥ बल करता थोडे जीने के खातर तू ॥ वोः है साहब जल्लाद जरा तो डर तू ॥ वहां अदल बडा है हिसाव हो दम दमका ॥ एक दममें निकल

जायगा० ॥ जीनेका फल यह राम नाम जपना है ॥ जब घेरे काल तो फिर कहां छिपना है ॥ इस नर को एक दिन आतिश में तपना है ॥ दम जाय निकल तन मिट्टी में खपना है ॥ एक दमका बसेरा दुनियां रैन सपना है ॥ टुक देखो आंखें खोल कौन अपना है ॥ सब झूंठी माया मोह कुटुम्ब इस दमका ॥ एक दममें निकल जायगा० ॥ जो आया जग में अमर नहीं रहने का ॥ नरबदा घागरा अटक नहीं बहने का ॥ कर लाख जतन तू माया के गहने का ॥ दर मिले वही जो है तेरे लहने का ॥ हरवक्त कभी नहीं जमका दंड सहने का ॥ कर नेकी कोई बुरा नहीं कहने का ॥ इस जगमें नाता हैगा बोलते दम का ॥ एक दममें निकल जायेगा० ॥ एक दममें दम आदम का निकल जावेगा ॥ फिर पीछे हाथ मलमल के पछतावेगा ॥ जब श्रीकृष्णकी शरणागत आवेगा ॥ तो जीवन मुक्ति इस जगमें पावेगा ॥ कहे देबीसिंह जो हरके गुण गावेगा ॥ वो प्राणी जग बंधन से छूट जावेगा ॥ कुछ कयाम जग में नहीं सुनो इस दमका ॥ एक दममें निकल जावेगा० ॥

इस जगत्में सबसे बुरामाँगना है समझके मांगे तो भला-बहेर छोटी ॥

इस जगमें जबलग अपनी पार बसावे ॥ मत कोई किसी के द्वार मांगने जावे ॥ इस जगमें मांगना बड़ी पापकी पोटे ॥ मांगन गये बलिके द्वार राम भये छोटे ॥ सुना और मांगना दुबले होगये मोटे ॥ मांगन की बराबर और कर्म

। खोटे ॥ इस नरको मांगना जो चाहे कहलाये ॥ मत ० ॥ मरना बेहतर यह बात भूल नाहि कीजे ॥ सब जाय बडप्पन बोझ बकर सुन लीजे ॥ जप योग तपस्या पुनि दम सब छीजे ॥ जब नरने मुखसे कहा हमैं कुछ दीजे ॥ पूरा मौतका वख्त आंख शरमाये ॥ मत कोई० ॥ जब गजेंवंदने अपनी शर्म गवांई ॥ काला मुंह करके गया मांगने भाई ॥ जो होते उसके उसने राह बताई ॥ उसकी तो होती इस जगमें रुसवाई ॥ फिटमारा होके चला मनमें पछताये ॥ मत कोई० ॥ जब वक्त पडे तो जांय मांगने सूरे ॥ हो जांय निवारें बडे दिलके मगरूरे ॥ जो हैंगे आशना धनी बातके पूरे ॥ अपनेसे ज्यादा समझैं उसकी जरूरें ॥ पर स्वारथको कोई बिरला शीश कटाये ॥ मत कोई० ॥ दुनियाँमें देना मर्दोंका साखा है ॥ देकर प्राणी ने अन्त प्रेम चाखा है ॥ है बुरा माँगना वेदोंने भाषा है ॥ मैं माँगू हरसे मेरी यह अभिलाषा है ॥ तू मांग देखकर बिना भाग नहीं पाये ॥ मत कोई० ॥ मेरी अर्ज सुनों तुम श्रीकृष्ण शुभरास ॥ मत भेजो माँगने मुझे किसीके पास ॥ अपने घरसे मेरी पूरी कर दे आस ॥ यह कहे देवीसिंह मैं हूं तेरा दास ॥ सालगकी मीठी बानी सभी मन भाये ॥ मत कोई० ॥

शरीरमें काशी आदि लेके सब तीर्थ हैं ।

बहेर बराबरकी-राग सोरठ ।

ये कंचन काया काशी ॥ यामें बोलत शिव अविनाशी ॥ जहां

ज्ञान गंगाकी धारा ॥ जाको अंत न वारा पारा ॥ यामें गोविंद गुरू हमारा ॥ धर मनमें ध्यान विचारा ॥

तोडा-नाम नांव तैरें गंगामें केवट कृष्णमुरार ॥ दंडडांड खेवें नौका पर होजाय बेडा पार ॥ मन तो है सुन मरण करणिका मनमें करो बिचार ॥ इस तनुमें हैं तारकेश्वर तारो होय उद्धार ॥

दोहा-जस जल सांई घाटपर, शिवका जगें मशान ॥ आनंद की अग्नी बले, हैं ज्योति रूप भगवान ॥ सुन मंत्र मुक्त होय खासी ॥ यामें बोलत शिव अविनासी ॥ है पूजा प्रयाग अक्षय वट ॥ कर पुण्य पाप जावें कट ॥ तू सुमती संकटा को रट ॥ कटे जन्म मरण के संकट ॥

तोडा-इस तनमें है भाव सोई भैरवका थाना ॥ दया सोई है दुर्गा मैंने मनमें पहिचाना ॥ अगम निगम है अन्नपूरणा सब जगने जाना ॥ धर्म सोई धर्मेश्वर उनका सदा भजन गाना ॥

दोहा-शील सोई है शीतला, कर हित चित से पूजा ॥ विश्वरूप हैं बिश्वेश्वर, और कोई नाहिं दूजा ॥ है कृपा सोई कैलासी ॥ यामें बोलत शिव अवनासी ॥ तुम बृद्धि विनायक जावो ॥ तन मनसे ध्यान लगावो ॥ सुमति सामग्री लावो ॥ चित चंदन चरच चढावो ॥

तोडा-इस मुखमें हैं बेद सोई है ब्रह्माकी वानी ॥ पांच इंद्री पांच कोश में बसी अवादानी ॥ पचीस तत्त्वका पंच काशी में फिरते नर ज्ञानी ॥ दशों द्वार की सैर करैं हैं पूरे सैलानी ॥

दोहा-हाथ पाँव त्रैकोन हैं, त्रयगुण हैं त्रयशूल ॥

सुमिरण की शक्ति बडी, जिन सृष्टि रची मखमूल ॥ संतोष सोई सन्यासी ॥ यामे बोले शिव अविनाशी ॥ इस तनमें बोध भया है ॥ कोई ज्ञानी पुरुष गया है ॥ जिसे ब्रह्म का ज्ञान भया है ॥ वो निश दिन नित्य नया है ॥

तोडा-तेंतिस कोटि दई देवते तन काशी में रहैं ॥ संत बडे गुणवंत अन्त जो मन काशी का लहैं ॥ सुनो इधर धर ध्यान छंद ये देवीसिंह जी कहैं ॥ राम नाम का सुमिरण कर कर चरण प्रभु के गहैं ॥

दोहा-- कहां लों मैं वर्णन करूं, तनमें हैं त्रयलोक ॥ बनारसी बैठा इसमें, पढे गीताके श्लोक ॥ लगी हरीके भजन की गासी ॥ यामें बोलत शिव अविनाशी ॥

सखियां श्रीकृष्णसे अपने मनकी कामना करती हैं

बहेर छोटी ।

मन झोंके खा रहा झुमकों की झोकोंमें॥दिल बिंधा कृष्ण तेरी बाली की नोकों में । तुम पारब्रह्म हो निराकार अवि-नाशी ॥ फिर देह धार क्यों हुये श्याम ब्रजवासी । ओ प्रेम प्रीति की डाल गलेमें फांसी ॥ सब मोहित की ब्रजवनिता कर लईं दासी । तुम तो कहते हम बालयती सन्यासी ॥ फिर हमरे संग क्यों बने हो भोग बिलासी । नहीं लगता मन गीता के श्लोकों में ॥ दिल बिंधा० ॥ तुम परमेश्वर हो हमसे भोग करो हो । तुम कालके काल औ मृत्यु से नहीं डरो हो॥ जिस वक्त वह मुरली अधरन बीच धरो हो । सब ब्रजवनिता का पलमें प्राण हरो हो ॥ तुम प्रेम प्रीति रस नीति से हमें

बरो हो । अपनी गौको तुम हमरे पांय परो हो ॥ हम तुम्हें छोडकर जांय न परलोकों में ॥ दिल बिंधा० ॥ वह विश्वकर्मा ने कंचन मन्दिर बनाये । तुम आप नचे औ हमको नाच नचाये । शिब बनके गोपिका रहँस देखने आये । तुमने उनको लिया चीन्ह तो बहुत लजाये । तुम अन्तर्यामी सब घट घटमें छाये ॥ तुमरी मायाका पार न कोई पाये । तुम बिन अपना मन पडे बडे शोकों में ॥दिल बिंधा०॥ हम सब ब्रजवनिता गौ लोकते आईं । सब हैं बेदों की श्रुती बेदने गाईं ॥ तुम आदि अंत से कृष्ण हमारे साईं । हैं धन्य हमारे भाग्य जो कंठ लगाईं ॥ कहे देवीसिंह और काशी गिरि गौसाईं । हम बार२ श्रीकृष्ण तेरे बलिजाईं ॥ कोई ऐसा हुआ अबतार न त्रैलोक्यों में ॥ दिल बिंधा कृष्ण तेरी बाली की नोकों में ॥

बहेर खडी-ख्याल श्रीजगन्नाथ जीकी स्तुति में जो पढेगा सो घर बैठे दर्शन पावेगा ।

महोदधी सागरके किनारे पुरी बेदोंने बखानी ॥ जगन्नाथ जग तारण कारण बोध रूप भये निर्वानी ॥ ओंकार और निरंकार वोही निर्भय और वोही निरंजन ॥ वोही है अन्तरजामी वोही है स्वामी वोही है दुखभंजन ॥ ब्रह्म वोही और ब्रह्मा विष्णु वोही वोही भव मोचन ॥ वोही हैं अपरम्पार पार नहिं पावे उनका त्रयलोचन ॥ और वोही है षट् दर्शन ॥

तोडा-वोही शेष वोही शक्ती हैं वोही कैलासी ॥ वोही इन्द्र हैं नारद मुनि वोही अविनाशी ॥ होरहे आप पुरुषोत्तम

पुरीके बासी ॥ वो महिमा उनकी खासी मगन रहते हैं जहाँ सब प्राणी ॥ जगन्नाथ जगतारण कारण बोध रूप भये निर्बानी ॥ १ ॥ रत्नसिंहासनपर धर आसन बिराजते दोनों भाई ॥ जगन्नाथ बलभद्र बीचमें खडी सुभद्रा जग माई ॥ शंख चक्र और गदा पद्मकी शोभा नहिं बरणीजाई ॥ मस्तक पर झलकत हीरा सूरज से ज्योति है सवाई ॥ सांची जहां प्रभुताई ॥

तोडा–शिर मोर मुकुट और गल फूलोंके हारे ॥ केसर चन्दनका तिलक शीश पर धारे ॥ नाना प्रकारके होते हैं शृंगारे ॥ मैं कहां तलक कहूं बिस्तारे ॥ शेष थक हारे गत नहीं जानी॥जगन्नाथ जगतारण कारणबोधरूप भयेनिर्बानी॥२॥श्याम वर्ण है जगन्नाथकी छबि सुन्दर लगती प्यारी ॥ श्वेत बर्ण बलभद्र सुभद्राके चरणोंकी बलिहारी ॥ बाहर है चन्दनकी लकडी जहाँ खडे सब हितकारी ॥ हाथ जोड दंडवत करें श्रीजगन्नाथको नर नारी ॥ सब खडे हैं वहाँ पुजारी ॥

तोडा–वो वक्त२पर पूजा प्रभुकी करते ॥ कोइ करवावे स्नान कोई जल भरते ॥ कोइ चन्दन घिसके हार फूल का भरते ॥ कोइ लेले अपने करते करते पूजा सब मन मानी ॥ जगन्नाथ जगतारण कारण बोधरूप भये निर्बानी ॥ ३ ॥ उस मंदिरके ऊपर बैठे जगन्नाथ और बलभद्दर ॥ बीच सुभद्रा आन बिराजीं दोनों भाई इधर उधर ॥ मुख दक्षिणकी ओर किये और पीठ किये बैठे उत्तर ॥ लंकामें से राज बिभीषण रोज आरती लेताकर ॥ दै दरशन उसे बाँपर ॥

तोडा---हैं भक्तके वश भगवान् वेद यों गावे ॥ लंकामें दरशन रोज बिभीषण पावे ॥ और उसको वहांसे नजर वो: मन्दिर आवे ॥ स्वामीसे ध्यान लगावे राजा लंकाका है ध्यानी ॥ जगन्नाथ जगतारण कारण बोधरूप भये निर्वानी ॥ ४ ॥ महाप्रभुके बायें मदनमोहन घोड़े पर असवारे ॥ मथुरा वृन्दावनको छोड़ पुरुषोत्तम पुरीको सिधारे ॥ ग्वालिनका दधि खाया ग्वालिन खड़ी हाथको पसारे ॥ त्रिलोकीके नाथ अंगूठी देते हाथसे उतारे ॥ सुन वहांका चमत्कारे ॥

तोडा--जहां अनेक ड्योढी अनेक हैंगे द्वारे ॥ है गरुड खंभपर गरुड रूपको धारे ॥ क्या कहूँ मैं ह्वांके जैसे हैं विस्तारे ॥ वो: हैं स्वामीके प्यारे उनकी महिमा मुश्किल पानी ॥ जगन्नाथ० ॥ महाप्रभुके दहिनी अक्षैवट मारकण्डेय औ बटकृष्णा ॥ जिनके दर्शन करनेसे छुट जाय जन्म भरका पिसना ॥ और घना चंदन गर वहां पर पंडों को चन्दन पिसना ॥ बड़े भाग्य हैं उनके जिनकी जीतेजी मिट गई तृष्णा ॥ उनको व्यापे विष ना ॥

तोडा--एक और वो: मन्दिरमें हैं बिम्बला देवा ॥ जिनके दर्शन करनेसे पार हो खेवा ॥ चढे पान सुपारी हार फूल और मेवा ॥ तू करले उनकी सेवा ॥ वोहीं हैं कुब्जाजी महारानी ॥ जगन्नाथ० ॥ महाप्रभु के पीछे है नरासिंह रूप विकराल बड़ा ॥ अपने भक्त के कारण मारा हरणाकुश था दैत्य कड़ा ॥ निश्चय थी महलाद भक्तको सेवामें वो रहा अड़ा ॥ सब संकट हरलिये प्रभूने जो था उसपे दुःख पड़ा ॥ रहा सदा सामने खड़ा ॥

तोडा--हर रोज वो दर्शन पाता स्वामीजी का ॥ उनके

चरणोंकी रजका देता टीका ॥ है मीठा रामका नाम और सब फीका ॥ सुन यही काम है नीका ॥ पिताकी आज्ञा कुछ नहिं मानी ॥ जगन्नाथ० ॥ और सुनो बयान अजब स्थान स्वर्ग से है आला ॥ चारों तरफ हैं सभी देवता ऐन बीचमें शीवाला ॥ सबके ऊपर नीलचक्र है ध्वजा फडकती गुल्लाला ॥ और देवते देवल पर हैं हर एक तरह ये सब बाला ॥ वो पहिने गले में माला ॥

तोडा-श्री जगन्नाथका जप करें वो मनमें ॥ हरवक्त खडे रहें स्वामीके सुमरनमें ॥ दिन रात ध्यान रहै प्रभुजीके चरण-नमें ॥ सब रहैं उनकी शरणनमें ॥ वर्णन करते सुनते ज्ञानी । जगन्नाथ० ॥ और सुनो अहवाल वो मंदिर कञ्चनका हैं रत्न जडे ॥ कलियुगमें पत्थरका हमको तुमको सबको नजर पडे ॥ चारों तरफ देवल पर देवते हाथ उठाये रहैं खडे ॥ और राक्षस असुर वो मन्दिर पर शिर उनके कटे पडे॥ हैं उनके भाग भी बडे॥

शेर-जिन्हें स्वामीने अपने हाथों संहारा ॥ और पकड पकड कर गदा चक्रसे मारा ॥ उन्हें मारा नहीं करादिया उन का निस्तारा ॥ मिला उन्हें स्वर्गका द्वारा ॥ होगये स्वामीके अगवानी ॥ जगन्नाथ० ॥ और बना वैकुण्ठ यहां सर सभी यात्री आते हैं ॥ जो जिसकी है यथाशक्ति वो अटका वहाँ चढ़ाते हैं ॥ चार वर्ण एकी में भोजन करें और नहीं घिनाते हैं ॥ महाप्रसाद श्री जगन्नाथका पावें सब तर जाते हैं ॥ सब एकीमें खाते हैं ॥

शेर-जहाँ ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र नहिं कोई ॥ और चार वर्णकी एकमें होय रसोई ॥ वहां द्वैतभाव नहिं एक जात सब कोई ॥ और एकादशी है सोई अपने मनमें अति हर्षानी ॥ जगन्नाथ० ॥ चारों फाटक पर है चौकी चार वीरकी सुन भाई ॥ पूर्व दरवाजे पर पतितपावनकी फिरती दुहाई ॥ बाहर दोनों सिंह गर्जते संतोंपर सहाई ॥ अरुण खम्भके दर्शन करते जिनकी सफल है कमाई ॥ तू पहुँच वहां पर जाई ॥

तोड-हैं पश्चिम दरवाजे पर श्रीहनुमाने ॥ वीरों में वीर हैं महावीर बलवाने ॥ गये फांद वो सागर एक क्षणक दर्म्याने त्रिलोकी उनको जाने अञ्जनीनन्दन हैं बलवानी ॥ जगन्नाथ० ॥ दक्षिण दरवाजेपर चौकी गणेशजी देते दाता ॥ जिनके दर्शन करनेको सारा आलम हैगा जाता ॥ महादेवके पुत्र और श्रीगौराजी जिनकी माता ॥ चतुर्भुजी मूरत सुन्दर तनु दर्श किये नर तर जाता ॥ वो परमधामको पाता ॥

तोडा-एक हाथमें डमरू एक हाथ त्रिशूल ॥ और एक हाथमें लिये कमलका फूल ॥ एक हाथमें लाडू लम्बी सुंड रही झूल ॥ वो जड़ें दुश्मनको हूल ॥ उत्तर फाटक पर उत्राणी जगन्नाथ० ॥ भोग शास्त्रकी महिमा उस मंदिरके भीतर है सारी ॥ और कोकको लीला उसमें लिखी है सब न्यारी ॥ कोई पुरुष है नगन और कोई निर्लज्जित बैठी नारी ॥ महा कामसें आतुर ऐसी बहुत सूरतें हैं प्यारी ॥ हैं वोः तौ सब ब्रह्मचारी ॥

तोडा-जो ब्रह्म विचारके भोग करें वोः योगी ॥ उसको

मतसमझो भोग वो बडे वियोगी ॥ रहे सदा सर्वदा उनकी देह निरोगी ॥ मत उन्हें कहो संयोगी ॥ आतमा जिसने है पहिचानी ॥ जगन्नाथ ० ॥ सुबह शाम स्वामीके आगे आवें दासी नृत्य करन ॥ सुन्दर सुन्दर कहैं विष्णुपद अच्छे २ गावें भजन ॥ बडे भाग्य हैं उनके जिनकी जगन्नाथसे लगन ॥ अष्टप्रहर हरवक्त हमेशा अपने मनमें रहें मगन ॥ और येही है उनका परन ॥

तोडा-हररोज आय स्वामीके आगे गाना ॥ अपने स्वामीको खूबीतरह रिझाना ॥ हँस २ के मुसक्याना और भाव बताना ॥ और सभी वोः राग सुनाना । श्रीपति सारंग और कल्यानी ॥ जगन्नाथ ० ॥ पंचकोशमें बना भैरवीचक्र वहांका सुनो मथन ॥ बडे २ जहां सिद्ध विराजैं करैं तपस्या रहैं मगन ॥ नौदुर्गोंकी पूजन करते दशों द्वारसे लगी लगन ॥ प्राणायाम करैं वोः योगी योग युक्त है बडी कठिन ॥ कोई जाने विरला जान ॥

तोडा-आतममें परमातमके दरशन पावे ॥ जो जगन्नाथ से मनमें ध्यान लगावे ॥ वोः आवागमनसे छूट ब्रह्म होजावे ॥ और सर्वगुण के गुण गावे ॥ निर्गुण होते हैं वो प्राणी ॥ जगन्नाथ० ॥ कर्मा बाईकी खिचडी और दूध मलाईकी पकवान ॥ भोग लगें नाना प्रकारके बडे बडे होते सामान ॥ खैरचूरके लाड्डू टुकड़ा मळूक का पावें भगवान ॥ उसका मूरीका वरवन और कहां तलक मैं करूँ बखान ॥ दिनरात उतरते धान ॥

तोड़ा--अटके पर अटका चढ़ पकावें पण्डे । सबसे पहिले ऊपर के पकते हण्डे ॥ है महिमा जिनकी सातद्वीप नौ खण्डे। सब उन्हींका है ब्रह्मण्डे । अजको वेदोंकी धुन गानी ॥ जगन्नाथ जग० ॥ १६ ॥ शुक्लपक्ष तिथि दूज महीना आषाढ का जब आता है । रथ पर हो असवार प्रभु सुसराल कनकपुर जाता है ॥ लाखों आलम खींचैं रथ नहिं चले वोः जब अड जाता है । तब तो पंडा हंस २ कर और गाली उन्हें सुनाता है । और मनमें मुसुक्याता है ॥ १७ ॥

तोड़ा--सब पण्डे मिलके बात कहें ये प्रभुको । हैं नन्द और वसुदेव पिता तुम्हरे दो ॥ तुम अहीरके घर पले बात ये सुनलो । ये कर्म किये जो तुमने वेदके बाहर सो हम जानी॥ जगन्नाथ जग० ॥ १८ ॥ ग्वालिन के संग किया भोग और भिलनी की झूंठन खाई । मित्र तुम्हारे अति पुनीत रहे दास सदन से कसाई । धन्ना छीपी बडा भक्त और सैनभक्त तुम्हारा नाई ॥ घर घर चोरी करो प्रभुजी जरा शर्म तुम्हें नाहिं आई । अब रथको देओ चलाई ॥

तोड़ा--सुसराल चलन में काहे देर करो हो । मालूम हुआ घरवाली से भी डरो हो ॥ चाहे कोई जात हो सबको तुम्हीं बरो हो ॥ गोपियों के चीर हरो हो ऐसी मनमें तुम क्यों ठानी ॥ जगन्नाथ जग० ॥ १९ ॥ हुई यात्रा पूरी फिर अपने पण्डे से लई सुफल ॥ चरण धोये आ पुरीके बाहर लेके श्वेत गंगाका जल ॥ और स्वामी के दर्शन पाये हुआ मुक्ति होने का फल । ध्यान धरा प्रभुजी का मनमें क्षण में कटी सारी कलमल ॥ हुई पहिली सुनो मंजिल ॥

तोडा--चलते २ साखी गुपालपर आये । साखी दी उनके में शीश नवाये॥और घरमें आके ब्राह्मण खूब जिमाये। मांगे सो फल पाये ॥ छन्द कहे काशीगिरि ब्रह्मज्ञानी ॥ जगन्नाथ जगतारण० ॥ २० ॥

होली मस्ती में शराब अंतहूरा की शेखजी औ हम खेलैं तौहीद-बहेर लंगडी ।

आज शेखजी खेलो होली मस्जिद में ले चलो शराब । जिगर को अपने जलावो भूनके उसका करो कबाब ॥ कोई शीशामें सुर्ख गुलाबी किसी में केसर का रंग हो । खुशी से खेलो तुम होली कभी न इस दिलसे तंग हो ॥ जो उसकी मस्ती में खेले होली खुदा भी फिर उसके संग हो । ऐसा दंगा मचे मुहतासिब की भी अक्ल दंग हो ।

शेर--लगादो आग जहां के सभी मयखाने में । औ लावो भरके सुराही पियो पैमाने में । तुम उसकी मस्ती में खेलो हमारे संग होली ॥ धूम ऐसी मचे देखें सबी जमाने में । कोई आपको देव गालियां उसको भी मत कहो खराब । जिगर को अपने जलावो भूनके उसका करो कबाब । और शौक गाने को हो तुमको तो मैं ले आऊं बीनो रबाब । डफ ढोलक बजे और शराब में हो मिला गुलाब ॥ उसकी खुशबू दिमाग में पहुँच तो वोः हो चश्मों में आब ॥ जिसकी लाली देख कर प्याली गिरपडे शहाब ॥

शेर--ये रंग वो है कि चढ जाय तो उतरे न जरा । यह प्याला वोः है कि खाली न हो कुदरत का भरा ॥ ये वो

मस्जिद है जिस्मकी कि इसमें है वोः खुदा । देखा जिस जिसने उसे इस्में वो हरगिज न मरा ॥ इसीमें खेलो उस्से होली शेख जी मैं कहता हूं सिताब । जिगर को अपने जलावो भूनके उसका करो कबाब ॥ साकी तुमको भरके जामदे रंगो उसी से अपना दिल । वही खुदा है तुम उस्से लपट झपट खेलो हिल मिल ॥ ऐसे प्याले पिओ कि जिससे बे होशी होजा कामिल । तो फिर मैं भी शेखजी आपमें होजाऊँ शामिल ।

शैर-यह दुनिया कुछ नहीं झूठा अजब तमाशा है । कोई रत्ती कोई तोले औ कोई माशा है ॥ जिस तरह होलीमें उठते हैं यारो यह सांग । उसी तरहसे उठेगा ये सबका लाशा है । जो कुछ खाना पीना हो सो खालो और लुटादो सब अस्वाब ॥ जिगर को० ॥ ऐसी होली किसी ने खेली नहीं जो खेलें हम औ तुम । मयवहेदतके किसी को कहां गयर से रहें ये खुम॥उसकी खुमारी में किसी से कुछ न कहो तुम । होजाव गुम अगर कहो तो फक्त इस जबां से अपनी कहदो तुम ॥

शैर—चलें वो गोरसे मुर्दे निकलके जो हैं मरे । तो खेलें फिरसे वोः होली रहें हरे वोः भरे ॥ सदा यह कुमकी है [illegible] के ऐसी और नहीं ॥ कि जिस्से मुर्दा भी जीता है फिर कभी न मरे । देवीसिंह कहें बनारसी है शेखजी ये दुनियां सब ख्वाब ॥ जिगर को अपने जलावो भूनके उसका करो कबाब ।

❋ इति ❋

❋ भूमिका ❋

कोई इसको लावनी कहते हैं और कोई मरहटी वा ख्याल कहते हैं असल में इसका बनाना और गाना दक्षिण से उत्पन्न है और इसके दो कर्त्ता हुये एक का नाम तुकनगिर और दूसरे का नाम शाह अली था उन्होंने दो मत खंड किये तुर्रा और कलंगी तुकनगिर तुर्रे को बडा कहते थे और शाह अली कलंगी को बडा रखते थे आपस में विवाद किया करते थे और अपना अपना पन्थ उन्होंने चलाया यहां तक कि आजतांई उनके मतवाले बहुत से लोग इस देश में भी बनाते गाते हैं उनमें पढे लिखे भी हैं परन्तु बडा अफसोस है कि गाली ही गुफता बकते हैं इस कद्र से कि आपस में लड भी पडते हैं इसी सबब से इसको कोई भला आदमी पसन्द नहीं करता है और मैं भी इसी विषय में बाल अवस्था से मशगूल था जब ईश्वर ने मेरे ऊपर अपनी कृपा करी तो इस पाप से मुझको छुडाया और फकीर बनाया अपना जलवा मुझको दिखलाया उसको देखते ही वह मस्ती का आलम हुआ कि आली आली मजमून नजर आने लगे तो मैंने अपने दिलमें यह बिचारा कि तू इसी लावनी से भगवत् आराधना कर तो उर्दू बोली में मैंने इश्कमारफत मतलब तौहीद और हिन्दी में उपासना ब्रह्मज्ञान को कहा इस वास्ते कि जो कोई इसके

असल मतालिब को पायेगा वह जीते ही जी उसमें मिल जायेगा और वही ईश्वर मेरे दिल में बैठ के ये सब बातें बनाता है मैं कुछ पढ़ा लिखा नहीं परन्तु जो कोई इसके मज-मून को सुनते हैं वह जाय तअज्जुब समझते हैं और पसन्द करते हैं इसी सबब से मैंने थोडी सी लावनी छपवाई हैं कि जिसमें सब अमीर व गरीब पढ़ें और इसको समझें और जो कोई इसको अपनी तबीअत लगा के पढेंगे तो उनका भला होगा।

❀ दो पदी ❀

जो कहता हम करते वो दुःख भरता है।
जो करता जगके कार वही करता है॥

श्रीमत्काशीगिरि बनारसी परमहंस आशक्रेहक्कानी॥